@Qpatrika @qaumipatrika hindi instagram.com/qaumipatrika

कौमी पत्रिका

राष्ट्रीय दैनिक अखबार

दिल्ली-हरियाणा-पंजाब-चण्डीगढ़-उत्तर प्रदेश से प्रसारित

मंगलवार, 30 सितम्बर 2025

VISIT: www.qaumipatrika.in
Email: qpatrika@gmail.com

R.N.I. No. UP-HIN/2007/21472 सम्पादक - गुरचरन सिंह बब्बर वर्ष 18 अंक 321 qaumipatrikahindi 011-41509689, 23315814, 9312262300 गाजियाबाद संवत् 2077-78, पेज (12) मूल्य 3.00 रुपये (हवाई शुल्क 50 पैसे अतिरिक्त)

भारत अब दुनिया के उन पांच देशों में शामिल जिनके पास 4जी की स्वदेशी तकनीक : प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री ने झारसुगुड़ा से बीएसएनएल के स्वदेशी 4जी नेटवर्क का उद्घाटन किया

एजेंसी

झारसुगुड़ा (ओडिशा)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को ओडिशा के झारसुगुड़ा में 60 हजार करोड़ रुपये से अधिक की विकास परियोजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन किया। इस दौरान उन्होंने देश के लिए एक ऐतिहासिक उपलब्धि का उल्लेख करते हुए कहा कि भारत अब दुनिया के उन पांच देशों में शामिल हो गया है, जिनके पास 4जी दूरसंचार सेवाएं शुरू करने की पूरी तरह से स्वदेशी तकनीक मौजूद है। प्रधानमंत्री ने झारसुगुड़ा से बीएसएनएल के स्वदेशी 4जी नेटवर्क का उद्घाटन किया। उन्होंने बताया कि लगभग 37 हजार करोड़ रुपये की लागत से निर्मित 97,500 से अधिक मोबाइल टावरों को आज राष्ट्र को समर्पित किया जा रहा है। यह बीएसएनएल का नया अवतार है और दूरसंचार क्षेत्र में आत्मनिर्भर भारत का बड़ा कदम है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि यह एक गर्व का क्षण है कि जब दुनिया भर में 2जी, 3जी और 4जी तकनीक का विकास हो रहा था, तब देश पीछे रह गया था। उस समय हमने दूरसंचार क्षेत्र में भ्रष्टाचार और घोटालों के किस्से देखे थे लेकिन अब भारत ने संकल्प लिया और स्वदेशी तकनीक विकसित कर ली। आज यह सफलता इस बात का प्रतीक है कि भारत आत्मनिर्भरता की ओर तेजी से बढ़ रहा है और जल्द ही वैश्विक टेक्नोलॉजी हब के रूप में अपनी पहचान मजबूत करेगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत को सेमीकंडक्टर से लेकर जहाज निर्माण तक हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाना है। उन्होंने बताया कि देश में जहाज निर्माण को बढ़ावा देने के लिए 70 हजार करोड़ रुपये का पैकेज स्वीकृत किया गया है। जहाज निर्माण से देश को व्यापार, तकनीकी और सुरक्षा—सभी क्षेत्रों में मजबूती मिलेगी और संकट के समय आयात-निर्यात बाधित नहीं होगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि ओडिशा

अब डबल इंजन सरकार की गति से प्रगति कर रहा है। डेढ़ साल पहले विधानसभा चुनावों के दौरान जनता ने विकसित ओडिशा का संकल्प लिया था, और अब राज्य तेज़ी से उस दिशा में बढ़ रहा है। उन्होंने झारसुगुड़ा से विभिन्न परियोजनाओं की शुरुआत करते हुए कहा कि यह दशक ओडिशा के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। प्रकृति ने इस राज्य को अनेक उपहार दिए हैं। यहां के लोगों की मेहनत और प्रतिभा राज्य को समृद्धि की ओर ले जाएगी। कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री ने अंत्योदय गृह योजना के अंतर्गत 50,000 लाभार्थियों को स्वीकृति पत्र वितरित किए। योजना का उद्देश्य विधवाओं, दिव्यांग व्यक्तियों और आपदाओं से प्रभावित परिवारों को पक्के मकान और वित्तीय सहायता प्रदान करना है। उन्होंने कहा,'जब एक गरीब परिवार को पक्का घर मिलता है तो सिर्फ वर्तमान ही नहीं बल्कि आने वाली पीढ़ियों का जीवन भी आसान हो जाता है। अब तक देशभर में 4 करोड़ से अधिक परिवारों को पक्के घर मिल चुके हैं।÷ प्रधानमंत्री ने बताया कि भाजपा सरकार गरीबों, दलितों, पिछड़ों और आदिवासियों को मूलभूत सुविधाएं देने पर ध्यान केंद्रित कर रही है। उन्होंने हाल ही में लागू किए गए जीएसटी सुधार का उल्लेख करते हुए कहा कि इससे महिलाओं को घरेलू बजट चलाने में बड़ी राहत मिली है। मोदी ने उदाहरण देते हुए कहा कि किसान को पहले ट्रैक्टर खरीदने पर 70 हजार रुपये टैक्स देना पड़ता था, लेकिन अब जीएसटी सुधार के बाद 40 हजार रुपये की सीधी बचत होगी। इसी प्रकार अन्य कृषि उपकरणों पर भी किसानों को राहत मिली है। उन्होंने कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा कि 2014 से पहले आमदनी पर टैक्स का बोझ गरीब और मध्यमवर्गीय परिवारों पर भारी पड़ता था। कांग्रेस के समय दो लाख रुपये की वार्षिक आय पर टैक्स देना पड़ता था।

मौलाना भूल गया था कि यूपी में सरकार किसकी है : योगी आदित्यनाथ

ऐसा सबक सिखाएंगे कि पीढ़ियां दंगा करना भूल जाएंगी : मुख्यमंत्री

एजेंसी

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बरेली की घटना पर कहा- 'बरेली में एक मौलाना भूल गया था कि शासन किसका है। वह

धमकी देकर जाम लगाने की बात करता था, लेकिन हमने कहा कि न जाम होगा, न कर्फ्यू लगेगा। हम ऐसा सबक सिखाएंगे कि तुम्हारी आने वाली पीढ़ियां भी दंगा करना भूल जाएंगी।' योगी आदित्यनाथ ने जोर देकर कहा कि 2017 के बाद उनकी सरकार ने दंगाइयों को चुन-चुनकर सजा दी और ऐसी भाषा में जवाब दिया, जो वे समझते थे। इस सख्ती ने उत्तर प्रदेश में शांति और सुरक्षा का नया युग स्थापित किया, जिससे यूपी की ग्रोथ स्टोरी की शुरुआत हुई।

चाचा-भतीजा और माफिया राज पर करारा प्रहार

योगी ने पूर्ववर्ती सरकारों पर परिवारवाद और भ्रष्टाचार का आरोप लगाते हुए कहा कि 'चाचा-भतीजा' वसूली के धंधे में लिप्त थे और हर जिले में एक माफिया को समानांतर सत्ता चलाने की छूट दी गई थी। उन्होंने कटाक्ष किया कि सत्ता के शीर्ष पर बैठे लोग माफियाओं के सामने नतमस्तक थे। सत्ता के मुखिया माफिया के कुत्ते से हाथ मिलाकर गौरवान्वित महसूस करते थे। योगी ने कहा कि ऐसी भ्रष्ट व्यवस्था में न बेटियां सुरक्षित थीं, न व्यापारी, और न ही किसान। उन्होंने जोर देकर कहा कि जब सत्ता बेइमान और भ्रष्ट लोगों के हाथ में आती है, तो वह समाज को जाति और परिवार के नाम पर गुमराह करती है। ऐसे लोगों के लिए हमने बुलडोजर बनाया है।' उनकी सरकार ने माफिया राज को जड़ से उखाड़कर प्रदेश को विकास की राह पर ला खड़ा किया।

'आई लव मोहम्मद' पोस्टर विवाद, दिल्ली हाईकोर्ट में गिरफ्तारियों के खिलाफ याचिका दाखिल

नई दिल्ली । 'आई लव मोहम्मद' पोस्टर प्रकरण में दर्ज एफआईआर और की गई गिरफ्तारियों का मामला दिल्ली हाईकोर्ट पहुंच गया। मुस्लिम संगठनों ने हाईकोर्ट में एफआईआर और गिरफ्तारियों के खिलाफ याचिका दाखिल की है। याचिका में मांग की गई है कि जिन लोगों के खिलाफ मुकदमे दर्ज किए गए हैं, उन्हें वापस लिया जाए और गिरफ्तार किए गए लोगों को तत्काल रिहा किया जाए। यह भी दलील दी गई है कि बड़े पैमाने पर मुस्लिम समुदाय के लोगों के खिलाफ जो शांतिपूर्वक अपना त्योहार मना रहे थे, उन पर दंगा करने, आपराधिक धमकी देने और शांति भंग करने का झूठा आरोप लगाकर मुकदमे दर्ज कर दिए गए। हाईकोर्ट में दायर याचिका के अनुसार, यह जनहित याचिका भारतीय संविधान के अनुच्छेद 226 के तहत दायर की गई है। इसमें याचिकाकर्ताओं के संवैधानिक अधिकारों की रक्षा के लिए तत्काल न्यायिक हस्तक्षेप की मांग की गई है। ये सभी अल्पसंख्यक मुस्लिम समुदाय से हैं और इन्हें 20 सिबंतर की एफआई में झूठे तरीके से फंसाया गया है। यह एफआईआर पुलिस स्टेशन काइसरगंज, जिला बहराइच में भारतीय न्याय संहिता, 2023 (बीएनएस) की धारा 187 (जानबूझकर चोट पहुंचाने की सजा), 351 (आपराधिक धमकी), 187(2)/188 (दंगा/गैरकानूनी जमावड़ा) और 356 (शांति भंग करने के इरादे से जानबूझकर अपमान) के तहत दर्ज की गई है।

राहुल गांधी चार दिनों की विदेश यात्रा पर, दक्षिण अमेरिकी देशों का करेंगे दौरा

नई दिल्ली । कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी चार दिनों की विदेश यात्रा पर शनिवार को रवाना हो गए। कांग्रेस प्रवक्ता पवन खेड़ा

ने एक्स पर जानकारी दी कि राहुल गांधी दक्षिण अमेरिका के चार देशों की यात्रा करेंगे। इस दौरान वे राजनीतिक नेताओं, विश्वविद्यालयों के छात्रों और उद्योग-व्यापार जगत के प्रतिनिधियों से मुलाकात करेंगे। कांग्रेस के मुताबिक राहुल गांधी ब्राजील और कोलंबिया का दौरा करेंगे, जहां वे विश्वविद्यालयों में छात्रों से संवाद करेंगे। इसके अलावा वे प्रमुख व्यवसायियों से भी चर्चा करेंगे।

न्यायमूर्ति सुजॉय पॉल बने कलकत्ता हाईकोर्ट के कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश

● यह नियुक्ति भारतीय संविधान के अनुच्छेद 223 के तहत की गई है

एजेंसी

कोलकाता। केंद्र सरकार ने न्यायमूर्ति सुजॉय पॉल को कलकत्ता हाईकोर्ट का कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किए जाने की अधिसूचना जारी की है। यह नियुक्ति भारतीय संविधान के अनुच्छेद 223 के तहत की गई है। न्याय मंत्रालय द्वारा शुक्रवार शाम जारी अधिसूचना के अनुसार, राष्ट्रपति ने कलकत्ता हाईकोर्ट के वर्तमान न्यायाधीश न्यायमूर्ति पॉल को नियमित नियुक्ति होने तक मुख्य न्यायाधीश के दायित्व

संभालने के लिए अधिकृत किया है। उल्लेखनीय है कि इस महीने की शुरुआत में न्यायमूर्ति सौमेन सेन को तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश टी. एस. शिवगणनम के सेवानिवृत्त होने के बाद कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया गया था।

न्यायमूर्ति शिवगणनम ने दो से अधिक वर्षों का कार्यकाल पूरा किया था। इसके बाद सुप्रीम कोर्ट कोलेजियम ने न्यायमूर्ति सेन को मेघालय हाईकोर्ट का मुख्य न्यायाधीश बनाए जाने की अनुशंसा की थी, जिसे अब केंद्र सरकार ने मंजूरी प्रदान कर दी है।

छत्तीसगढ़ के सुकमा में सुरक्षाबलों ने नक्सलियों की हथियार फैक्टरी को किया ध्वस्त

एजेंसी

करायपुर। छत्तीसगढ़ के सुकमा जिले के मेट्टागुड़ा कैम्प क्षेत्र में सुरक्षाबलों ने नक्सलियों की हथियार फैक्टरी को ध्वस्त कर दिया है। इसफैक्टरी से भारी मात्रा में हथियार, बारूद और निर्माण उपकरण बरामद किया गया है। सुकमा जिले के पुलिस अधीक्षक किरण चौहान ने आज शनिवार को जानकारी दी कि 26 सितंबर को जिला बल सुकमा और 203 कोबरा वाहिनी की संयुक्त पार्टी नक्सल विरोधी अभियान के लिए ग्राम ईरापल्ली और कोईमेंटा के घने जंगल व पहाड़ियों की ओर रवाना हुई थी। ग्राम कोईमेंटा के आसपास जंगल-पहाड़ियों में जवानों ने गहन सर्चिंग शुरू की। जंगल में नक्सलियों की हथियार और विस्फोटक बनाने की फैक्टरी का पता चला। जवानों ने मौके पर नक्सलियों की फैक्टरी को ध्वस्त कर दिया। नक्सलियों की फैक्टरी से एक वर्टिकल मिलिंग मशीन,तीन बेंच वाइस ,दो बीजीएल लांचर (बड़ा),12 बीजीएल शेल (खाली), 94 बीजीएल हेड्स,एक हैंड ग्राइंडर मशीन ,छह लकड़ी के राइफल बट ,एक भरमार का ट्रिगर मैकेनिज्म ,एक भरमार ट्रिगर मैकेनिज्म (पिस्टल ग्रिप सहित) ,चार सोलर बैटरी ,एक बोरवेल ड्रिलिंग बिट (10 फीट) ,दो गैस कटर हेड्स व तीन डायरेक्शनल आईईडी पाइप्स बरामद किया गया है।

लेह में दोपहर 1 बजे से 3 बजे तक कर्फ्यू में दी गई ढील

लेह । अधिकारियों ने शनिवार को घोषणा की कि स्थिति में सुधार होने के संकेत मिलने के बाद लेह में शाम 1 बजे से 3 बजे तक कर्फ्यू में ढील दी जाएगी। 24 सितंबर को हिंसक भीड़ और सुरक्षा बलों के बीच हुई झड़प में चार प्रदर्शनकारियों की मौत हो गई और 70 अन्य घायल हो गए। लेह में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में डीजीपी एसडी सिंह जमवाल ने कहा कि एलएबी और केडीए के शीर्ष निकायों एवं केंद्र सरकार के बीच चल रही बातचीत में कई काम पहले ही हो चुके हैं। डीजीपी ने कहा, लद्दाख देश का एकमात्र ऐसा क्षेत्र है, जहां स्थानीय लोगों को 85 प्रतिशत आरक्षण मिलता है। काउंसिल में एक-तिहाई सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित हैं।

जंगल का केवल 20 प्रतिशत पर्यटकों के लिए खुला, इसके विस्तार से होगा आदिवासियों का विकास : गडकरी

नागपुर और आसपास के जंगलों का संरक्षण अत्यंत महत्वपूर्ण है।

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि वर्तमान में जंगल का केवल 20 प्रतिशत ही पर्यटकों के लिए खुला है और बाकी 80 प्रतिशत वन्य क्षेत्र सुरक्षित रखा गया है। वन्य जीवन को नुकसान पहुंचाए बिना यदि जंगलों के और ज्यादा हिस्से को पर्यटकों के लिए खोला जाए तो स्थानीय आदिवासियों के विकास और उन्नति को और बढ़ावा मिलेगा।

गडकरी ने शनिवार को नई दिल्ली में आयोजित वन्यजीव फोटो प्रदर्शनी के उद्घाटन समारोह में कहा कि नागपुर और आसपास के जंगलों का संरक्षण अत्यंत महत्वपूर्ण है। नागपुर से जबलपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर बाघों की सुरक्षा के लिए विशेष संरचनाएं बनाई गई हैं, जिनमें सड़क पर्यटन क्षेत्र में इलेक्ट्रिक वाहनों का उपयोग बढ़ाने और प्रदूषण व ध्वनि नियंत्रण के लिए सर्वोच्च न्यायालय की समिति द्वारा दिशा-निर्देश जारी

के नीचे मार्ग और ऊपर जंगल जैसी व्यवस्था शामिल है, ताकि वन्य जीवन और सड़क यातायात में संतुलन बना रहे। उन्होंने कहा कि राजस्थान और महाराष्ट्र के जंगलों में पर्यटन के अवसरों का विस्तार किया गया है और इसमें स्थानीय आदिवासी युवाओं को रोजगार भी मिला है। किए गए हैंमंत्री ने कहा कि महाराष्ट्र का लगभग 80 प्रतिशत वन्य क्षेत्र विदर्भ में स्थित है। उनके संसदीय क्षेत्र को 'टाइगर कैपिटल' के रूप में जाना जाता है। इस क्षेत्र में वन्यजीव संरक्षण तथा स्थानीय रोजगार सृजन दोनों पर बराबर ध्यान दिया जा रहा है।

नियंत्रण रेखा के पार लॉन्च पैड्स पर आतंकी कश्मीर में घुसपैठ करने की फिराक में : बीएसएफ आईजी

'सर्दियों की शुरुआत से पहले घाटी में आतंकवादियों की घुसपैठ की कोशिशें हमेशा बढ़ जाती हैं'

एजेंसी

श्रीनगर। सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) कश्मीर फ्रंटियर के महानिरीक्षक (आईजी) अशोक यादव ने शनिवार को कहा कि आतंकवादी नियंत्रण रेखा के पार लॉन्च पैड्स पर कश्मीर घाटी में घुसपैठ करने की फिराक में हैं, लेकिन सुरक्षा बल सतर्क हैं और ऐसी किसी भी कोशिश को नाकाम करने के लिए तैयार हैं।

आईजी अशोक यादव ने श्रीनगर में पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि सर्दियों की शुरुआत से पहले घाटी में आतंकवादियों की घुसपैठ की कोशिशें हमेशा बढ़ जाती हैं। बर्फबारी से पहले हमेशा घुसपैठ की कोशिशें होती हैं। अभी लगभग दो महीने बाकी हैं और नवंबर तक घुसपैठ की संभावना बनी रहती है, क्योंकि उन्हें पता है कि अगले छह महीनों तक

उनके पास कम मौके होंगे। इसलिए वे हमेशा घुसपैठ की कोशिश करते हैं, लेकिन सुरक्षा बलों की सतर्कता के कारण घुसपैठ करना बहुत मुश्किल है। उन्होंने कहा कि आतंकवादी नियंत्रण रेखा के पार लॉन्च पैड्स पर घाटी में घुसपैठ करने के मौके की तलाश में इंतजार कर रहे हैं।बांदीपोरा और कुपवाड़ा सेक्टरों में हमारे एओआर (ज़िम्मेदारी वाले क्षेत्र) के सामने नियंत्रण रेखा के पार लॉन्च पैड्स पर आतंकवादी मौजूद हैं। वे घुसपैठ के मौके की तलाश में हैं, लेकिन सुरक्षा बहुत कड़ी है। कभी-कभी वे खराब मौसम का इंतज़ार करते हैं,लेकिन हम किसी भी स्थिति के लिए तैयार और सतर्क हैं। बीएसएफ के आईजी ने कहा कि सेना और बीएसएफ सतर्क है और उच्च तकनीक वाले निगरानी उपकरणों की मदद से नियंत्रण रेखा पर अच्छी तरह से नियंत्रण बनाए हुए हैं। सुरक्षा बलों ने इस साल अब तक घुसपैठ की दो कोशिशों को नाकाम कर दिया है। जिस सतर्कता के साथ हम अपना कर्तव्य निभाते हैं, नई कार्यप्रणाली और नए निगरानी उपकरणों के कारण हमारे एओआर में घुसपैठ करना बहुत मुश्किल है।

बरेली विवाद: मौलाना तौकीर रजा गिरफ्तार, 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेजा गया

बरेली में हुए हंगामे के बाद उर प्रदेश सरकार एशन मोड में

एजेंसी

बरेली । बरेली में शुक्रवार को हुए हंगामे के बाद उत्तर प्रदेश सरकार एक्शन मोड में है। इसी कड़ी में शनिवार को स्थानीय मौलवी और इत्तेहाद-ए-मिल्लत काउंसिल के प्रमुख तौकीर रजा को गिरफ्तार कर लिया गया। फिलहाल, तौकीर रजा को 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेजा गया है। पुलिस ने इन प्रदर्शनकारियों को तितर-बितर करने के लिए बल का प्रयोग किया, जबकि कुछ लोगों को शुक्रवार को ही हिरासत में ले लिया गया। फिलहाल, पुलिस ने कार्रवाई करते हुए तौकीर रजा को गिरफ्तार किया है। इसी बीच, ऑल इंडिया मुस्लिम जमात के राष्ट्रीय अध्यक्ष मौलाना शहाबुद्दीन रजवी बरेलवी ने 'पैगंबर मोहम्मद' के पोस्टर और बैनरों को लेकर सवाल उठाए। बरेली के हंगामे के बाद उन्होंने कहा कि पोस्टर बैनर निकालना और सड़कों पर हुड़दंग मचाना, ये सिर्फ दिखावा है। इस्लाम कभी दिखावे को पसंद नहीं करता है। मौलाना शहाबुद्दीन ने बातचीत में कहा, 'पैगंबर मोहम्मद ने तमाम रास्ते बातचीत

और समझौते के जरिए निकाले। झूठ, फरेब, मक्कारी, जुआ, शराब और नशा इन तमाम चीजों से दूर रहिए। पांचों वक्त की नमाज पढ़िए। यही उनकी असली शिक्षा थी। उनकी शिक्षा पर अमल करना है सच्ची मोहब्बत है। मोहब्बत का इजहार दिल में रखिए। बैनर पोस्टरों से इजहार-ए मोहब्बत नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा, बैनर पोस्टर दीवारों पर लगाए जा रहे हैं। उसके बाद में वही पोस्टर बैनर टूटकर बेकार होने पर नालियों में चले जाते हैं। यह पैगंबर मोहम्मद की तौहीन हो रही है। बरेलवी ने बरेली की जनता से शांति बनाए रखने की अपील की। मौलाना शहाबुद्दीन ने कहा, ÷जो घटना हुई, वह अफसोसनाक है।

बिहार में भारी बहुमत से एनडीए सरकार बनेगी: दिलीप जायसवाल

एजेंसी

पटना । केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह अपने दो दिवसीय बिहार दौरे पर हैं। इस दौरान वे आगामी विधानसभा चुनाव की तैयारियों को लेकर भाजपा के शीर्ष नेतृत्व और जमीनी कार्यकर्ताओं से लगातार मुलाकात कर रहे हैं। बिहार भाजपा अध्यक्ष दिलीप जायसवाल ने बताया कि गृह मंत्री शाह हर दिन 10 जिलों के प्रमुख कार्यकर्ताओं से संवाद कर रहे हैं और उन्हें चुनावी दिशा-निर्देश दे रहे हैं। इस बैठक में भाजपा के बिहार चुनाव प्रभारी धर्मेंद्र प्रधान, पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष दिलीप जायसवाल और केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह सहित अन्य कई मंत्री, सांसद और विधायक तथा कई पार्टी पदाधिकारी उपस्थित थे। जायसवाल ने आगे कहा कि आज वे समस्तीपुर के सरायरांजन और अररिया के फारबिसगंज, जोगबनी के पास प्रमुख कार्यकर्ताओं से मिलेंगे। वे आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर कार्यकर्ताओं को दिशा-निर्देश दे रहे हैं। कार्यकर्ताओं का जोश आगामी विधानसभा चुनाव में स्पष्ट दिखेगा। हमारे कार्यकर्ता दो-तिहाई से अधिक बहुमत के साथ सरकार बनाने की तैयारी में जुटे हैं। बिहार में भारी बहुमत से एनडीए की सरकार बनेगी। वहीं, कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा के बिहार दौरे पर प्रतिक्रिया देते हुए जायसवाल ने कहा कि प्रियंका गांधी को पांच साल बाद बिहार याद आया है। पिछले पांच वर्षों में वे राज्य नहीं आईं और अब चुनाव नजदीक आने पर अचानक उन्हें बिहार की याद आ गई। दिल्ली और पंजाब में जब बिहारी को गाली दी जाती है, तब प्रियंका गांधी ताली बजाती हैं।

नेशनल हाइवे 48 पर थार एसयूवी का डिवाइडर से जोरदार टक्कर, 5 युवाओं की मौत, 1 घायल

मरने वालों में तीन युवतियां व दो युवक शामिल

एजेंसी

गुरुग्राम। हरियाणा के गुरुग्राम में शनिवार अलसुबह करीब साढ़े चार बजे दिल्ली-जयपुर एनएच-48 पर राजीव चौक के पास एक तेज रफ्तार थार एसयूवी डिवाइडर से टकरा गई। इस भयावह हादसे में छह यात्रियों में से पांच की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि एक गंभीर रूप से घायल है। थार के परखच्चे उड़ गए, शवों और घायल को गाड़ी से निकालने में काफी मशक्कत हुई। डीएलएफ थाना पुलिस ने शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया।पुलिस प्रवक्ता संदीप कुमार ने बताया कि यूपी-81-सीएस-2319 नंबर की थार में तीन लड़कियां और तीन लड़के सवार थे। सभी उत्तर प्रदेश से किसी काम से गुरुग्राम आए थे। हाइवे एग्जिट-9 से सर्विस लेन पर उतरते समय चालक ने नियंत्रण खो दिया, गाड़ी डिवाइडर से टकराकर पलट गई। पुलिस सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है।मृतकों में प्रतिष्ठा मिश्रा (रायबरेली, जज की बेटी, लॉयड लॉ कॉलेज, ग्रेटर नोएडा में एलएलबी प्रथम वर्ष), आदित्य प्रताप सिंह (आगरा, नोएडा में नौकरी), लावण्या (आगरा, शास्त्रीपुरम, एलएलबी छात्रा), सोनी (उत्तर प्रदेश) और गौतम (सोनीपत, हरियाणा) शामिल हैं। बुलंदशहर के कपिल शर्मा (सब-इंस्पेक्टर का बेटा)

घायल है और अस्पताल में उपचाराधीन। पुलिस ने बताया है कि परिजनों को सूचित कर दिया गया है और इस मामले में जांच कर रही है।

एअर इंडिया की उड़ान सेवाओं में कटौती मामले में केंद्र करे हस्तक्षेप : सतीशन

तिरुवनंतपुरम (एजेंसी)। केरल विधानसभा में विपक्ष के नेता वीडी सतीशन ने केंद्र सरकार से मांग की है कि वह एअर इंडिया एक्सप्रेस के अक्टूबर से राज्य के हवाई अड्डों से उड़ान सेवाओं में कटौती करने के फैसले में हस्तक्षेप करे। सतीशन ने केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री किंजरापु राममोहन नायडू को लिखे पत्र में कहा है कि इस कदम से केरल के लोगों खासकर खाड़ी देशों में रहने वाले प्रवासियों के बीच चिंता पैदा हो गई है। उन्होंने कहा कि ऐसा माना जा रहा है कि तिरुवनंतपुरम, कोच्चि, कोझिकोड और कन्नूर से प्रमुख खाड़ी देशों के लिए उड़ान सेवाएं या तो कम या फिर खत्म कर दी जाएंगी, जबकि मंगलुरु, जयपुर और लखनऊ से अतिरिक्त उड़ानें चलाई जा रही हैं। सतीशन ने कहा कि विमानन कंपनी ने आर्थिक कारणों का हवाला दिया है, लेकिन इस फैसले पर सवाल उठ रहे हैं, क्योंकि केरल से खाड़ी मार्ग एअर इंडिया एक्सप्रेस के लिए सबसे ज्यादा लाभदायक मार्गों में शामिल है। उन्होंने कहा कि इन सेवाओं में कटौती से खाड़ी देशों में काम करने वाले लाखों मलयाली लोगों को भारी कठिनाई होगी, जो किफायती और प्रत्यक्ष कनेक्टिविटी पर बहुत ज्यादा निर्भर हैं।

आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने 'संघ गीत' एल्बम किया लॉन्च

नागपुर (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख मोहन भागवत ने रविवार को एल्बम 'संघ गीत' लॉन्च किया है जो आरएसएस के गीतों का संग्रह है। उन्होंने इस एल्बम को मातृभूमि के प्रति समर्पण बताया। भागवत ने नागपुर में आयोजित समारोह में उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए यह बात कही। कार्यक्रम में केंद्रीय परिवहन मंत्री नितिन गडकरी और महाराष्ट्र के सीएम देवेंद्र फडणवीस भी मौजूद थे। 'संघ गीत' एल्बम में प्रसिद्ध गायक शंकर महादेवन द्वारा गाए गए 25 गीत शामिल हैं। महादेवन ने कार्यक्रम में इनमें से 10 गीत गाये। गीतों के पीछे की भावना की तारीफ करते हुए संघ प्रमुख भागवत ने कहा कि संघ गीत मातृभूमि के प्रति समर्पण और जीवन की तपस्या की उपज हैं। ये गीत स्वयंसेवकों के जीवंत अनुभवों से निकलते हैं। उन्होंने कहा कि आरएसएस के पास कई गीत हैं, जिनकी कुल संख्या अनुमानित रूप से 25,000 से 30,000 के बीच है। भागवत ने कहा कि इन गीतों का सार समर्पण की भावना में निहित है और इनके रचनाकारों के नाम ढूंढ़ना अक्सर मुश्किल है। उन्होंने कहा कि संघ गीत गाना कोई आसान काम नहीं है और महादेवन ने इन्हें एक सच्चे स्वयंसेवक की भावना से गाया है। वहीं केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने संघ गीत लॉन्च को एक ऐतिहासिक बताया। उन्होंने कहा कि ये गीत देशभक्ति के लिए प्रेरणा स्रोत बनेंगे। फडणवीस ने कहा कि प्रत्येक संघ गीत अत्यंत प्रेरणादायक है और जीवन जीने के मूल्यवान सबक सिखाता है।

जुबिन गर्ग को श्रद्धांजलि देने उनके घर पहुंचे गौतम अडाणी और बेटा जीत

डिसपुर (एजेंसी)। देश के प्रमुख उद्योगपति गौतम अडाणी और उनके बेटे जीत अडाणी ने असम के गुवाहाटी में दिवंगत गायक-संगीतकार जुबिन गर्ग के घर जाकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक अडाणी व उनके बेटे ने यहां काहिलीपाड़ा इलाके में गर्ग के घर पर करीब आधा घंटा बिताया और उनकी पत्नी गरिमा सैकिया गर्ग से मुलाकात की। अडाणी, ग्रुप के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ रविवार रात करीब नौ बजे यहां पहुंचे और पुष्पांजलि अर्पित की। गौतम अडाणी और उनके बेटे जीत अडाणी असम की महान हस्ती को अपनी संवेदनाएं व्यक्त करने आए थे। वे कुछ देर गरिमा के साथ बैठे और गायक के असामयिक निधन पर शोक व्यक्त किया। बता दें जुबिन गर्ग का 19 सितंबर को सिंगापुर में समुद्र में तैरते समय निधन हो गया था।

युवक ने नशे में सीएम योगी को कहे अपशब्द, पुलिस तलाश में जुटी

प्रयागराज (एजेंसी)। सीएम योगी आदित्यनाथ के खिलाफ सोशल मीडिया पर अपशब्द बोलने का मामला सामने आया है। प्रयागराज के एक युवक ने नशे में फेसबुक पर सीएम योगी को गाली देते हुए एक वीडियो पोस्ट किया, जो वायरल हो रहा है। पुलिस ने इस मामले को गंभीरता से लेते हुए आरोपी की तलाश शुरू कर दी है। पुलिस सूत्रों के मुताबिक आरोपी का नाम इमरान बताया जा रहा है, जो नारीबारी गांव का रहने वाला है और पेशे से ट्रक ड्राइवर है। वीडियो में वह नशे में सीएम योगी के खिलाफ अशोभनीय भाषा का इस्तेमाल करता नजर आ रहा है। वीडियो के वायरल होते ही हड़कंप मच गया। इलाके के लोग बताते हैं कि इमरान अक्सर नशे की हालत में रहता है। पुलिस ने मामले को गंभीरता से लेते हुए आरोपी की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी कर रही है। आरोपी के परिवार ने पुलिस को बताया है कि वह घर पर नहीं है। वहीं यह मामला सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बना हुआ है और प्रशासन इसे लेकर सतर्क है।

लेह हिंसा के बाद तनाव में पांचवें दिन भी कर्फ्यू जारी, 44 गिरफ्तार

लेह (एजेंसी)। लद्दाख में चल रहे शांतिपूर्ण प्रदर्शन के बीच 24 सितंबर को भड़की हिंसा के बाद हालात अब भी तनावपूर्ण बने हुए हैं। इसके चलते जिले में लगातार पांचवें दिन भी कर्फ्यू जारी है। प्रशासन ने बीएनएसएस की धारा 163 लागू कर दी है, जिसके तहत पांच या उससे अधिक लोगों के एकत्र होने पर प्रतिबंध है। इसके अलावा, बिना पूर्व अनुमति किसी भी तरह के जुलूस, रैली या मार्च निकालने पर रोक लगी है। तनाव के बीच पूरे लेह में सुरक्षाबलों की तैनाती बढ़ा दी गई है। लेह में हुई हिंसा के दौरान अब तक चार लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि करीब 90 लोग घायल बताए गए हैं। पुलिस ने उपद्रव और हिंसा फैलाने के आरोप में अब तक 44 लोगों को गिरफ्तार भी किया है। गिरफ्तार किए गए लोगों में प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक प्रमुख हैं, जिन्हें राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम (एनएसए) के तहत हिरासत में लेकर जोधपुर जेल भेजा गया है। यहां बताते चलें कि प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता वांगचुक लंबे समय से लद्दाख को संविधान की छठी अनुसूची में शामिल किए जाने की मांग उठा रहे थे।

चिदंबरम का बड़ा दावा: 26/11 मुंबई हमले के बाद पाकिस्तान पर कार्रवाई करने से रोक दिया था विदेश मंत्रालय ने

-पाटिल के इस्तीफे के बाद न चाहते हुए भी गृह मंत्रालय भेजा गया

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस नेता और पूर्व गृह मंत्री पी चिदंबरम ने दावा किया है कि 26 नवंबर 2008 के मुंबई हमले के बाद वे पाकिस्तान के खिलाफ तत्काल जवाबी कार्रवाई के पक्ष में थे, लेकिन तत्कालीन विदेश मंत्रालय ने ऐसा करने से रोक दिया था। चिदंबरम का कहना है, कि तब मंत्रालय के अधिकारियों ने उन्हें समझाया कि इस समय कूटनीति और बातचीत ही दोनों देशों के बीच तनाव को सुलझाने का बेहतर तरीका है।

इस आशय का दावा पी चिदंबरम ने हाल ही में दिए एक इंटरव्यू के दौरान किया, जिसमें उन्होंने बताया कि जब मुंबई हमले के बाद तत्कालीन गृह मंत्री शिवराज पाटिल मीडिया और जनता के निशाने पर आए, तो उन्होंने नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए इस्तीफा दे दिया। इसके बाद वित्त मंत्री चिदंबरम को गृह मंत्रालय भेजा गया। चिदंबरम ने बताया, कि वह इस तबादले के लिए तैयार नहीं थे, क्योंकि उन्होंने वित्त मंत्रालय में पांच बजट पेश किए थे और अगले साल चुनाव होने वाला था। उन्होंने कहा कि तत्कालीन प्रधानमंत्री ने उन्हें फोन कर सूचित किया कि गृह मंत्रालय में उन्हें स्थानांतरित करने का सामूहिक फैसला लिया गया है। चिदंबरम ने कहा, कि मंत्रालय के अधिकारी बार-बार कहते थे कि दोनों देशों के बीच तनाव को सैन्य कार्रवाई से नहीं, बल्कि रचनात्मक कूटनीतिक प्रयासों से ही सुलझाया जाना चाहिए। इस कारण तत्काल जवाबी कार्रवाई नहीं हो सकी। गौरतलब है कि 26/11 मुंबई हमले में पाकिस्तान से आए लश्कर-ए-तैयबा के 10 आतंकवादियों ने मुंबई के विभिन्न स्थानों पर हमला किया। इन हमलों में 166 लोगों की जान गई थी और सैकड़ों लोग घायल हो गए थे। इन हमलों के चौथे दिन, यानी 29 नवंबर 2008 को भारतीय सुरक्षा बल आतंकियों का पूरी तरह खात्मा करने में सफल रहे। इन 10 आतंकवादियों में अजमल कसाब एकमात्र ऐसा आतंकी था जिसे जिंदा पकड़ा गया और अदालत के आदेश से उसे फांसी दी गई।

बहरहाल 2014 में केंद्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली बीजेपी सरकार बनने के बाद से भारत की पाकिस्तान नीति पूरी तरह बदल गई। अब भारत हर आतंकवादी वारदात के बाद पाकिस्तान के खिलाफ अधिक सख्त और निर्णायक कार्रवाई करता है। ऑपरेशन सिंदूर जैसे अभियान इसी रणनीति का हिस्सा हैं, जिसमें आतंकियों और उनके संरक्षकों को उनके ठिकानों पर मारने की नीति अपनाई गई।

कर्नाटक हाईकोर्ट के आदेश को चुनौती देगा 'एक्स' : कंपनी बोली- यह अभिव्यक्ति की आजादी पर हमला

बेंगलुरु (एजेंसी)। एलन मस्क की कंपनी और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' (पूर्व में ट्विटर) ने कर्नाटक हाईकोर्ट के हालिया फैसले पर आपत्ति जताते हुए इसे सुप्रीम कोर्ट तक ले जाने का ऐलान किया है। कंपनी का कहना है कि अदालत का आदेश भारतीय नागरिकों की अभिव्यक्ति की आजादी के अधिकार पर सीधा हमला है। इस मामले को लेकर 'एक्स' ने अपने आधिकारिक पोस्ट में लिखा, कि इस आदेश के बाद पुलिस अधिकारियों को एक सीक्रेट ऑनलाइन पोर्टल के जरिए मनमाने ढंग से कंटेंट हटाने के निर्देश देने का अधिकार मिल गया है। यह व्यवस्था न तो आईटी एक्ट की धारा 69 के तहत है और न ही किसी अन्य कानून में इसका आधार मौजूद है। यह सुप्रीम कोर्ट के पुराने फैसलों के भी खिलाफ है। गौरतलब है कि 24 सितंबर को कर्नाटक हाईकोर्ट ने एक्स की केंद्र सरकार के खिलाफ दायर याचिका खारिज कर दी थी। अदालत ने अपने आदेश में कहा था कि विदेशी कंपनियां भारतीय संविधान के तहत अभिव्यक्ति की आजादी का अधिकार नहीं मांग सकतीं। दरअसल, मार्च 2025 में एक्स ने भारत सरकार के खिलाफ याचिका दायर की थी। कंपनी का आरोप था कि सरकारी अधिकारी आईटी एक्ट की धारा 79(3)(बी) का गलत इस्तेमाल कर एक्स पर जबरन कंटेंट ब्लॉक कर रहे हैं। कंपनी ने इसे नियमों और प्रक्रियाओं के खिलाफ बताया था। इसी के साथ ही कंपनी ने कहा, कि वह इस फैसले को उच्चतम अदालत में चुनौती देगी। पोस्ट में लिखा गया, हम भारत के नागरिकों की अभिव्यक्ति की आजादी की रक्षा के लिए हर कानूनी कदम उठाएंगे। यह सिर्फ एक कंपनी का मामला नहीं है, बल्कि हर भारतीय के अधिकार का सवाल है।

अमित शाह के दावे पर कांग्रेस का पलटवार, कहा- बिहार में महागठबंधन को मिलेगा जनादेश

-जयराम बोले- ....राजनीति में वीसी का मतलब वोट चोरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। गृह मंत्री अमित शाह के इस दावे पर कि बिहार विधानसभा चुनाव में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) को 243 में से 160 से अधिक सीटें मिलेंगी, कांग्रेस ने तीखा हमला बोला है। पार्टी ने आरोप लगाया कि शाह वोट चोरी और वोट रेवड़ी की राजनीति के सहारे ऐसी उम्मीद जता रहे हैं, लेकिन बिहार की जागरूक जनता उनकी इस साजिश को नाकाम कर देगी।

कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर पोस्ट कर कहा, कि शिक्षा जगत में वीसी का मतलब कुलपति होता है, स्टार्ट-अप की दुनिया में वीसी का मतलब वेंचर कैपिटल होता है और सेना में वीसी का अर्थ वीर चक्र होता है। लेकिन आज राजनीति में वीसी का नया मतलब है- वोट चोरी। उन्होंने आरोप लगाया कि बिहार में भाजपा और उसके सहयोगी वीसी (वोट चोरी) और वीआर (वोट रेवड़ी) की रणनीति से चुनाव जीतना चाहते हैं। जयराम रमेश ने कहा, कि गृह मंत्री ने आत्मविश्वास के साथ ऐलान किया है कि राजग को 160 से अधिक सीटें मिलेंगी। लेकिन बिहार की राजनीतिक रूप से सजग जनता इन षड्यंत्रों को परास्त करेगी। महागठबंधन जीतेगा और इसका पहला झटका दिल्ली की सत्ता में बैठे लोगों को लगेगा।

कांग्रेस का यह बयान ऐसे समय में आया है जबकि भाजपा लगातार बिहार में अपनी पकड़ मजबूत करने की कोशिश में लगी हुई है। अमित शाह ने हाल ही में चुनावी रैली के दौरान कहा था कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व और राजग की एकजुटता के बल पर राज्य में 160 से अधिक सीटें जीतना तय है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि बिहार का चुनावी माहौल अभी पूरी तरह खुला है। राजग और महागठबंधन दोनों ही अपने-अपने वोट बैंक को साधने की कोशिशों में जुटे हैं। गृह मंत्री अमित शाह के दावे और कांग्रेस के पलटवार से यह साफ है कि चुनावी जंग तेज़ होती जा रही है।

पहले हाथ मिलाया, चाय पी और तस्वीरें खिंचवाई सूर्या ने पर ट्रॉफी नहीं ली

-संजय राउत ने की बीजेपी और टीम इंडिया की आलोचना, बोले-क्या जनता मूर्ख है?

मुंबई (एजेंसी)। शिवसेना (यूबीटी) सांसद संजय राउत ने सोमवार को पाकिस्तान के खिलाफ एशिया कप फाइनल खेलने को लेकर बीजेपी और टीम इंडिया की आलोचना की है। एक्स पर पोस्ट किए गए अपने वीडियो का हवाला देते हुए राउत ने कहा कि भारतीय कप्तान सूर्यकुमार यादव ने टूर्नामेंट से पहले पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के प्रमुख मोहसिन नकवी से हाथ मिलाया था। उन्होंने कहा कि मुझे बीजेपी के नकली देशभक्तों और भक्तों के बारे में नहीं पता, लेकिन असली देशभक्तों ने कल मैच नहीं देखा। आपने पीसीबी प्रमुख मोहसिन नकवी से ट्रॉफी नहीं ली, लेकिन मैंने एक वीडियो शेयर किया जिसमें भारतीय कप्तान उनसे हाथ मिलाते, चाय पीते और तस्वीरें खिंचवाते दिख रहे हैं। क्या आपको लगता है कि जनता मूर्ख है?

इसके अलावा राउत ने भारत और पाकिस्तान के बीच हुए मैच को भारतीय सेना और पहलगाम आतंकी हमले में शहीद हुए लोगों का अपमान बताया। उन्होंने कहा कि हमारा सवाल है कि आप पाकिस्तान के साथ क्यों खेल रहे हैं? आपको पहलगाम में शहीद हुए सैनिकों और लोगों का अपमान नहीं करना चाहिए। आपने ट्रॉफी नहीं ली, उनके कप्तान से हाथ नहीं मिलाया, फिर मैच क्यों खेला? अगर खेला, तो ये ड्रामा बंद करो।

सोमवार को राउत ने एक्स पर वीडियो शेयर किया और मैच के बाद की कार्रवाई को राष्ट्रवादी ड्रामा बताया। उन्होंने लिखा कि सिर्फ़ 15 दिन पहले, सीरीज़ की शुरुआत में वे पाकिस्तान के मंत्री मोहसिन नक़वी से हाथ मिला रहे थे और तस्वीरें खिंचवा रहे थे और अब? कैमरों पर पूरी तरह से राष्ट्रवादी ड्रामा! अगर देशभक्ति सच में आपके खून में होती, तो आप पाकिस्तान के साथ मैदान पर कदम भी नहीं रखते। ऊपर से नीचे तक- शुद्ध नाटक। जनता के साथ खेला जा रहा है।

इस बीच महाराष्ट्र कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता अतुल लोंधे पाटिल ने केंद्रीय मंत्री अमित शाह पर निशाना साधते हुए सवाल किया कि अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद के अध्यक्ष और उनके बेटे जय शाह पाकिस्तानी टीम को बाहर क्यों नहीं करते। उन्होंने कहा कि यह अच्छी बात है, लेकिन हम पूछना चाहते हैं कि क्या ऑपरेशन सिंदूर खत्म हो गया है? अगर यह खेल रिश्तों को सामान्य बनाने के लिए खेला जा रहा होता, तो बात समझ में आती, लेकिन ऑपरेशन सिंदूर के बीच में यह कैसे हो सकता है? क्या यह पैसे के लिए हो रहा है? उन्होंने कहा कि अमित शाह कहते हैं कि यह आईसीसी द्वारा आयोजित किया जाता है, तो उनके बेटे के अध्यक्ष रहते हुए आईसीसी पाकिस्तान को बाहर क्यों नहीं कर सकता?

वोट चोरी और मतदाता सूची में हेराफेरी ने लोगों का विश्वास डगमगा दिया : वेणुगोपाल

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस महासचिव के सी वेणुगोपाल ने कहा है कि 'वोट चोरी' भारत की अखंडता के लिए खतरा है और उन्होंने केंद्र पर ''मतदाता सूची में हेराफेरी'' करने का भी आरोप लगाया। उन्होंने एक्स पर पोस्ट में कहा कि वोट चोरी और मतदाता सूची में हेराफेरी ने लोकतंत्र की बुनियाद में लोगों का विश्वास डगमगा दिया है। वेणुगोपाल इस मुद्दे पर पार्टी द्वारा शुरू किए गए राष्ट्रव्यापी 'वोट चोर, गद्दी छोड़' हस्ताक्षर अभियान में शामिल हुए। उन्होंने रविवार को वार्ड कैथवना में आयोजित अभियान में हिस्सा लिया। अलप्पुझा के सांसद ने एक्स पर पोस्ट में आरोप लगाया कि वोट चोरी कोई मामूली अपराध नहीं है। यह हमारे संविधान, हमारी अर्थव्यवस्था, सामाजिक न्याय और भारत की अखंडता के लिए एक बड़ा खतरा है। रिपोर्ट के मुताबिक वेणुगोपाल ने कहा कि कांग्रेस पूरे भारत में पांच करोड़ हस्ताक्षर एकत्र करेगी। कांग्रेस नेता ने दावा किया कि यह अभियान एक जन आंदोलन के रूप में गति पकड़ रहा है और उन्होंने लोकतंत्र में विश्वास रखने वाले हरेक नागरिक से संविधान की रक्षा करने और भारत की आत्मा को बचाने के लिए इस संघर्ष में शामिल होने का आह्वान किया।

भारी बारिश और बाढ़ से 5 जिलों में हुई 10 की मौत, 12 हजार लोगों का किया गया रेस्क्यू

-चेरापूंजी नहीं इस दफा तमहिनी घाट बना देश का रैन कैपिटल

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के कई हिस्सों में लगातार दो दिनों से जारी भारी बारिश ने जनजीवन अस्त-व्यस्त कर दिया है। राज्य के पांच जिलों में भारी बारिश और बाढ़ से जुड़ी घटनाओं में बीते 24 घंटे में 10 लोगों की मौत हो गई है। मरने वालों में नासिक के 4, धाराशिव और अहिल्यानगर के 2-2, जबकि जालना और यवतमाल के 1-1 व्यक्ति शामिल हैं।

सरकारी आंकड़ों के अनुसार, अब तक 11,800 से ज्यादा लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया है। मराठवाड़ा क्षेत्र के जालना, बीड, लातूर, नांदेड़, हिंगोली, परभणी और छत्रपति संभाजीनगर जिले सबसे ज्यादा प्रभावित हुए हैं। नासिक में गोदावरी नदी उफान पर है। जलस्तर खतरे के निशान को पार कर गया, जिससे रामकुंड इलाके के कई मंदिर और घाट जलमग्न हो गए। प्रशासन ने लोगों को नदी किनारे जाने से मना किया है।

पुणे का तमहिनी घाट बना देश का 'रेन कैपिटल'

पुणे जिले की मुलशी तहसील स्थित तमहिनी घाट में इस मानसून सीजन में अब तक 9,000 मिमी से ज्यादा बारिश दर्ज की गई है। यह आंकड़ा इस साल भारत में सबसे ज्यादा है। अब तक मेघालय के चेरापूंजी और मौसिनराम गांवों को देश के सर्वाधिक वर्षा वाले क्षेत्र माना जाता था, लेकिन इस बार तमहिनी घाट ने एक नया रिकॉर्ड बनाने का काम कर दिया है।

जयकवाड़ी डैम के सभी 27 गेट खोले गए

औरंगाबाद जिले में हालात बेहद गंभीर हैं। रविवार देर रात करीब 12 बजे जयकवाड़ी डैम के सभी 27 गेट 10 फीट तक खोल दिए गए, जिससे गोदावरी नदी बेसिन में 3,06,540 क्यूसेक पानी छोड़ा गया। जबकि बेसिन की क्षमता सिर्फ 1 लाख क्यूसेक है। इसके चलते औरंगाबाद के 1,219 गांवों में बाढ़ का पानी भर गया और हजारों लोग प्रभावित हुए।

एनडीआरएफ की टीमें राहत-बचाव में जुटीं

पूरे राज्य में एनडीआरएफ की 16 टीमें तैनात की गई हैं। इसके अलावा दो टीमों को पुणे में स्टैंडबाय पर रखा गया है। प्रशासन लगातार संवेदनशील इलाकों की निगरानी कर रहा है और जरूरत पड़ने पर और टीमें भेजी जा सकती हैं। भारी बारिश के चलते महाराष्ट्र के कई जिलों में सड़क और रेल यातायात प्रभावित हुआ है। मौसम विभाग ने अगले 48 घंटे तक राज्य के कई हिस्सों में भारी बारिश का अलर्ट जारी किया है।

चैतन्यानंद मामला: पुलिस का दावा बाबा ने 16 लड़कियों का किया यौन शोषण

नई दिल्ली (एजेंसी)। यौन शोषण मामले में आरोपी चैतन्यानंद पर दिल्ली पुलिस का शिकंजा कसता जा रहा है। रविवार को पटियाला हाउस कोर्ट ने बाबा को 5 दिन की पुलिस हिरासत में भेजा था। इसके बाद सोमवार तड़के दिल्ली पुलिस की टीम बाबा को उस इंस्टिट्यूट लेकर पहुंची, जहां छात्राओं का शोषण किया जाता था।

दिल्ली पुलिस ने इस मामले में एफआईआर जोड़ी है, जो गैर-जमानती अपराध है और हत्या की धमकी जैसे गंभीर अपराधों के लिए लगाई जाती है। इससे पहले इस मामले में जो अपेक्षाकृत कम गंभीर मानी जाती है। पुलिस का दावा है कि बाबा ने अब तक 16 लड़कियों के साथ यौन शोषण किया है और इसके पुख्ता डिजिटल सबूत भी मौजूद हैं। पुलिस ने कोर्ट से बाबा और पीड़िताओं का आमना-सामना कराने तथा छिपाए गए डिजिटल सबूतों को इकट्ठा करने के लिए हिरासत की मांग की थी। दूसरी तरफ बाबा के वकील ने इसका विरोध करते हुए कहा कि पुलिस उनके साथ ठीक व्यवहार नहीं कर रही है। उन्होंने यह भी तर्क दिया कि बाबा वरिष्ठ नागरिक और साधु हैं, जिनका स्वास्थ्य ठीक नहीं है और पुलिस पहले ही उनका सारा सामान जब्त कर चुकी है। पुलिस की जांच में यह सामने आया कि बाबा ने बाथरूम तक में कैमरे लगाए थे, जिससे छात्राओं की निजता का गंभीर उल्लंघन होता था। पुलिस का कहना है कि पीड़ित लड़कियों को अल्मोड़ा, गुड़गांव और फरीदाबाद तक ले जाया जाता था। फिलहाल 16 लड़कियों ने इस मामले में औपचारिक शिकायत दर्ज कराई है। डिजिटल सबूतों को मजबूत बनाने के लिए पुलिस आईपी एड्रेस की भी जांच कर रही है। जांच अभी जारी है और आने वाले दिनों में और बड़े खुलासे होने की संभावना जताई जा रही है।

दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेसवे के ऊपर बनेंगे बंदरों के लिए झूले, नीचे दौड़ेंगे वाहन

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेसवे पर बने एशिया के सबसे लंबे वाइल्ड लाइफ कॉरिडोर पर जहां ऊपर वाहन फर्राटा भरेंगे, वहीं नीचे वन्यजीव आराम से विचरण कर सकेंगे। इसके साथ अब सड़क हादसों से बचाव के लिए एक और अनोखी पहल होने जा रही है। नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एनएचएआई) की ओर से यहां उत्तर प्रदेश का पहला मंकी लैडर तैयार किया जाएगा। यह लैडर खासतौर पर बंदरों के लिए बनाया जा रहा है, ताकि वह सड़क पार करते समय सीधे वाहनों की चपेट में न आएं और कॉरिडोर पर किसी बड़े हादसे को टाला जा सके।

एनएचएआई के परियोजना निदेशक पंकज कुमार मौर्य के अनुसार, यह मंकी लैडर पेड़ों से जुड़ा होगा। इससे बंदर आसानी से एक ओर से दूसरी ओर जा सकेंगे और उन्हें सड़क पर उतरने की जरूरत नहीं पड़ेगी। इस तरह सड़क पर अचानक आने वाले वन्य जीवों से होने वाले हादसों की संभावना कम हो जाएगी। यह व्यवस्था वन्य जीवों और सड़क सुरक्षा दोनों को ध्यान में रखकर की जा रही है।

इस प्रयोग का उद्देश्य न केवल सड़क हादसों को रोकना है, बल्कि जैव विविधता की रक्षा करना भी है। एक्सप्रेसवे से रोजाना हजारों वाहन गुजरते हैं और यदि वन्य जीवों के लिए सुरक्षित आवागमन की सुविधा मिलती है, तो यह मानवीय और पर्यावरणीय संतुलन को बनाए रखने में मदद करेगा। बंदरों का यह सुरक्षित मार्ग पूरे उत्तर भारत के लिए मिसाल बन सकता है। ये उत्तर प्रदेश का पहला मंकी लैडर होगा। जो इस एक्सप्रेसवे पर तैयार किया जाएगा। दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेसवे पर एशिया का सबसे लंबा वाइल्ड लाइफ कॉरिडोर बना है, जिसके ऊपर वाहन फर्राटे भर सकेंगे। वहीं वन्यजीव आराम से घूम सकेंगे। दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेसवे पर एक बड़ा हिस्सा सहारनपुर की शिवालिक पहाड़ियों और राजाजी नेशनल पार्क से होकर गुजरता है। इस इलाके में बंदरों की संख्या बहुत ज्यादा है और अक्सर वे सड़क पर आ जाते हैं। इससे वाहन चालक भले ही धीमी गति से चलें, लेकिन अचानक सामने आने वाले बंदर सड़क हादसों का कारण बन जाते हैं। इस समस्या का समाधान करने के लिए राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) ने वाइल्ड लाइफ कॉरिडोर पर मंकी लैडर बनाने का निर्णय लिया है। मंकी लैडर का निर्माण यूपी में पहली बार किया जा रहा है। अधिकारी उम्मीद कर रहे हैं कि इस पहल से सड़क पर होने वाले हादसे कम होंगे और वन्य जीवों की सुरक्षा बढ़ेगी। इसके अलावा यह परियोजना पर्यावरणीय शिक्षा का भी उदाहरण बनेगी, जिससे लोग जानवरों और उनके आवास के प्रति अधिक संवेदनशील होंगे। सहारनपुर के इलाके में वाहन चालक कई बार बंदरों से टकराने से बचते हैं, लेकिन अचानक आने से कई बार हादसे हो चुके हैं। मंकी लैडर से बंदर ऊपर से सुरक्षित सड़क पार करेंगे और वाहन चालकों को भी सुरक्षित यात्रा का मौका मिलेगा। इससे एक्सप्रेसवे पर यातायात में व्यवधान और दुर्घटनाओं की संभावना दोनों कम होंगी।

तमंचा दिखाकर वीडियो बनाने वाले युवक को पकड़ा

पूर्वी दिल्ली। उत्तर पूर्वी जिले की पुलिस ने सोशल मीडिया पर तमंचा दिखाकर वीडियो बनाने वाले युवक सुभाष मोहल्ला निवासी जमाल उर्फ जांबाज को पकड़ा है। पुलिस ने उसके कब्जे से तमंचा, कारतूस और दो खाली खोखे बरामद किए हैं। उत्तर पूर्वी जिला पुलिस उपायुक्त आशीष मिश्रा के मुताबिक, सोशल मीडिया पर वीडियो काफी तेजी से वायरल हो रहा था, जिसमें एक युवक अवैध हथियार के साथ हवा में फायरिंग कर रहा था। पुलिस ने वीडियो की जांच शुरू की और संदिग्ध की पहचान की। 26 सितंबर की देर रात सूचना के आधार पर पुलिस ने इलाके में जाल बिछाकर जमाल को दबोच लिया। पूछताछ में आरोपी ने पुलिस को बताया कि वह सोशल मीडिया पर वायरल होने के लिए वीडियो बनाता था। साथ ही, इलाके में अपना दबदबा कायम करने के लिए वह शौकिया तौर पर अपने पास हथियार रखता था। वहीं, पुलिस आरोपी से पूछताछ कर यह पता लगाने की कोशिश कर रही है कि उसके पास हथियार कैसे आया।

अवैध पटाखे लेकर आए दंपती व बेटा गिरफ्तार

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट की पाबंदी के बावजूद लोग राजधानी में अवैध पटाखे बेचने से बाज नहीं आ रहे हैं। ऐसे ही एक मामले में पश्चिम जिला के स्पेशल स्टाफ ने राजौरी गार्डन इलाके में छापेमारी कर दंपती व उनके बेटे को भारी मात्रा में अवैध पटाखों के साथ गिरफ्तार किया है। इनके पास से पुलिस ने 3580 किग्रा से अधिक पटाखे बरामद किए हैं। पकड़े गए अरोपियों की पहचान सुशील कक्कड़ (53), पत्नी उपासना कक्कड़ (50) और शिवम कककड़ (28) के रूप में हुई है। आरोपी मेरठ, गाजियाबाद और गुरुग्राम में अलग-अलग जगहों से पटाखे लाकर बेचने की तैयारी कर रहे थे। पटाखों की दोबारा से पेकिंग की जा रही थी। पश्चिम जिला के पुलिस उपायुक्त ने बताया 25 सितंबर को मिली सूचना के आधार पर टीम ने विशाल एंक्लेव स्थित मकान में छापा मारा। आरोपी परिवार घर में पटाखों की दोबारा से पैकिंग का काम कर रहा था। मकान की तलाशी दौरान हर कोने में पटाखे मौजूद थे।आरोपियों ने रसोई को भी नहीं छोड़ा था। पुलिस ने तीनों को गिरफ्तार कर पूछताछ की तो आरोपियों ने मेरठ, गाजियाबाद और गुरुग्राम से पटाखे लाने की बात की।

चलती फिरती चालान की दुकान है ये कार, रफ्तार इतनी थी की उड़े परखच्चे, लील गया पांच जिंदगी

कौमी पत्रिका

गुरुग्राम। गुरुग्राम एनएच-48 पर दिल्ली-जयपुर लेन पर शनिवार की सुबह दुर्घटनाग्रस्त हुई थार गाड़ी (यूपी 81 सीएस 2319) पहले भी कई चालान हो चुके हैं। पुलिस जांच में सामने आया है कि थार गाड़ी के कुल 11 चालान कटे हैं, इनमें 10 चालान को भुगता नहीं गया है। जांच में पता चला है कि इस थार गाड़ी के ज्यादातर चालान ओवर स्पीड के हैं। ऐसे में जब भी इस थार गाड़ी को जिस भी चालक ने चलाया, उसी ने तेज रफ्तार में गाड़ी चलाई। थार गाड़ी के मालिक विष्णु कुमार (तीसरे मालिक) के नाम दर्ज इस गाड़ी पर फरवरी, मार्च, मई, जून, जुलाई व अगस्त माह में तेज रफ्तार के चालान कटे। 16 नवंबर 2024 को नंबर प्लेट संबंधी चालान, 12 मार्च को गलत दिशा में गाड़ी चलाने 300 रुपये का चालान, 13 मार्च को ओवर स्पीड का 2000 रुपये का चालान, 05 मई को गाड़ी के शीशे पर ब्लेक फिल्म लगाने पर 4500 रुपये का चालान, 15 जून को ओवर स्पीड का 2000 रुपये का चालान, 22 जून को हाई बीम का गलत इस्तेमाल का चालान और 19 अगस्त को गलत जगह पार्किंग करने पर 500 रुपये का चालान के अलावा अन्य यातायात नियमा तोड़ने पर चालान हुए हैं। बार-बार चालान कटने के बाद भी मालिक या चालक ने यातायात नियमों पर ध्यान नहीं दिया। हादसे में मौके पर ही दो

युवकों व दो युवतियों की मौत हो गई थी, जबकि एक युवती ने अस्पताल में दम तोड़ा। वहीं, एक युवक मेदांता अस्पताल में वेंटिलेटर पर जिंदगी व मौत के बीच जूझ रहा है। पुलिस ने पांचों शव को कब्जे में लेकर मोर्चरी पहुंचाया और हादसे की छानबीन शुरू की। मृतकों और घायल के परिजनों को सूचना दी। मृतकों की पहचान आदित्य प्रताप सिंह, गौतम, प्रतिष्ठा मिश्रा, लावण्या और ज्योति सोनी के रूप में की गई। वहीं, कपिल शर्मा अस्पताल में उपचाराधीन है। जांच में सामने आया है कि हादसे का शिकार हुए सभी युवक-युवतियां शुक्रवार की रात को नोएडा से काले रंग की थार गाड़ी (यूपी 81 सीएस 2319) में सवार होकर सिग्नेचर चौक के पास इबोला क्लब में आए थे। अब तक पुलिस जांच में सामने आया है कि शनिवार की सुबह 4.12 बजे वे थार गाड़ी में सवार होकर इबोला क्लब से निकले और 4.22 बजे वे दिल्ली-जयपुर हाईवे (एनएच-48) पर चढ़े थे। इसके बाद दिल्ली-जयपुर हाईवे (एनएच-48) के एग्जिट पॉइंट-9 पर थार गाड़ी हादसे का शिकार हो गई। पुलिस ने जब सीसीटीवी कैमरों की जांच कराई तो पता चला कि थार गाड़ी 100 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से भी अधिक गति में दौड़ रही थी। ऐसे में संभावना जताई जा रही है कि थार गाड़ी की तेज रफ्तार होने और अचानक से ब्रेक लगने के कारण अनियंत्रित होकर पलटी खाते हुए डिवाइडर से जा टकराई। हादसे की सूचना मिलते ही सेक्टर-40 थाने की पुलिस मौके पर पहुंची और घटनास्थल थार गाड़ी को हटवाया।

भ्रष्टाचार के मामले में आईआरटीएस अधिकारी सहित सभी आरोपी बरी

नई दिल्ली। राउज एवेन्यू कोर्ट ने शनिवार को भ्रष्टाचार के मामले में आईआरटीएस अधिकारी सहित सभी आरोपियों को बरी कर दिया। विशेष न्यायाधीश सुधांशु कौशिक ने अभियोजन और बचाव पक्ष की दलीलों का विश्लेषण करने के बाद, आरोपों को उचित संदेह से परे साबित नहीं होने पर यह फैसला सुनाया। आरोप है कि 1997 बैच के आईआरटीएस अधिकारी रवि मोहन शर्मा उस समय यातायात परिवहन (कोचिंग) के निदेशक के रूप में कार्यरत थे। उन पर मेसर्स रेल टूर इंडिया एलएलपी और उसके साझेदारों, राजेश चंपकलाल जोधानी और कुमार वादीलाल शाह द्वारा आयोजित समूह पर्यटन के लिए रेलवे कोच किराये पर लेने के लिए अवैध रूप से रिश्वत लेने का आरोप लगाया गया था।

ऑनलाइन शेयर धोखाधड़ी रैकेट का पर्दाफाश, दो गिरफ्तार

नई दिल्ली। अपराध शाखा की साइबर सेल ने एक हाई प्रोफाइल ऑनलाइन शेयर धोखाधड़ी का भंडाफोड़ किया है। इस दौरान पुलिस ने दो आरोपियों पटना बिहार निवासी साहिल यादव (25) व आर्यन (22) को गिरफ्तार किया है। यह आरोपी एक चीनी नागरिक के लिए काम कर रहे थे। इस रैकेट के बदमाशों ने डर पैदा कर और मनोवैज्ञानिक दबाव देकर लोगों ने करोड़ों रुपये की ठगी कर ली। अपराध शाखा के पुलिस उपायुक्त आदित्य गौतम ने बताया कि आरोपी साहिल यादव बीएससी स्नातक है और आर्यन स्नातक है। आरोपियों ने एक पीड़ित को एक टेलीग्राम समूह के माध्यम से आज खरीदें-कल बेचें और आईपीओ रेटिंग ट्रैपिंग की आड़ में मोटे मुनाफे का लालच देकर व स्टॉक ट्रेडिंग योजनाओं में निवेश करने का झांसा दिया। पीड़ति से दो महीनों में 47,23,015 रुपये ठग लिए। पीड़ति ने कई बैंक खातों में पैसे ट्रांसफर किए थे। जब उसने अपने पैसे वापस निकालने की कोशिश की तो आरोपियों ने उन्हें धमकी दी। साथ ही मोटी रकम ऐंठ ली। 31,45,000 रुपये हर्षिता फर्नीचर्स एंड इंटीरियर्स के नाम से आईडीएफसी फर्स्ट बैंक के चालू खाते में जमा किए गए थे। इसके अलावा 23,80,000 (31.45 लाख में से) इंडसइंड बैंक के चालू खाते बुबाई इंस्टेंट शॉप ओपीसी प्राइवेट लिमिटेड में भेजे गए। उक्त फर्म का मालिक साहिल यादव था। उक्त बैंक खाते का पंजीकृत मोबाइल नंबर (आरएमएन) आर्यन के नाम पर पंजीकृत पाया गया। दोनों आरोपियों ने ठगी के पैसे को सफेद करने के लिए इंडसइंड, एचडीएफसी, यस बैंक, आईडीएफसी फर्स्ट, एयू स्मॉल फाइनेंस, बंधन और इक्विटास बैंक सहित विभिन्न बैंकों में सात खाते खोले थे। जांच में उक्त फर्म से जुड़ी 89 एनसीआरपी शिकायतें भी सामने आईं। यह भी पता चला कि आरोपी नोएडा में एक कार्यालय भी चला रहे थे। वे लोग उत्तम नगर, दिल्ली निवासी अपने हैंडलर को रिपोर्ट करते थे। उसे चीन में रहने वाले टॉम नामक व्यक्ति से निर्देश मिल रहे थे। आर्यन की मौजूदगी ग्रेटर नोएडा में पाई गई। इस पर पुलिस टीम ने दोनों को गिरफ्तार कर लिया। आरोपियों ने खुलासा किया कि वह दिसंबर 2024 में टेलीग्राम के माध्यम से जुड़े थे। उन्हें चालू बैंक खाते उपलब्ध कराने के लिए प्रति 1 करोड़ के लेनदेन पर 30,000 मिलता था। इसके लिए उन्होंने बुबाई इंस्टेंट शॉप ओपीसी प्राइवेट लिमिटेड बनाई और नोएडा में एक कार्यालय किराये पर लिया। एक ही नाम से धोखाधड़ी के पैसे भेजने के लिए कई बैंक खाते खोले। यह भी पता चला कि बुबाई इंस्टेंट शॉप ओपीसी प्राइवेट लिमिटेड के नाम पर विभिन्न बैंकों में सात चालू खाते खोले गए हैं।

दुष्कर्म के मामले में वायुसेना अधिकारी की 10 साल की सजा निलंबित

नई दिल्ली। उच्च न्यायालय ने 2021 में एक महिला सहकर्मी से कथित दुष्कर्म के मामले में भारतीय वायुसेना के एक अधिकारी की 10 साल की सजा निलंबित कर दी है। हाईकोर्ट ने सशस्त्र बल न्यायाधिकरण (एएफटी) के मार्च 2024 के उस आदेश को रद्द कर दिया, जिसमें अधिकारी की सजा निलंबित करने से इन्कार कर दिया था। साथ ही, उसे 5-5 लाख रुपये की दो जमानत राशि जमा करने पर जमानत दे दी है। अदालत ने एएफटी से 2023 से लंबित अधिकारी की अपील पर जल्द सुनवाई करने और उसका जल्द निपटारा करने का आदेश दिया है। याचिकाकर्ता का कोई पूर्ववृत्त नहीं है और वह 10 साल में से 4 साल की सजा पहले ही काट चुका है। न्यायमूर्ति सी हरिशंकर और न्यायमूर्ति ओम प्रकाश शुक्ला की पीठ ने अपने फैसले में कहा कि उनकी अपील 2023 में दायर की गई थी। आने वाले समय में इसका निपटारा होने की संभावना नहीं है। पीठ ने कहा कि यह वास्तविक और प्रासंगिक जोखिम है कि अपील के निष्कर्ष की प्रतीक्षा करते समय उनकी सजा का एक बड़ा हिस्सा या पूरी सजा हिरासत में कट सकती है। मामला सितंबर 2021 का है, जब मेस में एक पार्टी हुई थी। उसमें याचिकाकर्ता, अभियोजन पक्ष और अन्य सहपाठी शामिल थे। उस शाम, महिला को चोट लगी थी और उसे कुछ दवाएं दी गई थी। अभियोजन पक्ष का कहना था कि महिला ने दवा के साथ शराब का सेवन किया था, जिससे उसकी हालत खराब हो गई थी। चूंकि उसकी तबीयत ठीक नहीं थी, इसलिए दो सहपाठियों ने उसे उसके कमरे तक पहुंचाया। उसी रात, उसके साथ कथित तौर पर यौन उत्पीड़न किया गया, लेकिन बेहोश होने के कारण वह घटनाओं को याद नहीं कर सकी। हालांकि दावा किया गया था कि कथित घटना सहमति से हुई थी और वीडियो में कथित स्वीकारोक्ति अनैच्छिक थी।

होटल के कमरे में फंदे से लटका मिला महिला का शव

नई दिल्ली। पश्चिम दिल्ली के तिलक नगर में होटल दिल्ली-18 के एक कमरे में शुक्रवार शाम एक महिला शव फंदे से लटका मिला। होटल स्टाफ ने इसकी सूचना पुलिस को दी। मृतका की शिनाख्त पूजा (24) के रूप में हुई है। पुलिस को मौके से एक सुसाइड नोट बरामद हुआ है। अपने नोट में महिला ने पति से चल रहे पारिवारिक विवाद का जिक्र करते हुए किसी को मौत का जिम्मेदार नहीं ठहराया है। पुलिस पूजा के माता-पिता के अलावा उसके पति से पूछताछ कर रही है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि जांच के बाद जो भी तथ्य सामने आएंगे उसके अनुसार कार्रवाई की जाएगी। पश्चिम जिला पुलिस उपायुक्त ने बताया कि शुक्रवार शाम उनकी टीम को होटल दिल्ली-18 से एक महिला के फंदे पर लटके होने की सूचना मिली। छानबीन हुई तो पता चला कि महिला ने शुक्रवार को ही होटल में कमरा बुक किया था। स्टाफ खाने के लिए पूछने गया तो घटना के बारे में पता चला। छानबीन में पता चला कि पूजा अपने पति नरेश कुमार के साथ फरीदाबाद में रहती थी। दोनों की करीब ढाई साल पहले शादी हुई थी। शादी के बाद दोनों के बीच मनमुटाव हो गया। शुक्रवार को वह दिल्ली के तिलक नगर केशोपुर मंडी के पास पहुंची। यहां उसने एक होटल का कमरा किराये पर लिया। बाद में फंदा लगाकर खुदकुशी कर ली।

मायके में रह रही पत्नी और बेटे को घर जाकर मारी गोली

नई दिल्ली । दिल्ली के दयालपुर इलाके में शनिवार दोपहर गोलीबारी से सनसनी फैल गई। मूंगा नगर में एक पति ने अपनी पत्नी और बेटे को गोली मार दी। घायल दोनों को तुरंत जेपीसी अस्पताल ले जाया गया। पुलिस जांच में सामने आया कि 40 वर्षीय महिला जहांगीरपुरी की रहने वाली है।

बुलंदशहर व अलीगढ़ के लिए कंबोडिया से चलाया जा रहा था ठगी का नेटवर्क, चार गिरफ्तार

नई दिल्ली। दक्षिण-पश्चिमी जिले की साइबर थाना पुलिस ने साइबर जालसाजी के एक ऐसे गिरोह का पर्दाफाश किया है जो कंबोडिया से चलाया जा रहा था। पुलिस ने इस गिरोह के भारत में मौजूद चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपी ने फर्जी ट्रेडिंग एप के जरिए पीड़ितों के साथ ठगी कर रहे थे। यह गिरोह आईपीओ में निवेश के बहाने पीड़ितों से करोड़ों रुपये ठग चुके हैं। उन्होंने फर्जी एप में फर्जी आईपीओ आवंटन और झूठी लोन प्रविष्टियां दिखाकर एक पीड़ित से 8.04 लाख रुपये ठग लिए थे। आरोपियों की कथित कथित बैंक से जुड़ी 16 एनसीआरपी शिकायतें मिली हैं। दक्षिण-पश्चिमी जिला पुलिस उपायुक्त अमित गोयल ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर निवासी माणिक अग्रवाल (25), खुर्जा, बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश निवासी अब्दुल्ला उर्फ लूसिफर (23), सिविल लाइंस, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश निवासी मोहम्मद आमिर उर्फ रॉकी (26) और इंदौर मध्य प्रदेश निवासी शनमिया खान के पास से आपत्तिजनक डाटा, चैट आदि से युक्त कुल 4 हाईटेक मोबाइल फोन बरामद किए हैं। पुलिस उपायुक्त ने बताया कि एक पीड़ित टी सिंह ने बताया कि 10 जून को उन्हें एक व्हाट्सएप ग्रुप 101 शून्य वेल्थ सर्कल में अनाया कपूर ने उसे जोड़ा। उसने सरबजीत सिंह विर्क के सहायक के रूप में खुद को मुख्य निवेश अधिकारी होने का दावा किया। उन्हें सुनिश्चित मुनाफे और 34 लाख के फर्जी आईपीओ आवंटन का झांसा दिया गया। आरोपी ने पीड़ित के एसबीआई खाते में 5,000 जमा कर बरगलाया। बाद में एप में 8,00,000 की फर्जी ऋण प्रविष्टि दिखाई गई और चुकाए जाने तक दंड की धमकी दी गई। शिकायतकर्ता ने 8,04,000 रुपये आरोपियों के बैंक खाते में 11 अगस्त को ट्रांसफर कर दिए। हालांकि, उसके बाद उसकी निकासी रोक दी गई। स्टॉक और शेयरों में निवेश के बहाने पीड़ित से 8.04 लाख रुपये की ठगी की गई। सीसीटीवी विश्लेषण से पुष्टि हुई कि धोखाधड़ी की गतिविधियों को अंजाम देते समय आरोपी दिल्ली के होटलों में एक साथ रुके थे। पता चला कि पीड़ितों को लुभाने के लिए इस्तेमाल किए गए व्हाट्सएप नंबर कंबोडिया में सक्रिय थे।

सीएसआर फंड में निवेश के नाम पर ठगी करने वाला आरोपी गिरफ्तार

नई दिल्ली। दरियागंज में एक कंपनी के अधिकारी की शिकायत के आधार पर साइबर पुलिस ने एक संगठित ठगी गिरोह के सक्रिय सदस्य जितेंद्र पांडे (32) को अहमदाबाद, गुजरात से गिरफ्तार किया है। इस गिरोह ने कंपनी से 69 लाख रुपये की ठगी की थी। पुलिस ने आरोपी के पास से 43.20 लाख रुपये नकद, एक एंडेवर कार और दो मोबाइल फोन (सैमसंग फोल्ड 4 और आईफोन 14) बरामद किए हैं। शिकायत के अनुसार जनवरी 2025 में महाराष्ट्र के आशीष, अपूर्व, विनायक, विजय और तुषार ने शिकायतकर्ता की कंपनी से संपर्क किया और निवेश का प्रस्ताव दिया। इन लोगों ने कंपनी से प्रोजेक्ट रिपोर्ट, वित्तीय विवरण, क्रॉस्ड चेक और अन्य दस्तावेज मांगे, यह दावा करते हुए कि वे कंपनी के लिए फंडिंग की व्यवस्था करेंगे। कई जूम मीटिंग्स के बाद 24 फरवरी को विजय ने तीन अन्य व्यक्तियों शोएब उर्फ सुशांत (हुबली), सईद (कोल्हापुर) और प्रकाश को पेश किया। इन लोगों ने शिकायतकर्ता को तत्काल नकद में सर्विस फीस के रूप में 69 लाख रुपये दिल्ली के करोल बाग स्थित गोल्ड प्लाजा में जमा करने को कहा। 26 फरवरी को विजय, प्रकाश और सईद ने फर्जी स्क्रीनशॉट भेजे, जिसमें 49 लाख रुपये की डेबिट ट्रांजेक्शन दिखाई गई, लेकिन कंपनी के खाते में कोई राशि जमा नहीं हुई। इसके बाद प्रकाश मौके से फरार हो गया, जबकि बाकी आरोपी बहाने बनाने लगे और संपर्क से बचने लगे। उसके बाद शिकायत दर्ज कर पुलिस ने जितेंद्र पांडे को गिरफ्तार किया। आरोपी ने बताया कि वह मास्टरमाइंड मोनिश बदानी, विक्रम, पिंटू, भूपेश और पारस (सभी मुंबई निवासी) के साथ मिलकर काम करता था। यह गिरोह विभिन्न शहरों में अस्थायी कार्यालय खोलता था, व्यवसायियों को सीएसआर फंड में निवेश का लालच देता था और फर्जी पेंमेंट की पुष्टि भेजकर ठगी करता था। ठगी के बाद वे कार्यालय बंद कर शहर से फरार हो जाते थे।

एनजीटी ने उत्तर रेलवे पर लगाया दो करोड़ का जुर्माना

नई दिल्ली। राष्ट्रीय हरित अधिकरण (एनजीटी) ने उत्तरी रेलवे की उस याचिका को खारिज कर दिया, जिसमें उसने दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति (डीपीसीसी) के नोटिस को चुनौती दी थी। डीपीसीसी की जांच में पाया कि उत्तरी रेलवे बिना सहमति के कार्य कर रहा था। इस कारण इसे रेड कैटेगरी यानी प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों की सूची में शामिल किया गया है। डीपीसीसी ने उत्तरी रेलवे पर 18 दिसंबर 2023 से 15 मई 2025 तक 515 दिनों के लिए 40 हजार रुपये प्रतिदिन के हिसाब से कुल 2.06 करोड़ रुपये का जुर्माना लगाया है।

NAME CHANGE
I hitherto known as Arjun S/O Ravi Nandan R/O H,NO-518, Gali NO-7 Phase-5, Near D.S.K School, Shiv Vihar, Karawal Nagar, PO: Dayalpur, DIST: North East, Delhi-110094, have changed my name and shall hereafter be known as Anuj Kumar.

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I, ANIL SHARMA S/O SHIBU SHARMA R/O H No-L-117 Paharganj Laxman Puri P.O-Pahar Ganj Swami Ram Tirth Nagar Central Delhi Delhi-110055 declare that name of my daughter has been wrongly written as NISHA SHARMA in my minor daughter namely NISHA KUMARI aged 14 years in her school records. The actual name of my daughter is NISHA KUMARI which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I, Bhopendra Singh S/O: Jagdish Pal Singh, R/O Lukhrara, Lukhrara, PO: Babugarh, DIST: Hapur, Uttar Pradesh - 245201, have changed the name of my minor son Kunal aged 9 years and he shall hereafter be known as KUNJ.

NAME CHANGE
I DUA BAKS S/O MAULLA BAKHSH R/O B-3-286-12.5 GAJ RAGHUBIR NAGAR TAGORE GARDEN WEST DELHI 110027 HAVE CHANGED MY NAME TO DUAA BAKHSH

NAME CHANGE
I,SAMEER KHAN S/O NAUSAD ALI R/O ,A- 409, CAMP NO-2 J J COLONY NANGLOI DELHI - 110041, I have changed my name to SAMEER MIRZA Permanently

PUBLIC NOTICE
NOTICE is hereby given to public at large on behalf of my client **Mrs. Reeta** in respect of Property area measuring 90 Sq.Yds , Carved out of Khasra no. 1631, Situated at Village Bagraanp, Ashok Vatika, Pargana & Tehsil Loni, Distt. Ghaziabad , U.P , for lost property document i.e Regd Gpa dated 22-01-1997 executed by Mr. Tara Chand in the favour of Mrs. Chandrakala in respect of plot area measuring 200 sq. Yds i. e 167.22 sq. Mtrs , khasra. No 1631 village Bagraanp doc. no. 615, Loni, Gzb, U.P. The document was misplaced on or around 10-07-2025. Online complaint has been lodged on 28.09.2025 vide application no. 3248728/2025 with Delhi Police. Any person(s)/Institution(s) found/finds the same may please send us to the address mentioned herein. Anyone misusing the same shall be liable for action under relevant provisions of the Law of the Land. Now my client intends avail loan facility in which **SMFG India Home Finance Company Limited** will provide the financial assistance If any person(s) has/have any objection(s) or claim(s) with respect to the right, title or interest in the said property may please contact us within Seven days from the date of this notice on the number & address mentioned herein below, failing which my client(s) shall not be held responsible in any manner whatsoever.
Khaitan and Khaitan
A-38 Kailash Colony,
New Delhi-110048,
Phone No: 011-49774545

नाम परिवर्तन
मैं, संजय वर्मा, पुत्र अमर सिंह, निवासी H.No.9, नेताजी मार्ग, केवल पार्क, आज़ाद पुर, उत्तर पश्चिम दिल्ली, दिल्ली-110033, ने अपने नाबालिग पुत्र का नाम अथर्व से बदलकर अथर्व वर्मा कर दिया है, जिसकी आयु 13 वर्ष है।

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I, IRSHAD KHAN S/O SAFI MOHAMMAD R/O H NO 03 Gali No-02, Block-D, Brijpuri, Near Shibban Public School, Sher Pur, North East Delhi-110094 declare that name of my wife has been wrongly written as NARGISH in my minor son namely MOHD AAVISH aged 13 years in his school records. The actual name of my wife is NARGIS KHAN which may be amended accordingly

NAME CHANGE
It is for general information I BIMLESH RAJAK S/o SONI RAJAK residing at S - 204 , Greater Kailash , Part -2 , South Delhi – 110048 , declare that name of my Father has been wrongly written as SONU RAJAK in my Driving License No. DL03 20040547229 and my Pan Card, No. FTUPR2953B. The actual name of my Father is SONI RAJAK, which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
It is for general information that I BIMLESH RAJAK S/o SONI RAJAK residing at S - 204 , Greater Kailash , Part -2 , South Delhi - 110048 declare that the name of my wife has been wrongly written as GEETA in my minor daughter KAVYA RAJAK aged 14 years in her Birth Certificate No. MCDOLIR - 0110 - 004592980 . The Actual name of my wife is GEETA RAJAK which may be amended accordingly.

PUBLIC NOTICE
Information is given to general public at large that our client Mr. Imran Ahmad purchasing Freehold Residential Plot No. 70 & 71, Block - A, area measuring 200 sq. yds., out of Khata No. 0114, Khasra No. 104, 105, 107, 294, 325 & 326, Situated at Village - Illahabas, Pargana & Tehsil Dadri, Distt. Gautam Budh Nagar, U.P. from Mr. Pawan Negi & Mrs. Sudha Negi., initially Mr. Hari Bhakta Singh Negi S/o Mr. Prem Singh Negi was the absolute owner by virtue of Sale Deed dated 30.09.2011 duly registered in the office of SR III, Noida, as Doc No. 7797, Book No. 01, Vol No. 2904, Page Nos. 111-136, Dated 30.06.2011., thereafter Mr. Hari Bhakta Singh Negi alias Hari Bhauta Singh Negi., our client is declaring that any other Person does not have any right over the said property, which is to be financed by ICICI Home Finance Co. Ltd.. Branch: Sohna Road, Haryana. If any person(s) have any objection(s) or claim(s) with respect to the` right, title or interest in the Said Property then contact us within 07 days from the date of Publication of this notice and or the same to the undersigned if found by anyone. Thereafter no claim shall be entertained
[NAVEEN KUMAR VERMA]
Advocate
F-211,sector-3 Vaishali Ghaziabad
Uttar Pradesh-201010, Contact at 09958871432

NAME CHANGE
I hitherto known as Komal Kathpaliya alias Komal Arora D/O Mahesh Chandra W/O Jatin Arora, R/O 595/1785 Upper Ground Floor, Moti Ram Road, Near Jindal Oil Mill, Ram Nagar, Shahdara, North East Delhi Delhi-110032, have changed my name and shall hereafter be known as KOMAL ARORA

NAME CHANGE
I, NITIN KUMAR S/o RAJKUMAR, R/o 48, Mandaula, Ghaziabad, Uttar Pradesh-201102, have changed the name of my minor son KIYANSH TYAGI aged 04 years and he shall be hereafter known as KARTIKEY TYAGI, for all future purposes.

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I Kedar S/O: Ratiram, RO B-405/3, Shani Bazar Road, Mother Dairy, Chandan Vihar, Nihal Vihar, Phase-2, Nangloi, PO: Nangloi, DIST: West Delhi, Delhi-110041,declare that name of mine has been wrongly written as Kedar Tank in my minor son Manish Tank aged 14 years in his school record. The actual name of mine is Kedar which may be amended accordingly.

PUBLIC NOTICE
Information is given to general public at large that our client Mr. Dinesh Kumar S/o Mr. Umed Kumar is the owner of Freehold Residential Built-up Property land area measuring 256 sq. yds. out of Khasra No. 894 and New Khasra No. 115, Situated in the old Lal Dora (1908-09) Abadi Deh of Village Alipur, Delhi-110036. by virtue of Regd. GPA (for her Husband) dated 13.03.2019 duly registered in SR-VIE, Delhi/New Delhi, Vide Doc. No. 129, Vol. No. 52, Book No. 4, Pages No. 49-72, Dated-13.03.2019., now our client is declaring that that any other person does not have any right over the said property, and same property Sold too be Mr. Tushar Sharma and Mrs. Devki Devi and same has been financed by SMFG India Home Finance Company Limited Branch: Moti Nagar U.P.. If any person(s) have any objection(s) or claim(s) with respect to the` right, title or interest in the Said Property then contact us within 07 days from the date of Publication of this notice and or the same to the undersigned if found by anyone. Thereafter no claim shall be entertained
[NAVEEN KUMAR VERMA]
Advocate
F-211,sector-3 Vaishali Ghaziabad
Uttar Pradesh-201010, Contact at 09958871432

NAME CHANGE
I, RAVINDER CHOUDHARY s/o late sh. OMPARKASH CHOUDHARY r/o. 42/19 Ashok Nagar New delhi - 110018 have changed my name to RAVINDER CHAUDHARY for all purpose

NAME CHANGE
I, SHIVANG CHOUDHARY s/o RAVINDER CHAUDHARY r/o 42/19 Ashok Nagar New delhi - 110018 have changed my name to SHIVANG CHAUDHARY for all purpose

NAME CHANGE
I, ANITA CHOUDHARY w/o RAVINDER CHAUDHARY r/o 42/19 Ashok Nagar New delhi - 110018 have changed my name to ANITA CHAUDHARY for all purpose

NAME CHANGE
I, Aarna Wadhwa D/o Amit Wadhwa R/o C4/903, Puri Diplomatic Greens, Sector 110/111, Gurugram, Haryana-122017 have changed my name from Aama Wadhwa to Aarna Amit Wadhwa for all future purposes.

NAME CHANGE
It is for general information that I GEETA JOSHI w/o MOHAN PANDEY residing at D-20, STREET NO 7, NEAR SABJI MANDI, MANDAWALI, UNCHE PAR, SHAKARPUR, DELHI-110092 declare the name of mine has been wrongly written as GEETA JOSHI in school records. The actual name of mine is GEETA PANDEY. Which may be amended accordingly

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I, JITTENDER SINGH S/O INDERJIT SINGH R/O D-462, Nehru Vihar, Civil Lines, North Delhi, Delhi-110054 declare that name of my minor son has been wrongly written as ASEESDEEP SINGH PASRICHA in my minor son namely ASEES DEEP SINGH aged 16 years in his 10 class educational documents. The actual name of my minor son is ASEES DEEP SINGH which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I Lalita Devi Kantiwal W/o Late Shri Mehar Chand, Residing at B-5/63, 3rd Floor, Safdarjung Enclave, New Delhi-110029 have changed my name to Lalita Devi to for all purpose

NAME CHANGE
WE, SUNIL SINGH S/o CHANDRIKA SINGH AND PURNIMA SINGH W/O SUNIL SINGH BOTH R/o A-1/454 MADHU VIHAR UTTAM NAGAR NEW DELHI 110059 have changed the name of our minor daughter AKANKSHA KUMARI aged 15 years (dob 08/09/2010) and she shall hereafter be known as SIMRAN SINGH.

NAME CHANGE
I, BIASAN DEVI is legally mother of No. 13766551H Rank HAV Name VIJAY KUMAR is presently residing at VLL-KOSERIAN, PO-KOSERIAN, TEH–JHANDUTTA, DIST-BILASPUR, STATE-HP, PIN-174030 have changed my name from BIASAN DEVI to VAYASA DEVI for all future purpose vide Affidavit No.IN-DL64281122482655X Dated 29/09/2025 before Notary Public New Delhi.

NAME CHANGE
I, KANDHA MANI is legally mother of No. 14674984L Rank-NK Name SATHISH M presently residing at VPO-THETHIGIRIPATTI, TEHMETTUR, DIST-SALEM (TAMIL NADU)-636451 have changed my name from KANDHA MANI to KANDHAMANI MUTHUMADHAIYAN for all future purposes. Vide affidavit dated 24/09/2025 before SUB DIVISIONAL MAGISTRATE New Delhi.

NAME CHANGE
I, RAHUL GOEL S/O SHARWAN KUMAR resident of PLOT NO-81 U.G FLOOR OPPOSITE TIHAR JAIL PRATAP NAGAR HARI NAGAR DELHI-110064. have changed my name to RAHUL GOYAL for all future purposes.

NAME CHANGE
I, SHARWAN KUMAR GOEL S/O RAM DEV resident of PLOT NO-81 U.G FLOOR OPPOSITE TIHAR JAIL PRATAP NAGAR HARI NAGAR DELHI-110064. have changed my name to SHARWAN KUMAR for all future purposes

NAME CHANGE
I, RAJ BALA GOEL S/O SHARWAN KUMAR resident of PLOT NO-81 U.G FLOOR OPPOSITE TIHAR JAIL PRATAP NAGAR HARI NAGAR DELHI-110064. have changed my name to RAJ BALA for all future purposes

NAME CHANGE
I, MOHAMMAD FURQAN son of MAHMOOD HASAN residing at H NO-1206, GALI NO-39/4 NEAR KHAJOOR WALI MASJID, JAFRABAD, SEELAMPUR, DELHI-110053 have changed my name to MOHD FURQAN for all future purpose.

NAME CHANGE
I, SHAMSHIDA BAGEM wife of MAHMOOD HASAN residing at LANDOUR BAZAR, JAMA MASJID, DEHRADUN, UTTRAKHAND-248179 have changed my name to SHAMSHEEDA for all future purpose.

NAME CHANGE
I,VASIYA W/O RIFAKAT R/O. LOI, POI - LOI SARAI DISTT MUZAFFAR NAGAR UTTAR PRADESH - 251309, I have changed my name to ASHIYA BEGUM Permanently

NAME CHANGE
I,Hamid Khan S/o Sajaval R/o Loi, Muzaffar Nagar Uttar Pradesh - 251309 , I have changed my name to HAMEED KHAN Permanently

NAME CHANGE
I, ANSHIKA SRIVASTAVA, W/O AMBER SAXENA, R/O A-BLOCK 1206,EMAAR EMERALD ESTATE, SECTOR-65, BADSHAHPUR, GURGAON, HARYANA-122101 HAVE CHANGED MY NAME TO ANSHIKA SAXENA FOR ALL FUTURE PURPOSES

नाम परिवर्तन
मैं, मौ. वाहिद पुत्र अब्दुल अजीज निवासी बी-19, पुरानी सीमापुरी, दिल्ली-95 घोषणा करता हूँ कि मेरा वास्तविक नाम मौ. वाहिद (Mohd. Wahid)है किंतु मेरे पुराने पासपोर्ट न. H4287089 में मेरा नाम त्रुटिपूर्वक मोहम्मद वाहिद (Mohmmad Wahid) लिखा गया है, उपरोक्त दोनों नाम मुझसे ही संबंधित हैं, इसलिए भविष्य में मुझे सभी उद्देश्यों के लिए मौ. वाहिद (Mohd. Wahid) के नाम से ही जाना पहचाना जाए।

PUBLIC NOTICE
This is to inform that Smt. Madhuri Devi has agreed to create mortgage the described property in favour of My client Aadhar Housing Finance Limited, Delhi Laxmi Nagar Branch, after execution of sale deed in her favour. Seller(s) Namely Sh. Bijendra Singh alias Vijendra Singh have agreed to sell their property "Plot no. 32, area measuring 50 Sq. Yds., Sai Residency-2, out of Khasra no. 7 Situated at Village Bhanota, Tehsil Dadri, Distt. Gautam Budh Nagar." Hence any other co-sharer(s)/or any other legal heir(s) or any previous owner(s) of the above-mentioned property or any other concerned parties (including but not limited to Banks, Financial institutions, NBFCs, HFCs, Govt. Authorities or Semi-Govt. Authorities/bodies) having any claim against or in respect of the said property or any part thereof by way of sale, exchange, mortgage (equitable or deposit of title deed otherwise) gift, trust, inheritance, family arrangement, maintenance, bequest, partnership, possession, lease, Sub-lease, tenancy, license, lien, charge, pledge, easement or otherwise, how/whosoever are hereby requested to notify the same in writing to the Undersigned with supporting documentary evidence at the address mentioned herein below within 7 days, from the date hereof, failing which the claim or claims, if any, of such person(s) shall be considered to have been waived and/or abandoned any my client AHFL shall proceed with the disbursement of loan and creation of mortgage on the above-mentioned property.
Dated : 29-09-2025
Place : Delhi
Advocate Ghanshyam Singh,
Ch. E-713 Karkardooma Courts,
Delhi-110032; Ph-8810212071

NAME CHANGE
I, SRIRAMA MURTHY MEDABAYENA S/O PENTAIAH MEDABAYENA R/O H.NO. D-523, J.J. COLONY, TIGRI NEAR BY MOHAN ATTA CHAKKI, NEW DELHI-110062 have changed my name to SRIRAMAMURTY MEDABAYENA for all purposes\

NAME CHANGE
I, SANGAM SHARMA D/O VIJAY SHARMA resident of AG-1/66A VIKASPURI MOR NEAR 24 SEVEN STORE VIKAS PURI TILAK NAGAR DELHI-110018 . have changed my name to SANGAM SALUJA for all future purposes.

NAME CHANGE
I, No-2609002W Rank-HAV Name-M MURUGESAN legal Father of M NITHISH Presently residing at WEST STREET, THIDEER NAGAR E.PUDUPATTI, PO-DODDAPPANAYAKANUR, TK-USILAMPATTI, DIST-MADURAI, TAMILNADU-625532, have changed my minor son's name from M NITHISH to NITHISH M for all future purposes vide Affidavit dated 29/09/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, No-2609002W Rank-HAV Name-M MURUGESAN Father of NIVYA SAI Presently residing at WEST STREET, THIDEER NAGAR E.PUDUPATTI, PO-DODDAPPANAYAKANUR, TK-USILAMPATTI, DIST-MADURAI, TAMILNADU-625532, have changed my minor daughter's name from NIVYA SAI to NIVYA SAI M for all future purposes vide Affidavit dated 29/09/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, Karan S/o Ram Avtar Bohra, R/o H. No: 165, Sector-4, Rohtak, Haryana - 124001, have changed my name to Karan Bohra for all intends and purposes.

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I Hemlata D/O Janki Prasad W/O Late Bharat Chaudhary R/O Khasra no 36/20 block B,street no 11, Kaushik Enclave Burari north delhi delhi 110084 .declare that name of mine and my husband has been wrongly written as Hema Chaudhary and Bharat Choudhary in my minor daughter namely Akansha aged 16 years in her school records .The actual name of mine and my husband are HEMLATA AND BHARAT CHAUDHARY, which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
It is for general information that I NEERAJ KUMAR S/O RAMESH CHAND R/O 122/3, Gali No. 3, Lakhpat Colony Part-2, Badarpur, South Delhi, Delhi-110044, declare that name of my minor daughter has been wrongly written as ARADHNA in my minor daughter's namely ARADHANA aged 13 years in her school records. The actual name of my minor daughter is ARADHANA which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I, Ram Avtar S/o Chandan Mal Bohra, R/o H. No: 165, Sector-4, Rohtak, Haryana - 124001, have changed my name to Ram Avtar Bohra for all intends and purposes.

NAME CHANGE
I, Shama Devi W/o Ram Avtar Bohra, R/o H. No: 165, Sector-4, Rohtak, Haryana - 124001, have changed my name to Shama Devi Bohra for all intends and purposes.

NAME CHANGE
I, C S BRAR S/o DALJIT SINGH BRAR R/o H NO K-1436, PALAMVIHAR, GURGAON CARTARPURI ALIAS DAULATPUR NASIRABAD 63, GURGAON, CARTERPURI, HARYANA-122017, have changed my name from C S BRAR to CHARANJIT SINGH BRAR for all future purposes.

NAME CHANGE
I, Shubnendu S/O Vinod Kumar Srivastava R/O H NO - SG-51, Flat no S1, sector 63A Noida Gautam buddha nagar UP 201301 Have changed my name to Shubhendu for all future purposes.

NAME CHANGE
I, Rahul s/o Kishan Ram R/o Rzh-119-B, Solanki Chowk, Palam Colony, Raj Nagar Part-2, Delhi-110077 have changed my name to Rahul Kumar for all future purposes.

NAME CHANGE
I, H. LIAN MUAN LAL S/o Hauzel Ralkhum R/o 39-A, Humayunpur, Safdarjung, Delhi-110029 , have changed my name to HAUZEL LIANMUAN LAL permanently.

NAME CHANGE
I, DAYANAND SUBHASH BABAR S/O SUBHASH BABAR R/O HNO-126, MADANGIR VILLAGE, SOUTH DELHI, DELHI-110062 have changed my son name from VISHWAJEET DAYANAND BABAR to VISHWAJEET BABAR. for all future purposes.

कौमी पत्रिका
संपादक-गुरचरन सिंह बब्बर
स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक, गुरचरन सिंह बब्बर ने कौमी पत्रिका प्रिंटिंग प्रेस, सेक्टर ए-4/ए-144 इंडस्ट्रीयल एरिया ट्रोनिका सिटी लोनी (गाजियाबाद), उत्तर प्रदेश से छापकर प्रकाशित किया।
Corporate Office:
5, Bahadurshah Zafar Marg
ITO, New Delhi-110002
फोन : 011-41509689, 23315814
मोबाइल नंबर : 9312262300
E - mail address :
qpatrika@gmail.com
Website: www.qaumipatrika.in
R.N.I. No.
UP-HIN/2007/21472
Legal Advisors:
Advocate Mohd. Sajid
Advocate Dr. A.P.Singh
Advocate Manish Sharma
Advocate Pooja Bhaskar Sharma

गुरुग्राम में यमुनानगर के राजकुमार को मिला मुख्यमंत्री श्रम रत्न पुरस्कार

एजेंसी

गुरुग्राम। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने गुरूग्राम में आयोजित श्रमिक सम्मान एवं जागरूकता समारोह में श्रम विभाग के माध्यम से मुख्यमंत्री श्रम पुरस्कारों से श्रमिकों को सम्मानित किया। साथ ही श्रमिकों के हित में उठाए जा रहे सराहनीय कदमों में सहभागी बने रहे औद्योगिक इकाइयों के प्रतिनिधियों को भी प्रोत्साहित किया गया।मुख्यमंत्री ने सम्मान समारोह में मुख्यमंत्री श्रम रत्न पुरस्कार के तहत दो लाख रूपए की राशि यमुनानगर जिला के गांव आरियावालां निवासी राजकुमार को, हरियाणा श्रम भूषण पुरस्कार के तहत एक-एक लाख रूपए की राशि यमुनानगर शहर निवासी पूजा वर्मा व यमुनानगर जिला के गांव गढ़ी बंजारा निवासी जसविंदर कुमार को प्रदान की। हरियाणा श्रम वीरांगना पुरस्कार के तहत 51 हजार रूपए की राशि क्रमशः यमुनानगर निवासी चंद्र कांता को, हरियाणा श्रम वीर पुरस्कार के तहत 51-51 हजार रूपए की राशि पानीपत जिला के समालखा निवासी रवित दुहन, गोरखपुर कोहली निवासी धर्मेन्द्र श्रीवास्तव, साउथ दिल्ली जैतपुर निवासी विजय कुमार सिंह, छत्तीसगढ़ के गांव दुंद्रा कटरी निवासी जोगेश्वर प्रसाद साहू, कुरूक्षेत्र निवासी अवतार सिंह, कुरूक्षेत्र निवासी गुरजीत सिंह, हिसार निवासी कर्मबीर, हिसार निवासी कपिल सैनी, पानीपत निवासी सागर, सोनीपत निवासी सुमित, पानीपत निवासी नरेश चन्द्र, रोहतक निवासी चिराग, झज्जर जिला के गांव झांसवा निवासी अमित कुमार, रेवाड़ी जिला के गांव लिलोढ़ निवासी जय प्रकाश, झज्जर जिला के गांव जमालपुर निवासी कुलदीप व अंबाला निवासी संदीप कुमार को प्रदान करते हुए सम्मानित किया।

सोनीपत में 78वें निरंकारी संत समागम की तैयारियां शुरू

सोनीपत। विविधताओं से भरे इस संसार में जहां मानवता अनेक रूपों, भाषाओं, संस्कृतियों, जातियों और धर्मों में बंटी हुई प्रतीत होती है, वहीं एक शाश्वत सत्य हमें एक सूत्र में जोड़ता है हम सभी एक ही परमात्मा की संतान हैं। वही परम सत्ता समय-समय पर अनेक रूपों में अवतरित होकर प्रेम, करुणा और समानता का संदेश देती है। सोनीपत हल्दाना बोर्डर पर स्थित मैदानों में आयोजित होने वाले 78वां निरंकारी संत समागम की सेवा आरंभ अवसर पर सतगुरु माता सुदीक्षा महाराज ने भक्तों को संबोधित करते हुए कहा कि समागम सेवा का अवसर आत्मिक आनंद का क्षण है। प्रत्येक व्यक्ति में परमात्मा का अंश देखना, अहंकार त्यागकर सबका सम्मान करना ही सच्ची सेवा है। निरंकार का सुमिरण करते हुए हमे इसी शक्ति से जुड़े रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि समागम केवल एकत्रित होने का नाम नहीं, बल्कि आत्ममंथन का अवसर है। हमें अपने भीतर झांककर देखना चाहिए कि जीवन किस दिशा में अग्रसर है। परमात्मा बाहर ही नहीं, भीतर भी विद्यमान है। इसलिए मन में किसी प्रकार की दीवार खड़ी न करें, बल्कि अपनी कमियों का सुधार करें। लगभग 600 एकड़ में फैला यह स्थल सेवा, श्रद्धा और मानवता का प्रतीक है। यहां लाखों भक्तों के आवास, भोजन, स्वास्थ्य और सुरक्षा की व्यवस्थाएँ निःस्वार्थ भाव से संचालित हैं।

राष्ट्र के विकास की आत्मा है श्रमिक वर्ग : डा. कृष्ण मिड्ढा

जींद। हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डा. कृष्ण मिड्ढा ने कहा कि राष्ट्र के विकास की आत्मा श्रमिक वर्ग है। श्रमिक समाज की वह इकाई हैं जो बिना किसी अपेक्षा के अपने परिश्रम, निष्ठा और पसीने से राष्ट्र की नींव को मजबूती प्रदान करते हैं। उनके श्रम से सभ्यता, संस्कृति, अर्थव्यवस्था और आत्मनिर्भरता का निर्माण होता है।हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डा. कृष्ण मिड्ढा हरियाणा भवन एवं अन्य सनिर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड द्वारा डीआरडीए हॉल में जिला स्तरीय श्रमिक सम्मान एवं जागरूकता समारोह संबोधित कर रहे थे। इस कार्यक्रम में गुरूग्राम में आयोजित मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के प्रदेश कार्यक्रम का सीधा प्रसारण भी दिखाया गया। उन्होंने कहा कि हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी का नेतृत्व एक नवीन सोच, जनपक्षीय शासन और समावेशी विकास की दृष्टि को सार्थक करता है। सरकार श्रमिकों को केवल योजनाओं का लाभार्थी नही बल्कि सहभागी नागरिक के रूप में देखती है। एक ऐसा नागरिक जो राज्य के निर्माण में सहभागी है और जिसे राज्य भी पूर्ण सम्मान प्रदान करता है।

बहादुरगढ़ में आग की भेंट चढ़ा जनरल स्टोर, लाखों का नुकसान

झज्जर। बहादुरगढ़ के मेन बाजार सब्जी मंडी के पास एक जनरल स्टोर में भीषण आग लग गई। आग के चलते दुकान के अंदर रखा लाखों का सामान स्वाह हो गया। तिमंजिला दुकान के ऊपरी हिस्से में सो रहे बुजुर्ग दुकानदार को जब आग लगने की वजह से उठे धुएं की गंध महसूस हुई तो उसने अपने भाई को फोन कर घटना के बारे बताया। लोगों की मदद से किसी तरह से बुजुर्ग दुकानदार को छत से कूदाकर सुरक्षित तरीके से बाहर निकाला। अनुमान लगाया जा रहा है कि आग बिजली के शार्ट सर्किट से लगी। इसकी वजह का पता तो जांच के बाद ही चल सकेगा। दमकल कर्मियों ने घंटों की कड़ी मशक्कत से छह गाडियों के सहारे आग पर पूरी तरह से काबू पाया।

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की मौजूदगी में सीएंडी वेस्ट मैनेजमेंट के लिए होंडा कंपनी के साथ हुआ एमओयू

एजेंसी

चंडीगढ़। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने गुरुग्राम में जापान की प्रमुख कंपनियों के साथ विशेष बैठक करते हुए हरियाणा में अधिकाधिक निवेश का आह्वान किया। इस दौरान सीएंडडी वेस्ट मैनेजमेंट के लिए होंडा कंपनी के साथ एमओयू भी किया गया, जिसके तहत प्लांट की स्थापना के लिए जमीन व कूड़ा सरकार उपलब्ध कराएगी जबकि होंडा कंपनी कूड़े से टायल बनायेगी।मानेसर में पानी की बेहतरीन सुविधा पर चर्चा करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि इसके लिए डीपीआर तैयार है और अति शीघ्र टेंडर कराकर काम की शुरुआत कर दी जाएगी। उन्होंने बताया कि मूनक नहर से पाइप लाइन के माध्यम से मानसेर में पानी की उपलब्धता सुनिश्चित की जाएगी जिसके लिए करीब तीन हजार करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। उन्होंने कहा कि आने वाले 25-30 वर्षों के दृष्टिगत आबादी बढ़ने की संभावना के दृष्टिगत यह व्यवस्था की जा रही है, जिससे पानी की कोई समस्या नहीं रहेगी। उन्होंने औद्योगिक इकाइयों के रसायनयुक्त पानी के भी उचित निस्तारण पर बल दिया, जिसके लिए उन्होंने एडवांस्ड तकनीकों को अपनाने पर बल दिया। औद्योगिक इकाइयों को अपने छोड़े गये पानी को पुनः उपयोग में लाना चाहिए। इसके लिए एचएसआईआईडीसी के माध्यम से योजना तैयार की गई है। पहले चरण में करीब 78 करोड़ की लागत से मानेसर में यह व्यवस्था की जाएगी, जिससे औद्योगिक इकाइयां पानी का पुनः उपयोग कर सकेंगी। मुख्यमंत्री ने सीएसआर के माध्यम से उपयोगी कार्यों को गति देने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि सीएसआर का पैसा उपायुक्त के माध्यम से खर्च किया जाना चाहिए ताकि उस पैसे का बेहतरीन उपयोग हो सके। सीएसआर का अधिकाधिक लाभ आमजन को मिलना चाहिए। इसके लिए अस्पतालों व उच्च शिक्षण संस्थानों में भाषा कोर्स आदि शुरू किये जा सकते हैं। हरियाणा में प्रत्येक दस किलोमीटर की अवधि में मॉडल संस्कृति विद्यालय स्थापित किये जा रहे हैं। इस दिशा में सीएसआर के तहत अच्छे कार्य किये जा सकते हैं।मुख्यमंत्री ने सीएसआर के तहत औद्योगिक इकाइयों का आह्वान किया कि वे सड़कों को गोद लेकर उनका सौंदर्यीकरण करवाएं। मुख्यमंत्री ने कहा कि एडवांस तकनीक की फायर ब्रिगेड की व्यवस्था करवाई जा रही है।

झज्जर में बाजरे की खरीद शुरू न होने से किसान परेशान

एजेंसी

झज्जर। अनाज मंडी झज्जर में बाजरे की सरकारी खरीद अभी तक प्रारंभ नहीं हो सकी है, जिससे किसान वर्ग भारी असमंजस और आर्थिक संकट से जूझ रहा है। फसल तैयार है, मंडियों में पहुंच चुकी है, टोकन भी जारी कर दिए गए हैं, परंतु खरीद की प्रक्रिया ठप पड़ी हुई है। यहीं हाल झज्जर की अनाज मंडी का भी है। प्राकृतिक आपदाओं से पहले ही त्रस्त किसानों को अब प्रशासनिक लापरवाही की दोहरी मार झेलनी पड़ रही है। किसान मंडी में रोजाना आ रहे हैं, परंतु सरकारी खरीद आरंभ न होने से उन्हें अपने बाजरे की बिक्री के लिए भटकना पड़ रहा है। झज्जर अनाज मंडी में अपनी बाजरे की फसल लेकर आए किसानों को कई तरह की शिकायतें हैं। उनका कहना था कि वह पिछले एक पखवाड़े से अपनी फसल लेकर मंडी में आए थे, लेकिन टोकन कटने के बावजूद भी खरीद उनकी फसल की नहीं हो पाई। किसानों का कहना है कि उन्हें खरीद के लिए ऑनलाइन टोकन जारी कर दिए गए थे परंतु उसके बावजूद न तो कोई तौल हो रही है, और न ही भुगतान की प्रक्रिया चालू हुई है। इससे किसानों को भारी मानसिक और आर्थिक क्षति उठानी पड़ रही है। कई किसानों ने सरकार से मांग की है कि यदि खरीद में और विलंब होता है तो उन्हें भावान्तर भरपाई योजना के तहत उचित मुआवजा दिया जाए और मौजूदा दरों में वृद्धि की जाए जिससे हुए नुकसान की भरपाई हो सके। खरीद न होने की वजह से किसान न तो फसल बेच पा रहे हैं न ही खेतों में काम करने वाले मजदूरों को उनकी मजदूरी दे पा रहे हैं। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियां बुरी तरह प्रभावित हो रही हैं।

बीरेंद्र सिंह राजनीतिक ज्योतिषी होते तो अपना भविष्य देखते : सुभाष बराला

एजेंसी

जींद। भाजपा राज्यसभा सदस्य सुभाष बराला ने कहा कि यदि बीरेंद्र सिंह ज्योतिषी होते तो पहले अपना और अपने परिवार का राजनीतिक भविष्य देखते। राहुल गांधी और विपक्ष के लिए नाच न जाने आंगन टेढ़ा वाली कहावत का इस्तेमाल किया, यह कहते हुए कि लगातार चुनाव हारने के बाद वे वोटिंग मशीन और अब वोट चोरी को दोषी ठहरा रहे हैं। भाजपा को वोट चोरी की आवश्यकता नहीं है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लोगों के दिलों में बसते हैं और उनकी सेवा करके उनके दिल जीतते हैं। भाजपा राज्यसभा सदस्य सुभाष बराला, विधायक देवेंद्र चतरभुज अत्री उचाना की ब्राह्मण धर्मशाला में शहीद भगत सिंह जयंती पर आयोजित रक्तदान शिविर और रोजगार मेले में शामिल हुए। शिवानिया पब्लिक स्कूल में रोजगार मेले में 500 से अधिक युवा रोजगार के लिए पहुंचे। रक्तदान शिविर में 121 यूनिट रक्तदान हुआ। बराला ने कांग्रेस पर भी आपदा के बाद मुआवजा न देने का आरोप लगाते हुए कहा कि कांग्रेस राज में केवल अपने चहेतों को मुआवजा दिया जाता था। जबकि भाजपा एकसमान मुआवजा देने का काम करती है। इस मौके पर राज्यसभा सदस्य सुभाष बराला, विधायक देवेंद्र चतरभुज अत्री ने देवा सिंह कॉलोनी, बारूराम दुर्जनपुर के निवास पर कार्यकर्ताओं को स्वदेशी अपनाओ की शपथ भी दिलाई। उन्होंने शहीद भगत सिंह की जयंती पर युवाओं द्वारा किए गए रक्तदान की सराहना की और एक पुस्तक का विमोचन भी किया।

नई जीएसटी दरों का गरीब एवं मध्यम वर्ग को होगा सबसे ज्यादा लाभ : कृष्ण लाल पंवार

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा के विकास एवं पंचायत मंत्री कृष्ण लाल पंवार ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में जीएसटी की दरों को घटाकर ऐतिहासिक फैसला लिया गया है। इसका सबसे ज्यादा फायदा देश के गरीब एवं मध्यम वर्ग को होगा। इस बदलाव से एक ओर जहां रोजमर्रा की वस्तुओं की कीमतों में कमी हुई है वहीं दूसरी ओर छोटे उपकरण व वाहनों की कीमत भी कम हुई है। जिन लोगों ने वाहन बुक किए थे, अब उन्हें वही वाहन कम कीमत पर मिल रहे हैं। इसके लिए लोगों ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का आभार भी व्यक्त किया है।

उन्होंने पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि केंद्र सरकार की ओर से नई जीएसटी दरों को लागू कर दिया गया है। इसके साथ ही लोगों को घटी हुई कीमतों का लाभ भी मिलना शुरू हो गया है। उन्होंने बताया कि नई व्यवस्था के तहत जीएसटी स्लैब्स को सरल करते हुए अब मुख्य रूप से कुछ सामान को 0 प्रतिशत श्रेणी में भी लाया गया है, यानी वे पूरी तरह से कर मुक्त होंगी। इसके अलावा मुख्यत दो जीएसटी स्लैब्स 5 प्रतिशत व 18 प्रतिशत बनाए गए हैं। पहले लागू 12 प्रतिशत व 28 प्रतिशत स्लैब को पूर्णत समाप्त कर दिया गया है। उन्होंने कहा कि दैनिक उपयोग की कई वस्तुओं और सेवाओं को पूरी तरह जीएसटी से मुक्त कर दिया गया है। इनमें दूध, रोटी-पराठा जैसे भारतीय ब्रेड्स, व्यक्तिगत जीवन व स्वास्थ्य बीमा पॉलिसी, प्राथमिक स्टेशनरी, नोट्स बुक, मैप, चार्ट, ऑक्सीजन व जीवन रक्षक दवाएं शामिल हैं। इन वस्तुओं पर अब उपभोक्ताओं को कोई कर नहीं देना होगा। इसके अलावा, साबुन, शैम्पू, टूथपेस्ट, सामान्य कपड़े और छोटे घरेलू इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों, ट्रैक्टर व ट्रैक्टर टायर व पार्ट्स को 5 प्रतिशत जीएसटी श्रेणी में रखा गया है। इसी प्रकार एयर कंडीशर, टेलीविजन, एलईडी, मॉनिटर, प्रोजेक्टर, वांशिग मशीन, थ्री व्हीलर, मोटर साइकिल, पेट्रोल, सीएनजी से संचालित 1200 सीसी की कार व डीजल से संचालित 1500 सीसी की कार आदि उपकरण 18 प्रतिशत जीएसटी स्लैब्स में लाए गए हैं।

भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में श्रमिकों की रहेगी अहम भूमिका: नायब सिंह सैनी

ज्योति दर्पण

सोनीपत। गुरुग्राम, 28 सितंबर (हि.स.)। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि हरियाणा को विकास के मार्ग पर अग्रणी बनाने में श्रमिकों का योगदान अतुलनीय है। उनके बल पर ही प्रदेश आज देश में सबसे तेजी से प्रगति करने वाला राज्य बन गया है। भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में भी श्रमिकों की अहम भूमिका रहेगी। सीएम गुरुग्राम विश्वविद्यालय में राज्य स्तरीय श्रमिक सम्मान एवं जागरूकता समारोह में बोल रहे थे। इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री राव इंद्रजीत सिंह और उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री राव नरबीर सिंह की गरिमामयी उपस्थिति रही। समारोह की अध्यक्षता हरियाणा के श्रम मंत्री अनिल विज ने की। कार्यक्रम का हरियाणा के सभी जिलों में लाइव प्रसारण भी किया गया। इस मौके पर मुख्यमंत्री व अन्य अतिथियों ने स्वास्थ्य जांच शिविर का भी अवलोकन किया। सीएम नायब सिंह सैनी ने श्रमिकों से सीधा संवाद करते हुए कहा कि हरियाणवी संस्कृति में श्रमिकों को हमेशा सम्मान मिला है। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कथन का उल्लेख करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री ने भी कहा है कि भारत के श्रमिकों की शक्ति अमृतकाल में भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में सबसे बड़ी भूमिका निभाएगी। हरियाणा की प्रगति की हर ईंट श्रमिकों की मेहनत और समर्पण से जुड़ी है। उनकी गरिमा के माध्यम से ही सामाजिक न्याय और राष्ट्र निर्माण की दिशा में कदम बढ़ाए जा रहे हैं। केंद्रीय राज्य मंत्री राव इंद्रजीत सिंह ने समारोह में कहा कि हरियाणा की प्रगति और विकास में सबसे बड़ा योगदान उसके मेहनतकश किसान, मजदूर और श्रमिकों का है। उन्होंने विशेष रूप से गुरुग्राम का जिक्र करते हुए कहा कि पिछले 20 वर्षों में यह शहर छोटे म्युनिसिपल क्षेत्र से विकसित होकर आधुनिक और वैश्विक मानकों के अनुरूप शहर बन गया है। श्रमिक वर्ग के बिना प्रदेश की औद्योगिक और सेवा क्षेत्र की उपलब्धियां संभव नहीं होती। यह श्रमिक ही हैं, जो दूर-दराज से आकर हरियाणा को चार चांद लगा रहे हैं और उद्योगों के विकास में अहम भूमिका निभा रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश की समृद्धि में श्रमिकों का योगदान केवल आर्थिक नहीं बल्कि सामाजिक और मानवीय दृष्टि से भी अतुलनीय है। समारोह की अध्यक्षता कर रहे श्रम मंत्री अनिल विज ने कहा कि आज का दिन हरियाणा की वास्तविक प्रगति और विकास का प्रतीक है। पूरे प्रदेश में कर्मचारियों और उद्यमियों का सम्मान किया जा रहा है।

सरकार किसानों को पानी से वंचित कर रही है : कुमारी सैलजा

एजेंसी

सिरसा। स्वयं को किसान हितेषी होने का दावा करने वाली प्रदेश की भाजपा सरकार किसानों की बात सुनने के बजाए उनके जख्मों पर नमक छिड़कने का कोई मौका नहीं छोड़ रही है। कही किसान खाद को लेकर भटक रहा है तो कहीं जलभराव से फसलें खराब हो रही है तो कही पर सेम समस्या के चलते भूमि बंजर ही रही है। हरियाणा के अंमित छोर पर बसे सिरसा जिला के डबवाली क्षेत्र के अनेक गांव आज भी टेल तक पानी न पहुंचने को लेकर परेशान है, धरनारत है पर सरकार कोई सुनवाई नहीं कर रही है। किसानों की समस्याओं के समाधान के लिए विभागीय अधिकारियों को मौके पर भेजकर सीधी बातचीत की जाए। कांग्रेस किसानों के साथ खड़ी है। अगर सरकार ने जल्द ही किसानों की जायज मांगों को पूरा नहीं किया तो आंदोलन और तेज किया जाएगा। सांसद ने कहा है कि डबवाली क्षेत्र के किसानों ने 10 प्रमुख मांगें रखीं। इनमें नहर के टेल क्षेत्र में सिंचाई और पेयजल की स्थायी व्यवस्था, पानी मापने के पैरामीटर और एफएसडी सिस्टम की बहाली शामिल हैं। सैलजा ने प्रदेश सरकार से मांग की कि नहरों की तुरंत सफाई और मरम्मत करवाई जाए, भाखड़ा नहर से लेकर अंतिम छोर तक पानी की सप्लाई सुनिश्चित की जाए, किसानों की समस्याओं के समाधान के लिए विभागीय अधिकारियों को मौके पर भेजकर सीधी बातचीत की जाए और प्रभावित किसानों को हुए नुकसान की भरपाई के लिए विशेष मुआवजा पैकेज घोषित किया जाए। किसानों का आरोप है कि विभागीय कर्मचारियों ने पीछे वाटर बॉक्स पर मोगे बंद कर पानी रोक लिया। अधिकारियों की मौजूदगी में चार हिस्से पानी मिला। लेकिन उनके जाते ही पानी घटकर आधा रह गया। कुमारी सैलजा ने कहा कि कांग्रेस पार्टी किसानों की इस लड़ाई में उनके साथ खड़ी है।

हरियाणा का एस.जी.एस.टी. संग्रह 18,910 करोड़ रुपये से बढ़कर हुआ 39,743 करोड़ : नायब सिंह सैनी

एजेंसी

गुरुग्राम। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि हरियाणा में कर आधार का विस्तार हुआ है। जी.एस.टी. संग्रह में वृद्धि हुई है। हरियाणा का नेट एस.जी.एस.टी. संग्रह 2018-19 के 18,910 करोड़ रुपये से बढ़कर 2024-25 में 39,743 करोड़ रुपये हो गया। यह 110 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है। मुख्यमंत्री गुरुग्राम में आबकारी एवं कराधान विभाग हरियाणा द्वारा आयोजित जीएसटी बचत उत्सव कार्यक्रम में उद्यमियों के साथ सीधा संवाद कर रहे थे।उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम बढ़ाते हुए गत 22 सितंबर को जीएसटी सुधार लागू किए हैं। जीएसटी की इस नई प्रणाली से हरियाणा की जनता को लगभग चार हजार करोड़ रुपये का लाभ होगा। ये सुधार आत्मनिर्भर भारत-आत्मनिर्भर हरियाणा बनाने में मील का पत्थर साबित होंगे। मुख्यमंत्री ने उपस्थित सभी उद्यमियों को नवरात्रों के पावन पर्व की शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि जी.एस.टी. में सुधार करने की घोषणा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस वर्ष स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर की थी और मात्र एक महीने के भीतर वह घोषणा पूरी हो चुकी है। उन्होंने कहा कि दशकों तक देश की जनता अलग-अलग टैक्स के जाल में उलझी हुई थी। हमारे देश में दर्जनों टैक्स थे। इनसे देशवासियों और कंपनियों को कई परेशानियां होती थीं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व में देश दर्जनों करों के जाल से मुक्त हुआ। एक राष्ट्र -एक कर का सपना साकार हुआ।मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वदेशी का आह्वान किया है, आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना की है। अभी अपनी जापान यात्रा के दौरान मेक इन इंडिया फॉर द वर्ल्ड का विजन रखा है। उसे साकार करने में भी ये सुधार महत्वपूर्ण साबित होंगे। इनसे रोजमर्रा इस्तेमाल के उपभोक्ता सामान सस्ते हुए हैं। इसलिए मध्यम वर्ग की बचत बढ़ी है और आगामी त्योहारों के सीजन में खरीदारी से बाजार को बड़ा लाभ होगा। एक 5 प्रतिशत और दूसरी 18 प्रतिशत। इसके अलावा, अहितकारी वस्तुओं के लिए विशेष दर 40 प्रतिशत रखी गई है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2024-25 में, हरियाणा कुल सकल जी.एस.टी. संग्रह में देश के प्रमुख राज्यों में 5वें स्थान पर रहा। उन्होंने कहा कि हरियाणा कृषि प्रधान राज्य है। हरियाणा के उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री राव नरबीर सिंह ने जीएसटी बचत उत्सव-2025 सम्मेलन में कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा जीएसटी स्लैब में किया गया सुधार आम नागरिकों के जीवन में ऐतिहासिक बदलाव लाने वाला है। कैबिनेट मंत्री ने कहा कि जीएसटी सुधार से देश की अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिलेगी और व्यापारिक गतिविधियों में तेजी आएगी। उन्होंने कहा कि नए जीएसटी दरों को लागू करने में व्यापारियों को किसी प्रकार का नुकसान नहीं होगा। उनकी रिकवरी पूरी तरह सुनिश्चित है।

वर्ल्ड चैंपियन मैरी कॉम के घर में चोरी, सीसीटीवी फुटेज से हुआ खुलासा

एजेंसी

फरीदाबाद। भारत की स्टार मुक्केबाज और छह बार की वर्ल्ड चैंपियन मैरी कॉम के फरीदाबाद स्थित घर पर चोरी का मामला सामने आया है। चोरी का मामला सामने आने के बाद से ही क्षेत्र में हडकंप मचा हुआ है। मैरी कॉम फरीदाबाद के सेक्टर 46 के मकान नंबर 300 में पिछले 3 साल से रह रही हैं। पड़ोसियों के मुताबिक पिछले दो सप्ताह से वह घर से बाहर हैं। जानकारी के मुताबिक वह मेघालय एक इवेंट में भाग लेने के लिए गई हुई है । चोरी की घटना 24 तारीख की सुबह हुई थी। पड़ोसियों को इसका पता तब चला, जब उन्होंने 26 तारीख को सीसीटीवी फुटेज देखी। सीसीटीवी फुटेज में साफ नजर आ रहा है कि 6-7 लोग मैरी कॉम के मकान में घुसे और वहां से सामान चोरी कर फरार हो गए । इसके बाद पड़ोसियों ने पुलिस और मैरी कॉम को इसकी सूचना दी ।

पाश्चात्य संस्कृति के स्थान पर सनातन संस्कृति को अपनाए युवा पीढ़ी : गौरव गौतम

एजेंसी

पलवल। हरियाणा सरकार में खेल, युवा अधिकारिता एवं उद्यमिता तथा कानून राज्य मंत्री गौरव गौतम ने कहा कि वर्तमान समय में सनातन परंपराओं का निर्वहन और सनातन संस्कृति का प्रचार-प्रसार आवश्यक है। युवा पीढ़ी को पाश्चात्य संस्कृति की जगह सनातन संस्कृति अपनानी चाहिए। नशे से दूर रहकर विश्व शांति की कामना और देश-प्रदेश की प्रगति में योगदान देना युवाओं का संकल्प होना चाहिए।

वे पलवल स्थित नेताजी सुभाष चंद्र बोस इंडोर स्टेडियम में स्वामी विवेकानंद संस्था द्वारा आयोजित सनातन संस्कृति पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विकसित और आत्मनिर्भर भारत का जो लक्ष्य रखा है, उसमें नागरिक कर्तव्यों की बड़ी भूमिका है। देश और सनातन संस्कृति की रक्षा के लिए हमें अपने अधिकारों से ज्यादा कर्तव्यों पर चिंतन करना होगा। गौतम ने कहा कि युवाओं को गीता, रामायण, वेद और पुराण का ज्ञान देना चाहिए। सनातन संस्कृति के वैज्ञानिक और तार्किक आधारों को समझाना होगा, ताकि युवा न केवल इसकी महानता जानें बल्कि किसी के बहकावे में भी न आएं। हर घर में सनातन शिक्षा दी जाए तभी भारत फिर से विश्व गुरु बन सकेगा। इस अवसर पर युवाओं ने सामूहिक रूप से हनुमान चालीसा का पाठ कर वातावरण को भक्तिमय बना दिया। कार्यक्रम में संस्कृति को बढ़ावा देने वाले युवाओं और विद्यार्थियों को सम्मानित भी किया गया। राज्य मंत्री ने युवाओं से अनुशासन, मेहनत और समर्पण के साथ खेल को जीवन का हिस्सा बनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में हरियाणा खेलों का पावर हाउस बन चुका है। उन्होंने युवाओं को नशे से दूर रहने की प्रेरणा दी और कहा कि नशा व्यक्ति ही नहीं, पूरे समाज को खोखला करता है। इस अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष विपिन बैंसला, मार्केट कमेटी अध्यक्ष पंकज विरमानी, संस्था अध्यक्ष सतवीर उर्फ सोनू, समाजसेवी जितेश कौशिक सहित अनेक गणमान्य नागरिक व युवा उपस्थित रहे।

40 देशों में गूंजेगी गीता वाणी, सात देशों के शिल्पियों की कला से सजेगा ब्रह्मसरोवर

एजेंसी

चंडीगढ़। भगवान श्रीकृष्ण का गीता शाश्वत संदेश की गूंज 40 देशों में सुनाई देगी। विदेश मंत्रालय की ओर से अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव का सीधा प्रसारण किया जाएगा। वहीं, महोत्सव में 15 देशों के 25 से ज्यादा स्कॉलर पहुंचेंगी, जिनका गीता से सीधा जुड़ाव है और 20 से ज्यादा देशों के राजदूत भी महोत्सव की शोभा बढ़ाएंगे।10वें अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव इस खास होगा, क्योंकि महोत्सव की अवधि 21 दिन रहेगी। महोत्सव की तैयारियों को लेकर कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड के अध्यक्ष एवं राज्यपाल प्रोफेसर अशीम कुमार घोष की अध्यक्षता में केडीबी की बैठक आयोजित हुई। अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव आगाज 15 नवंबर को शिल्प मेले के साथ होगा जोकि 5 दिसंबर तक चलेगा। महोत्सव में ब्रह्मसरोवर पर अनोखा नजारा नजर आएगा, सात देशों के शिल्पियों की कला से पुरुषोत्तमपुरा बाग और ब्रह्मसरोवर को सजाया जाएगा। गीता महोत्सव 21 दिन चलेगा और महोत्सव के मुख्य कार्यक्रम आठ दिन चलेंगे। इस महोत्सव से पहले ही कई कार्यक्रमों का आगाज हो जाएगा। इसमें 4 से 14 नवंबर तक ऑनलाइन गीता क्विज, 15 नवंबर को गीता रन का आयोजन होगा। 15 नवंबर से 5 दिसंबर तक शिल्प और सरस मेला चलेगा तथा रोजाना सायं के समय पुरुषोत्तमपुरा बाग में भजन संध्या और महाआरती का आयोजन होगा। गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद महाराज ने कहा कि हरियाणा सरकार द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव के माध्यम से अब देशों के बीच आध्यात्मिक और सांस्कृतिक संबंधों को भी नई शक्ति और दिशा मिल रही है। 48 कोस तीर्थ निगरानी कमेटी के चेयरमैन मदन मोहन छाबड़ा के अनुसार सरकार का विजन है कि कुरुक्षेत्र की पावन धरा स्वच्छ और सुंदर बने, इसको लेकर गीता महोत्सव के दौरान स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव इस बार नए रंग में नजर आएगा। महोत्सव का जहां 40 देशों में सीधा प्रसारण होगा, वहीं अंतरराष्ट्रीय गीता संगोष्ठी में 25 से ज्यादा देशों के स्कॉलर हिस्सा लेंगे और 20 से ज्यादा देशों के राजदूत महोत्सव की शोभा बढ़ाएंगे। इस महाआयोजन को लेकर तैयारियां शुरू हो चुकी हैं।

भारतीय परिवारों की संपत्ति 2024 बीते 8 वर्षों में सबसे तेजी से बढ़ी: रिपोर्ट

पिछले दो दशकों में भारत की प्रति व्यक्ति वित्तीय संपत्ति पांच गुना बढ़ी

नई दिल्ली

एलियांज ग्लोबल वेल्थ रिपोर्ट 2025 के अनुसार वर्ष 2024 में भारतीय परिवारों की वित्तीय संपत्ति में 14.5 फीसदी की तेज़ वृद्धि दर्ज की गई, जो पिछले आठ वर्षों में सबसे अधिक है। यह उभरते हुए मध्यम वर्ग की आर्थिक शक्ति और बढ़ती निवेश प्रवृत्ति को दर्शाता है। रिपोर्ट के अनुसार पिछले दो दशकों में भारत की प्रति व्यक्ति वित्तीय संपत्ति पांच गुना बढ़ी है। इस दौरान भारत ने अन्य सभी उभरती अर्थव्यवस्थाओं से बेहतर प्रदर्शन किया। वित्तीय संपत्तियों में सबसे ज्यादा वृद्धि प्रतिभूतियों (28.7) में हुई, इसके बाद बीमा और पेंशन (19.7 फीसदी) और बैंक डिपॉजिट (8.7 फीसदी) का स्थान रहा। हालांकि, भारतीय परिवारों के पोर्टफोलियो में अब भी 54 फीसदी हिस्सा बैंक डिपॉजिट का है, जो देश में मजबूत बचत संस्कृति को दर्शाता है। मुद्रास्फीति समायोजित वृद्धि दर 9.4 फीसदी रही, जिससे महामारी के बाद भारत की क्रय शक्ति 40 फीसदी बढ़कर महामारी-पूर्व स्तर से ऊपर चली गई, जबकि पश्चिमी यूरोप में यह अब भी 2.4 फीसदी नीचे है। 2024 में प्रति भारतीय नेट फाइनेंशियल एसेट्स 2,818 डॉलर पर पहुंच गईं, जो पिछले साल की तुलना में 15.6 फीसदी अधिक हैं। हालांकि, देनदारी भी बढ़ी है, 12.1 फीसदी की दर से, जिससे कर्ज जीडीपी के 41

फीसदी तक पहुंच गया है। वैश्विक स्तर पर अमेरिका ने अकेले 2024 में वैश्विक वित्तीय संपत्ति वृद्धि का 50 फीसदी योगदान दिया, जबकि चीन और पश्चिमी यूरोप क्रमशः 20 और 12 फीसदी के साथ पीछे रहे।

भारत का दूध उत्पादन 240 मिलियन टन पहुंचा, दुनिया में नंबर वन पर

देश में 303.76 मिलियन गोजातीय पशु जिनमें गाय, भैंस, मिथुन और याक

नई दिल्ली

भारत वैश्विक दूध उत्पादन में शीर्ष स्थान पर है और वित्त वर्ष 2023-24 में उत्पादन बढ़कर 239.30 मिलियन टन हो गया। आंकड़ों के मुताबिक उत्पादन और संग्रहण में महिलाओं की अहम भूमिका होती है, जो डेयरी को समावेशी विकास का एक सशक्त वाहक बनाता है। पिछले एक दशक में भारत के डेयरी क्षेत्र ने मजबूत वृद्धि दर्ज की गई है और उत्पादन 63.56 फीसदी बढ़ा है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक दूध उत्पादन 2014-15 में 146.30 मिलियन टन था। इसका मतलब है कि देश ने पिछले 10 सालों में 5.7 फीसदी की प्रभावशाली वार्षिक वृद्धि दर बनाए रखी है। खाद्य एवं कृषि संगठन के आंकड़े इस बात की पुष्टि करते हैं कि भारत दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक बना हुआ है, जो संयुक्त राज्य अमेरिका, पाकिस्तान, चीन और ब्राजील जैसे देशों से कहीं आगे है। पिछले एक दशक में भारत में हरेक व्यक्ति के लिए दूध की उपलब्धता में तेजी से वृद्धि हुई है। प्रति व्यक्ति आपूर्ति में 48 फीसदी की वृद्धि हुई है, जो 2023-24 में 471 ग्राम/व्यक्ति प्रतिदिन से भी ज्यादा हो गई है। यह विश्व औसत करीब 322 ग्राम/व्यक्ति प्रतिदिन से कहीं ज्यादा है। बयान में कहा गया कि देश में 303.76 मिलियन गोजातीय पशु हैं जिनमें गाय, भैंस, मिथुन और याक शामिल हैं। यह डेयरी उत्पादन और कृषि में भार वहन क्षमता दोनों की रीढ़ है। शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में दूध उत्पादन में 74.26 मिलियन की आबादी वाली भेड़ें और 148.88 मिलियन बकरियां भी अहम भूमिका निभाती हैं। 2014 और 2022 के बीच भारत ने गोजातीय पशुओं की उत्पादकता में 27.39 फीसदी की वृद्धि दर्ज की, जो दुनिया में सबसे ज्यादा है। यह वृद्धि वैश्विक औसत वृद्धि 13.97 फीसदी से कहीं ज्यादा है। भारत में सहकारी डेयरी क्षेत्र व्यापक और सुव्यवस्थित है। शामिल हैं। कुल मिलाकर ये करीब 2.35 लाख गांवों को कवर करते हैं और 1.72 करोड़ डेयरी किसान इनके सदस्य हैं।

मोबाइल नंबर पोर्टेबिलिटी की तर्ज पर

अब आप बदल सकते है गैस कंपनी

नई दिल्ली

आने वाले दिनों में मोबाइल नंबर पोर्टेबिलिटी की तर्ज में गैस कंपनी को बदलने की सुविधा मिल सकती है।

उदाहरण के लिए अगर आपका कनेक्शन इंडेन में है और आप उससे संतुष्ट नहीं हैं, तब आप भारत गैस या एचपी गैस में जा सकते हैं, वहां भी बिना किसी नए कनेक्शन के ऐसा कर सकते है। दरअसल पेट्रोलियम और नेचुरल गैस रेगुलेटरी बोर्ड (पीएनजीआरबी) ने इसके लिए नया एलपीजी इंटरऑपरेबिलिटी फ्रेमवर्क तैयार कर उपभोक्ताओं, डीलरों व अन्य स्टेकहोल्डर्स से सुझाव मांगे हैं।

देश में अब तक 32 करोड़ से ज्यादा घरों तक एलपीजी कनेक्शन पहुंच चुका है। इसके बावजूद हर साल करीब 17 लाख शिकायतें गैस एजेंसियों को लेकर दर्ज होती हैं। इसमें सबसे आम परेशानी है रीफिल में देरी और सप्लाई में बाधा की होती है। कई जगह स्थानीय डीलर ऑपरेशन बंद कर देते हैं या हफ्तों तक सिलेंडर नहीं पहुंचता, इससे उपभोक्ताओं को बड़ी परेशानी होती है। अभी तक व्यवस्था यह थी कि उपभोक्ता अपनी गैस कंपनी नहीं बदल सकता था। इंडेन के ग्राहक सिर्फ इंडेन डीलर बदल सकते थे, लेकिन भारत या एचपी गैस में शिफ्ट नहीं हो सकते थे।

यही नियम सबसे बड़ी बाधा बनता था। अब नई व्यवस्था आने पर ग्राहक को ज्यादा विकल्प और बेहतर सेवा मिलेगी।

साल 2013 में यूपीए सरकार ने 24 जिलों में एलपीजी कनेक्शन पोर्टेबिलिटी की पायलट योजना चलाई थी। जनवरी 2014 में बढ़ाकर 480 जिलों तक कर दिया गया।

लेकिन उस समय पोर्टेबिलिटी सिर्फ एक ही कंपनी के अलग-अलग डीलरों के बीच सीमित थी। उपभोक्ता कंपनी नहीं बदल सकता था। इसकारण योजना का असर बहुत सीमित रहा और उपभोक्ता की परेशानी जस की तस बनी रही। लेकिन अब पीएनजीआरबी सीधे कंपनी बदलने की अनुमति देता है।

यानी अगर किसी इलाके में इंडेन की सप्लाई अटक रही है, तब उपभोक्ता भारत या एचपी गैस से सिलेंडर ले सकेगा। यह सुविधा खासतौर पर उन उपभोक्ताओं के लिए राहत भरी होगी, जिन्हें बार-बार डिलीवरी में देरी झेलनी पड़ती है। रेगुलेटर का मानना है।

हुंडई कंपनी की कई नई हाइब्रिड एसयूवी लॉन्च करने की योजना

नईदिल्ली

हुंडई कंपनी आने वाले वर्षों में कई नई हाइब्रिड एसयूवी लॉन्च करने की योजना बना रही है। इन वाहनों में न सिर्फ दमदार इंजन और आकर्षक डिजाइन मिलेगा, बल्कि हाइब्रिड तकनीक के जरिए ज्यादा माइलेज और बेहतर परफॉर्मेंस का अनुभव भी उपभोक्ताओं को मिलेगा। इनमें नेक्स्ट जनरेशन हुंडई क्रेटा, एक बिल्कुल नई तीन-रो एसयूवी और ग्लोबली पॉपुलर पैलिसेड शामिल हैं। सबसे पहले बात करते हैं हुंडई की बेस्ट-सेलिंग एसयूवी क्रेटा की। कंपनी 2027 तक क्रेटा का नया अवतार पेश करेगी। इसे नए प्लेटफॉर्म और नए डिजाइन के साथ लाया जाएगा। इसमें 1.5-लीटर पेट्रोल, डीजल और टर्बो-पेट्रोल इंजन का विकल्प मिलेगा। खास बात यह है कि इसके साथ हाइब्रिड वर्जन भी उतारा जाएगा। इतना ही नहीं, हुंडई अपडेटेड क्रेटा ईवी पर भी काम कर रही है, जिससे ग्राहकों के पास और ज्यादा विकल्प होंगे। दूसरा मॉडल है कोडनेम एनआई1आई, जो एक नई 3-रो एसयूवी होगी। इसे भारतीय बाजार में 2027 तक लॉन्च किया जा सकता है। इसे अल्काजार और ट्यूसॉन के बीच पोजिशन किया जाएगा। रिपोर्ट्स के मुताबिक इस एसयूवी में 1.5-लीटर पेट्रोल इंजन हाइब्रिड सेटअप के साथ उपलब्ध कराया जाएगा। इस मॉडल का प्रोडक्शन हुंडई के नए तालेगांव प्लांट में किया जाएगा, जिससे कंपनी की उत्पादन क्षमता और मजबूत होगी। तीसरा और सबसे प्रीमियम मॉडल होगा हुंडई पैलिसेड, जिसे कंपनी भारतीय बाजार में लाने पर गंभीरता से विचार कर रही है। इसमें 2.5-लीटर टर्बो-पेट्रोल इंजन और इलेक्ट्रिक मोटर का कॉम्बिनेशन मिलेगा, जो 334बीएचपी पावर और 460 एनएम टॉर्क जनरेट करेगा। कंपनी का दावा है कि यह एसयूवी लगभग 14केएमपीएल का माइलेज दे सकती है। इसकी लॉन्चिंग 2028 तक संभव मानी जा रही है।

भारत ग्रीन हाइड्रोजन में बन रहा वैश्विक नेतृत्व

2030 तक 50 लाख टन उत्पादन का लक्ष्य

नई दिल्ली

एसएंडपी ग्लोबल की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत ग्रीन हाइड्रोजन इंडस्ट्री में दुनिया के अग्रणी देशों में से एक बन रहा है। देश में लो-कॉस्ट हाइड्रोजन उत्पादन की क्षमता इसके प्रतिस्पर्धियों के बीच शुरुआती गति बनाए रखने और ऑफटेक समझौतों को सुरक्षित करने पर निर्भर करती है। भारत के पास ग्रीन हाइड्रोजन क्षेत्र के विकास के लिए आवश्यक मजबूत संसाधन और तकनीकी आधार मौजूद है। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 4 जनवरी 2023 को नेशनल ग्रीन हाइड्रोजन मिशन को 19,744 करोड़ रुपये के बजट के साथ मंजूरी दी है। इस मिशन का उद्देश्य भारत को 2030 तक वार्षिक 50 लाख मीट्रिक टन हाइड्रोजन उत्पादन और वैश्विक व्यापार में 10 प्रतिशत हिस्सेदारी हासिल करने वाला वैश्विक केंद्र बनाना है। इसके साथ ही सरकार ने हाइड्रोजन इनोवेशन को बढ़ावा देने के लिए स्टार्टअप्स को 100 करोड़ रुपये का फंड आवंटित किया है, जिसमें प्रति प्रोजेक्ट 5 करोड़ रुपये तक की सहायता दी जाएगी। 26 सितंबर को केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने भारत के पहले हाइड्रोजन राजमार्गों का शुभारंभ किया, जिससे लंबी दूरी के हाइड्रोजन-चालित माल परिवहन को बढ़ावा मिलेगा। इसके तहत राष्ट्रीय राजमार्गों पर हाइड्रोजन ईंधन स्टेशन स्थापित किए जा रहे हैं। भारत की भौगोलिक स्थिति यूरोप, जापान और दक्षिण कोरिया जैसे देशों को हाइड्रोजन निर्यात के लिहाज से लाभदायक है। भारत ग्रीन हाइड्रोजन के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के नए आयाम स्थापित करने की दिशा में अग्रसर है।

सेबी के क्लीन चिट से अडानी ग्रुप के शेयरों में आया जोरदार उछाल

नई दिल्ली सेबी ने 22 सितंबर को स्पष्ट किया कि अडानी पोर्ट्स एंड स्पेशल इकोनॉमिक जोन लिमिटेड और अडानी पावर ने किसी भी नियम का उल्लंघन नहीं किया है। यह फैसला जनवरी 2023 में आई हिन्डनबर्ग रिसर्च की रिपोर्ट के आरोपों को पूरी तरह से खारिज करता है। सेबी की इस क्लीन चिट के बाद निवेशकों का भरोसा मजबूत हुआ और अडानी ग्रुप के शेयरों में तेज उछाल देखने को मिला। अडानी पोर्ट्स का शेयर 4.2 प्रतिशत बढ़कर 1470 रुपये पर पहुंच गया, जबकि अडानी पावर 3.8 प्रतिशत की तेजी के साथ 690 रुपये पर बंद हुआ। अडानी ग्रुप के चेयरमैन गौतम अडानी ने सेबी के फैसले को स्वागतयोग्य बताया। उन्होंने कहा कि हिन्डनबर्ग की रिपोर्ट पूरी तरह झूठी और प्रेरित थी, जिसने निवेशकों को भारी नुकसान पहुंचाया। सेबी की क्लीन चिट से अब निवेशकों का विश्वास वापस आ रहा है और ग्रुप की साख में सुधार हुआ है। मार्केट एक्सपर्ट्स की दृष्टि इस समय अडानी ग्रीन एनर्जी पर है। शुक्रवार को इसका शेयर 1047 रुपये पर बंद हुआ। तकनीकी विश्लेषण के अनुसार, 900 रुपये का स्तर मजबूत सपोर्ट है और हाल ही में 1020 रुपये से ब्रेकआउट के बाद इसमें तेजी की संभावना बनी है।

रिलायंस पावर इंडोनेशिया की कई अनुषंगी कंपनियों की हिस्सेदारी बेचेगी

नई दिल्ली रिलायंस पावर ने कहा कि वह अपनी इंडोनेशिया की कई अनुषंगी कंपनियों की अनुषंगियों की 100 प्रतिशत हिस्सेदारी सिंगापुर की बायोट्रस्टर प्राइवेट लिमिटेड को करीब 1.2 करोड़ डॉलर में बेचने पर विचार कर रही है। इस संबंध में रिलायंस पावर नीदरलैंड बी.वी., रिलायंस नेचुरल रिसोर्सेज (सिंगापुर) प्राइवेट लिमिटेड और बायोट्रस्टर (सिंगापुर) प्राइवेट लिमिटेड के बीच शेयर खरीद समझौते पर हस्ताक्षर किए गए हैं। रिलायंस पावर ने शेयर बाजार को दी सूचना में बताया कि कंपनी पीटी अवनीश कोल रिसोर्सेज, पीटी हेरम्बा कोल रिसोर्सेज, पीटी सुमुखा कोल सर्विसेज, पीटी ब्रायन बिंटांग तिगा एनर्जी और पीटी श्रीविजय बिंटांग तिगा एनर्जी में 100 प्रतिशत शेयरधारिता बेचेगी। ये लेनदेन कुछ पूर्व शर्तों एवं अन्य प्रथागत नियमों के अधीन होगा। समझौते के समापन पर करीब 1.2 करोड़ अमेरिकी डॉलर हासिल होंगे।

एलआईसी को पहले ही दिन मिला 1,100 करोड़ का प्रीमियम इनफ्लो

जीवन बीमा पॉलिसियों पर टैक्स शून्य होने से ग्राहकों में उत्साह, बिक्री में तेजी की उम्मीद

मुंबई केंद्र सरकार द्वारा हाल ही में जीएसटी में किए गए सुधारों का असर बीमा उद्योग में तुरंत दिखने लगा है। सरकारी बीमा कंपनी लाइफ इंश्योरेंस कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया (एलआईसी) को जीएसटी हटने के पहले ही दिन 1,100 करोड़ रुपए का प्रीमियम इनफ्लो मिला है। यह आंकड़ा एलआईसी की औसत मासिक आय (5,000 करोड़ रुपए) का एक बड़ा हिस्सा है, जो उपभोक्ताओं के बीच सकारात्मक भावना को दर्शाता है। नई नीति के तहत अब स्वास्थ्य और व्यक्तिगत जीवन बीमा पॉलिसियों पर जीएसटी 18 फीसदी से घटाकर शून्य कर दिया गया है। इससे जीवन बीमा पॉलिसियां पहले से कहीं अधिक किफायती हो गई हैं। उद्योग विशेषज्ञों का मानना है कि इस बदलाव से पॉलिसी की बिक्री में जोरदार वृद्धि देखने को मिलेगी। एलआईसी पहले से ही भारतीय बीमा बाजार में मजबूत स्थिति में है। वित्त वर्ष 2025-26 की पहली तिमाही (अप्रैल-जून) में कंपनी ने 10,957 करोड़ रुपए का मुनाफा और 1,19,618 करोड़ की शुद्ध प्रीमियम आय दर्ज की। इसके साथ ही एलआईसी की बाजार हिस्सेदारी भी 63.51 फीसदी रही।

चीन ने भारतीय फार्मा उत्पादों पर लगने वाला आयात शुल्क शून्य किया

अरबों डॉलर के एक्सपोर्ट का बनेगा रास्ता

नई दिल्ली चीन ने भारतीय फार्मा उत्पादों पर लगने वाला 30 फीसदी आयात शुल्क घटाकर शून्य कर दिया है। यानी कि अब भारतीय कंपनियां चीन को दवाएं बिना किसी कस्टम ड्यूटी के बेच सकेंगी। यह फैसला ऐसे समय लिया गया है कि जब अमेरिका ने भारतीय दवाओं पर 100 फीसदी टैरिफ लगाकर बाजार लगभग बंद कर दिया है। ऐसे में चीन का यह फैसला भारतीय फार्मा सेक्टर के लिए राहत और नए अवसर लेकर आया है। भारत को 'दुनिया की फार्मेसी' कहा जाता है क्योंकि यहां बनी जेनेरिक दवाएं और वैक्सीन सस्ती कीमत पर पूरी दुनिया में सप्लाई होती हैं. हालांकि अब तक चीन का बाजार भारतीय कंपनियों के लिए आसान नहीं था क्योंकि 30 फीसदी ड्यूटी के कारण दवाओं की कीमत बढ़ जाती थी. लेकिन अब शून्य शुल्क के साथ भारतीय कंपनियों को चीन जैसे विशाल बाजार में सीधा मुकाबले का मौका मिलेगा। इससे न सिर्फ एक्सपोर्ट बढ़ेगा बल्कि भारत की वैश्विक हेल्थकेयर सप्लाई चेन में पकड़ और मजबूत होगी। विशेषज्ञों का मानना है कि इस फैसले से भारत-चीन व्यापार संतुलन सुधारने में मदद मिलेगी। अभी तक व्यापार चीन के पक्ष में झुका रहता था, लेकिन फार्मा एक्सपोर्ट से भारत को बड़ा फायदा हो सकता है। उद्योग से जुड़े जानकारों के मुताबिक आने वाले वर्षों में भारतीय दवा निर्यात अरबों डॉलर तक बढ़ सकता है। इसके साथ ही देश में रोजगार के नए अवसर भी पैदा होंगे और कंपनियों की आय में जबरदस्त उछाल देखने को मिलेगा।

शेयर बाजार गिरावट पर बंद

सेंसेक्स 61, निफ्टी 20 अंक गिरा

मुंबई

भारतीय शेयर बाजार सोमवार को गिरावट पर बंद हुआ। सप्ताह के पहले ही दिन दुनिया भर के बाजारों से मिले जुले संकेतों के साथ ही बिकवाली से बाजार में ये गिरावट आई। दिन भर के कारोबार के बाद 30 शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स 61.52 अंक करीब 0.08 फीसदी नीचे आकर 80,364.94 बंद हुआ। वहीं 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी 20 अंकों के नीचे आकर 24,634 के स्तर पर बंद हुआ। आज केवल सरकारी बैंकिंग शेयरों में तेजी रही। निफ्टी पीएसयू बैंक 1.78 फीसदी, निफ्टी रियल्टी 0.88 फीसदी, निफ्टी एनर्जी 0.69 फीसदी, निफ्टी कमोडिटीज 0.69 फीसदी और निफ्टी मेटल 0.35 फीसदी की बढ़त के साथ बंद हुआ। निफ्टी फार्मा 0.15 फीसदी, निफ्टी मीडिया 0.85 फीसदी और निफ्टी प्राइवेट बैंक 0.29 फीसदी की गिरावट के साथ बंद हुआ। सेंसेक्स पैक में टाइटन, एसबीआई, ट्रेंट, बीईएल, एनटीपीसी, टाटा स्टील, बजाज फिनसर्व, बजाज फाइनेंस और एमएंडएम के शेयर लाभ में रहे थे। मारुति सुजुकी, एक्सिस बैंक, एलएंडटी, आईसीआईसीआई बैंक, भारती एयरटेल, इन्फोसिस, एचयूएल, एचसीएल टेक और कोटक महिंद्रा बैंक टॉप नुकसान में थे वहीं इससे पहले आज सुबह बाजारों ने हल्की बढत के साथ शुरुआत की। आईटी और रियल्टी शेयरों में खरीदारी से बाजार को सपोर्ट मिला। सुबह सेंसेक्स 100 से ज्यादा अंक चढ़कर 80,588 पर खुला। इसी तरह नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी-50 मजबूती के साथ 24,728 पर खुला। हालांकि, कुछ ही देर में बढ़त कम हो गई।

ग्लोबल बाजारों की बात करें तो विदेशी निवेशक ब्रिटेन के मनी सप्लाई डेटा, यूरो एरिया की आर्थिक भावना, और जापान के जेजीबी खरीद कार्यक्रम के आंकड़ों का इंतजार कर रहे हैं। ऑस्ट्रेलिया का रिजर्व बैंक भी आज से अपनी दो दिन की नीति बैठक शुरू कर रहा है। घरेलू मोर्चे पर निवेशक इंडस्ट्रियल प्रोडक्शन और मैन्युफेक्चरिंग डेटा का इंतजार कर रहे हैं। एशियाई बाजारों में सोमवार को मिलेजुले रुख के साथ खुले। ऑस्ट्रेलिया का एसएंडपी, एएसएक्स 200 0.43 फीसदी बढ़ा। दक्षिण कोरिया का कॉपी 1.05 फीसदी बढ़ा। जबकि जापान का इंडेक्स 225 इंडेक्स 0.68 फीसदी गिरा। वहीं अमेरिका के प्रमुख शेयर बाजार शुक्रवार को अमेरिकी मुद्रास्फीति डेटा के लगभग समान रहने के बाद बढ़त के साथ बंद हुए। एसएंडपी 500 इंडेक्स 0.59 फीसदी चढ़कर बंद हुआ। नेस्डैक कंपोजिट 0.44 फीसदी बढ़ा और डॉव जोन्स 0.65 फीसदी ऊपर रहा।

जनधन खातों की केवाईसी 30 सितंबर तक करें, नहीं तो बंद हो सकता है खाता

10 साल पुराने खातों के लिए री-केवाईसी अनिवार्य, गांव-गांव में चल रहे हैं कैंप

नई दिल्ली प्रधानमंत्री जन धन योजना (पीएमजेडीवाय) के तहत खोले गए बैंक खातों को अब 10 साल पूरे हो चुके हैं। जिन खातों की शुरुआत 2014-15 में हुई थी, उनके लिए अब री-केवाईसी कराना अनिवार्य हो गया है। सरकार ने इसकी अंतिम तिथि 30 सितंबर तय की है। बिना री-केवाईसी के, ऐसे खाते निष्क्रिय हो सकते हैं, जिससे खाताधारकों को लेन-देन और सरकारी सब्सिडी प्राप्त करने में समस्या आ सकती है। री-केवाईसी प्रक्रिया एकदम आसान है। खाताधारकों को अपनी बैंक शाखा में जाकर पहचान पत्र, पता प्रमाण और फोटो जमा करना होता है। यह प्रक्रिया निःशुल्क है। सरकारी बैंक 1 जुलाई से 30 सितंबर तक ग्राम पंचायत स्तर पर कैंप लगाकर री-केवाईसी करा रहे हैं। अब तक देशभर की एक लाख से अधिक पंचायतों में ऐसे कैंप लग चुके हैं। जन धन योजना के तहत खातों की संख्या तेजी से बढ़ी है। 2015 में जहां 14.72 करोड़ खाते थे, वहीं 2025 तक यह संख्या बढ़कर 56.16 करोड़ तक पहुंचने का अनुमान है। सरकार की अपील है कि जिनका खाता 10 साल पुराना है, वे जल्द से जल्द री-केवाईसी कराएं, ताकि सरकारी लाभों का लाभ बिना बाधा जारी रह सके।

आरबीआई की एमपीसी की तीन दिनी बैठक शुरू

दिवाली से पहले मिल सकता है सस्ते कर्ज का तोहफा

मुंबई

आरबीआई की मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) की तीन दिन की बैठक सोमवार से मुंबई में शुरू हो गई है। समिति का मुख्य उद्देश्य मौजूदा आर्थिक हालात का आकलन कर रीपो रेट और अन्य पॉलिसी दरों पर निर्णय लेना है। बैठक के दौरान सदस्य बाजार की स्थिति, महंगाई और आर्थिक विकास के दृष्टिकोण पर विचार-विमर्श करेंगे। इसके बाद बुधवार 1 अक्टूबर को सुबह 10 बजे आरबीआई गवर्नर संजय मल्होत्रा बैठक के फैसले का ऐलान करेंगे। यह निर्णय बाजार और व्यवसायों के लिए महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इससे उधारी की लागत और आर्थिक गतिविधियों पर असर पड़ता है। पिछली अगस्त की बैठक में रीपो रेट 5.5 फीसदी पर स्थिर रखा गया था। इससे पहले जून में 50 बेसिस पॉइंट की कटौती और फरवरी-अप्रैल में 25-25 बेसिस पॉइंट की कमी की गई थी। मई 2022 से फरवरी 2023 के बीच रेपो रेट में कुल 250 बेसिस पॉइंट बढ़ोतरी हुई थी। आईक्रा की मुख्य अर्थशास्त्री अदिति नायर के अनुसार, जीएसटी सुधार से अक्टूबर-नवंबर 2025 में महंगाई में गिरावट देखने को मिल सकती है, लेकिन इसके बाद महंगाई का स्तर फिर बढ़ सकता है। नायर का कहना है कि जीएसटी सुधार महंगाई को कम करेगा, लेकिन इससे मांग बढ़ने की संभावना भी है। इस कारण अक्टूबर 2025 की बैठक में रेपो रेट को स्थिर रखने की संभावना अधिक है। सरकार के जीएसटी सुधार के बाद, दिवाली के त्योहार से पहले आरबीआई उपभोक्ताओं को राहत देने के लिए रीपो रेट में कटौती कर सकती है।

अक्टूबर में तीन दिन बंद रहेंगे शेयर बाजार

21 अक्टूबर को दोपहर 1:45 से 2:45 बजे तक होगा एक घंटे का विशेष मुहूर्त ट्रेडिंग सेशन

नई दिल्ली अक्टूबर 2025 में भारतीय शेयर बाजार (बीएसई और एनएसई) तीन प्रमुख अवसरों पर बंद रहेंगे। इस दौरान निवेशक किसी भी तरह की ट्रेडिंग नहीं कर पाएंगे। 2 अक्टूबर गुरुवार को गांधी जयंती और दशहरा के कारण बाजारों में अवकाश रहेगा। 21 अक्टूबर मंगलवार को दिवाली लक्ष्मी पूजन के अवसर पर ट्रेडिंग नहीं होगी। वहीं 22 अक्टूबर बुधवार को बलिप्रतिपदा के चलते बाजार एक और दिन बंद रहेंगे। इन छुट्टियों की पुष्टि बीएसई और एनएसई की आधिकारिक वेबसाइटों पर दी गई जानकारी के अनुसार की गई है। हालांकि, 21 अक्टूबर को दिवाली के दिन एक विशेष ट्रेडिंग सेशन आयोजित किया जाएगा, जिसे मुहूर्त ट्रेडिंग कहा जाता है। यह एक घंटे का ट्रेडिंग सेशन दोपहर 1:45 बजे से 2:45 बजे तक होगा। हर वर्ष यह ट्रेडिंग सेशन एक शुभ मुहूर्त पर आयोजित किया जाता है और इसे हिंदू नव वर्ष विक्रम संवत 2082 की शुरुआत के रूप में माना जाता है। धारणा है कि इस विशेष समय में ट्रेडिंग करने से निवेशकों को सौभाग्य और समृद्धि प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त 5 नवंबर को गुरु नानक जयंती और 25 दिसंबर को क्रिसमस के दिन भी शेयर बाजार बंद रहेंगे।

जीएसटी कटौती के बाद 3000 शिकायतें

नई दिल्ली उपभोक्ता मामलों की सचिव निधि खरे का कहना है कि करों में कटौती के बाद से राष्ट्रीय उपभोक्ता हेल्पलाइन को 3000 से अधिक जीएसटी से संबंधित शिकायतें मिली हैं। शिकायतों में खुदरा विक्रेता जीएसटी कटौती का लाभ उपभोक्ताओं को नहीं दे रहे हैं, जिससे धोखाधड़ी की आशंका बढ़ी है। मंत्रालय ने इन शिकायतों को केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड (सीबीआईसी) को जांच के लिए भेजा है। साथ ही, शिकायतों की बेहतर निगरानी के लिए कृत्रिम मेधा (एआई) और चैटबॉट तकनीक का उपयोग किया जा रहा है। सरकार का उद्देश्य है कि कर कटौती का पूरा लाभ उपभोक्ताओं तक पहुंचे और बाजार में पारदर्शिता बनी रहे।

काला शनिवार : तमिलनाडु भगदड़ हादसा भगदड़ से मौतों का जिम्मेवार कौन एक यक्ष प्रश्न?

नरेंद्र भारती

सरकार को इन हादसों पर संज्ञान लेना चाहिए तथा दोषियो के खिलाफ कारवाई करनी चाहिए और प्रत्येक मंदिरों व आस्था स्थलों में आपदा से निपटने के लिए आपदा प्रबंधन समितियां गठित करनी चाहिए। मंदिरो में हर वर्ष करोडो. रूपया चढावा चढता है मगर श्रध्दालूओं की सुरक्षा रामभरोसे ही चल रही है। मंदिर कमेटियो को भी इन हादसो से सीख लेनी चाहिए। ताकि आने वाले समय में इन हृदयविदारक हादसो को रोका जा सके। अगर अब भी सबक न सीखा तो श्रध्दालूओं को मंदिरों में मौत की सौगातें मिलती रहेगी और आस्था स्थल शमशानघाट बनते रहेगें।

एक बार फिर लाशों के ढेर लग गए शनिवार 27 सितम्बर को तमिलनाडु के करूर में तमिल एक्टर विजय की रैली में भगदड मचने से 39 लोगों की मौत हो गईं और 50 लोग घायल हो गए' 17 महिलओं की मौत हो गई है'मरने वालों में बच्चे भी शामिल हैं' मौत के आंकड़े बढ़ सकते हैं' करूर के जिस मैदान में यह हादसा हुआ है वहाँ केवल.10000 लोगों की क्षमता है लेकिन यहां लगभग 30000 से अधिक लोग मौजूद थे' भगदड़ मचने से ज्यादातर मोटे हुई हैं मौत का कारण दम घुटना ही माना जा रहा है' चारों तरफ लाशों का अंबार लग गया' पल भर में जीते जागते लोग लाशों में तब्दील हो गए यह बहुत ही भयानक मंजर था' सरकार ने मृतकों के लिए दस दस लाख मुआवजे का ऐलान कर दिया है' गत 27 जुलाई 2025 रविवार को हरिद्वार के प्रसिद्ध मनसा देवी मंदिर में करंट फैलने की अफवाह फैलने से दर्जनों श्रद्धांलुओं की मौत हो गईं थी और 50 के लगभग घायल हो गए थे' मनसा देवी मंदिर के पैदल मार्ग पर यह हादसा हुआ' मंदिर से करीब सौ मीटर पहले सीढीओं पर यह भगदड़ का खौफनाक मंजर हुआ था'यहां करीब दस हजार लोग मौजूद थे भीड़ बहुत थी' 29 जून 2025 को पुरी में रथ यात्रा के दौरान भगदड़ मचने से तीन लोगों की मौत हो गईं थी और काफी लोग घायल हुए थे' 8 जनवरी 2025 को तिरुपति में भगदड़ मचने से 6 लोगों की मौत हो गईं थी और बहुत लोग घायल हो गए हैं' 2 जुलाई 2024 को उत्तर प्रदेश के हाथरस में एक सत्संग में भगदड़ मचने से 121 लोगों की दर्दनाक मौत हो गईं थी और सेकड़ों लोग गंभीर रूप से घायल हो गए थे' मई माह में गोवा के शिरगांव में यात्रा के दौरान बिजली का तार गिरने से भगदड़ मचने से 7 लोगों की मौत हो गई थी और 50 लोग घायल हो गए थे' भगदड़ के मामले बढ़ते ही जा रहे हैं' कुछ माह पहले दिल्ली में भगदड़ मचने से रेलवे स्टेशन शमशानघाट बन गया था दिल्ली रेलवे स्टेशन पर भीड़ में भगदड़ मचने से काफी लोग मारे गए थे अब गोवा में एक बार फिर लाशों के ढेर लग गए चारों तरफ लाशें ही लाशें बिखर गईं' रेलवे स्टेशन से यह लोग महाकुम्भ जा रहे 18 लोगों की मौत हो गई थी' देश में भगदड़ की घटनाएं थमने का नाम नहीं ले रही हैं और बेकसूर लोग बेमौत मर रहे हैं 15 फरवरी शनिवार देर रात नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर भगदड़ मचने से 18 लोगों की दर्दनाक मौत हो गई थी' अभी कुम्भ की घटना की स्याही भी नहीं सुखी थी की दिल्ली में यह हादसा हो गया कुछ दिन पहले संगम स्थल पर हुआ था प्रयागराज में कुम्भ मेले में भगदड़ मचने से दर्जनों लोग मारे गए थे और सेकड़ों घायल हो गए थे' रेलवे स्टेशन पर मची भगदड़ में मरने वालों की संख्या में वृद्धि हो सकती है' ऐसा हादसा इससे पहले हाथरस में सत्संग में भगदड़ मचने से 120 लोगों की दर्दनाक मौत हो गई थी'कुछ वर्ष पहले विजयदशमी के दिन रावण दहन के अवसर पर बिहार की राजधानी पटना के गांधी मैदान में देखने को मिला था जहां बिजली का तार टूटने की अफवाह से भगदड़ मचने के कारण33 लोगो की दर्दनाक मौत हो गई थी और 100 से ज्यादा घायल हो गए थे काश प्रशासन ने पिछली घटनाओं से सबक सीखा होता तो यह हादसा न होता। देश में भगदड़ मचने का यह कोई पहला हादसा नहीं है इससे पहले सैंकडों हादसे हो चुके है और हजारों लोग बेमौत मारे जा चुके है मगर यह हादसे कम नहीं हो रहे हैं। इन घटनाओं को हादसा नहीं हत्याऐं कहना गलत नहीं होगा। इस रावण दहन के अवसर पर गांधी मैदान में पांच लाख लोग आए थे लेकिन प्रशासन ने केवल एक ही द्वार खोल रखा था। कुम्भ में भगदड़ के कारण जिन्दा लोग पल भर में लाशों में बदल गए। देश में मंदिरों में मेले व अन्य पर्व अब आस्थास्थल न होकर मरणस्थल बनते जा रहे हैं। कुम्भ में चारों तरफ लाशों के ढेर ही नजर आ रहे थे। लोगों का सामान चारों तरफ बिखरा पडा था। भगदड़ में सैकडों महिलाएं ,बच्चे व बुर्जुग पैरों तले कुचल दिए गए , लोग बदहवाश होकर अपनों को ढूंढ रहे थे।मगर उनके अपने मौत की नीद सो चुके थे।चारों तरफ चप्पलें व जूते नजर आ रहे थे। इसे प्रशासन की लापरवाही की संज्ञा दी जाए तो कोई आतिश्योक्ति नहीं होगी। प्रशासन को पता था कि लाखों की तादाद में लोग व बच्चे आएगें तो सुरक्षा के इंतजाम क्यों नहीं किए गए। सरकार ने भले ही हादसे की न्यायिक जांच के आदेश दे दिए है मगर जो काल का गाल बन गए उसकी भरपाई कैसे होगी। अब प्रशासन मृतकों को लाखो रुपया मंआवजा दे रही है अगर पहले से ही सुरक्षा के इंतजाम किए होते तो यह हादसा रुक सकता था। मुआवजा समस्या का हल नहीं है। सरकारो द्वारा जो पैसा मुआवजे के रुप में दिया जाता है उससे व्यवस्था को सुधारने में लगाया होता तो आज यह नौबत न आती। आकडों पर नजर डाले तो आत्मा सिहर उठती है। 3 फरवरी 1954 को कुम्भ मेले में भगदड़ मचने से 800 लोगों की मौत हुई थी' 1986 में भी कुम्भ में में भगदड़ मचने से 200 लोग मारे गए थे'2006 में भी सिंध नदी में 50 तीर्थयात्री बह गए थे। 10फरवरी 2013 को इलाहाबाद में कुम्भ मेले 36 लोगों की मौत हुई थी और 39 लोग घायल हुए थे। 26 जनवरी 2005 को महाराष्ट्र के सतारा जिले के मंधेरी मंदिर में 350 लोगों की दर्दनाक मौत हुई थी।नवंबर 2006 में उडीसा के शंदरपुरी स्थित भगवान जगन्नाथ मंदिर में आरती के समय भदड़ में चार लोगों की मौत हो गई थी और दर्जनो घायल हुए थे।झारखंड के देवधर के एक आश्रम में भगदड़ से 9 लोगों की मौत हो गई थी, 30 सितंबर 2008 को जोधपुर में चामुडा देवी मंदिर में 250 लोगों की मोत हुई थी।3 अगस्त 2008 को हिमाचल प्रदेरू के प्रसिध्द शक्तिपीठ नैना देवी में भगदड मचने से 162 लोग मारे गए थे तथा 300 घायल हुए थे। घटना के समय मंदिर में 20 से 25 हजार लोग मौजूद थे। मरने वालों में 104 लोग अकेले पंजाब के रहने वाले थे। 14 जनवरी 2011 को केरल के सबरीमाला मंदिर में भगदड़ में 106 श्रध्दालूओं की मौत हो गई थी और 100 से अधिक घायल हो गए थे। नंवबर 2012 में बिहार में छठ पुजा के दौरान गंगा नदी के घाट पर बना बांस का पुल टुटने से लोगों में भगदड़ मचने से 20 श्रध्दालुओं की मौत हो गई थी। बार-बार हादसे हो रहे हैं मगर सरकारें मूकदर्शक बनकर तमाशा देख रही है।प्रशासन तब जागता है जब लाशों के ढेर लग जाते हैं। प्रशासन को इन हादसों को अनदेखा नहीं करना चाहिए। इस घटना ने प्रशासन की बदइंतजामी की पोल खोल दी हैं। इस हादसे में कई अनाथ हो गए तो माताएं व बहनों का सुहाग उजड गया।ऐसे हादसे ताउम्र रोते हुए छोड़ जातें है। छोटे बच्चे दर-दर की ठोकरें खातें हैं। केन्द्र सरकार को इन हादसों पर संज्ञान लेना चाहिए तथा दोषियो के खिलाफ कारवाई करनी चाहिए और प्रत्येक मंदिरों व आस्था स्थलों में आपदा से निपटने के लिए आपदा प्रबंधन समितियां गठित करनी चाहिए। मंदिरो में हर वर्ष करोडो. रूपया चढावा चढता है मगर श्रध्दालूओं की सुरक्षा रामभरोसे ही चल रही है। मंदिर कमेटियो को भी इन हादसो से सीख लेनी चाहिए। ताकि आने वाले समय में इन हृदयविदारक हादसो को रोका जा सके। अगर अब भी सबक न सीखा तो श्रध्दालूओं को मंदिरों में मौत की सौगातें मिलती रहेगी और आस्था स्थल शमशानघाट बनते रहेगें। वक़्त अभी संभलने का है'

संपादकीय

योगी का सख्त संदेश

उत्तर प्रदेश के बरेली में जुमे पर आई लव मोहम्मद को लेकर हुए बवाल पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि ऐसा सबक सिखाएंगे कि आने वाली पीढ़ी तक दंगा करना भूल जाएगी। एक मीडिया संस्थान के कार्यक्रम में सरकार के सख्त संदेश के बाद योगी ने कहा कि मौलाना भूल गया कि शासन किसका है, मैंने बोला जाम नहीं होगा, न ही कर्फ्यू लगेगा। यह चेतावनी इत्तेहाद-ए-मिल्लद काउंसिल के प्रमुख मौलवी तौकीर रजा खान के लिए बताई जा रही है जिन्होंने आई लव मोहम्मद अभियान के नाम पर विरोध-प्रदर्शन का आह्वान किया था। रजा को पुलिस ने गिरफ्तार किया और चौदह दिन के लिए जेल भेज दिया गया। उनतालिस अन्य लोगों को भी हिरासत में लिया गया है। आरोप है कि बाराबंकी में शुक्रवार को देर रात आई लव मोहम्मद का पोस्टर फाड़ने के बाद हंगामा हो गया था। दरअसल, बारावफात के जुलूस के दौरान कानपुर के कुछ मुस्लिम इलाकों में आई लव मोहम्मद वाले पोस्टर/बैनर रास्ते में लगाने से हिन्दूवादी संगठनों ने आपत्ति की थी। कुछ लोगों के खिलाफ शिकयत दर्ज होने और पंद्रह अज्ञात लोगों पर एफआईआर दर्ज होने पर मामले ने तूल पकड़ लिया। देश के अन्य इलाकों में भी लोग आई लव मोहम्मद की तख्तियां लेकर सड़कों पर उतर आए। विरोधस्वरूप कुछ हिन्दुत्ववादियों ने आई लव महादेव/महाकाल जैसे बैनर लगाने चालू कर दिए। संदेह व्यक्त किया जा रहा है कि रजा पंद्रह साल पहले हुए दंगों की तर्ज पर शहर को सुलगाने की साजिश कर रहा था। भड़काऊ बयानों द्वारा भीड़ को इकट्ठा करने और पत्थरबाजी कराने, चाकू-डंडे आदि से दहशत फैलाने के सबूत पाए गए हैं। मौके से अवैध हथियारों का मिलना इस बात की तस्दीक कर रहे हैं कि जानबूझकर शहर को दंगों में झोंकने की साजिश की जा रही थी। चूंकि नमाज के वक्त स्थानीय पुलिस इलाके में मुस्तैद थी, इसलिए उसने फौरन उपद्रवियों को काबू में कर लिया। बता रहे हैं कि फसाद करने वालों को इंटरनेट के माध्यम से निर्देशित किया जा रहा था। उपद्रवियों ने पुलिस वालों पर भी हमला किया और उनके उपकरण छीनने के प्रयास किए। निःसंदेह राज्य के मुखिया द्वारा दी गई यह धमकी कतई उचित नहीं कही जा सकती। मगर यदि वास्तव में शहर में उपद्रव फैलाना किसी का मकसद था तो उसे खुला भी नहीं छोड़ा जा सकता। यह बात धर्म विशेष तक नहीं सीमित रहनी चाहिए, बल्कि पूर्वाग्रहों के बगैर किसी भी उपद्रवी, साजिशकर्ता और दहशतगर्द के साथ मुलायमियत से पेश आने की जरूरत नहीं है।

चिंतन-मनन

दिव्यता की विविधता

ईश्वर ने दुनिया की छोटी-छोटी खुशियां तो तुम्हें दे दी हैं, लेकिन सच्चा आनन्द अपने पास रख लिया है। उस परम आनन्द को पाने के लिए तुम्हें उनके ही पास जाना होगा। ईश्वर को पाने की चेष्टा में निष्कपट रहो। एक बार परम आनन्द मिल जाने पर सब-कुछ आनन्दमय है। परमानन्द के बिना संसार की खुशियां अस्थाई हैं। तुमने ईश्वर को सदैव पिता के रूप में देखा है परंतु क्या तुम ईश्वर को एक शिशु के रूप में देख सकते हो? जब तुम ईश्वर को शिशु के रूप में देखते हो तो तुम्हारी कोई मांग नहीं होती। ईश्वर तो तुम्हारे अस्तित्व का अन्तःकरण है। ईश्वर तुम्हारा शिशु है। वे तुमसे बच्चे की तरह चिपककर रहते हैं जब तक तुम वृद्ध होकर मर नहीं जाते। संसार में उनके पोषण के लिए उन्हें तुम्हारी आवश्यकता है। साधना, सत्संग और सेवा ईश्वर के पोषक आहार हैं। ईश्वर अनेक क्यों नहीं हो सकते? यदि ईश्वर ने मनुष्य को अपनी ही छवि के अनुसार बनाया है, तो उनकी छवि क्या है? अफ्रीकी, मंगोलियन, कॉकेसियन, जापानी या फिलिपिनो? मनुष्य इतने प्रकार के क्यों हैं, वृक्ष सिर्फ एक प्रकार का नहीं होता। सांप, बादल, मच्छर या सब्जी सिर्फ एक प्रकार के नहीं। तो फिर केवल ईश्वर को ही एक क्यों होना चाहिए?

जिस चेतना ने इस सम्पूर्ण सृष्टि की रचना की है और जो विविधता प्रेमी है, वह नीरस कैसे हो सकती है? ईश्वर को विविधता पसंद है, तो वे भी अवश्य ही वैविध्यपूर्ण होंगे। ईश्वर अनेक नाम, रूप और प्रकार से अभिव्यक्त होते हैं। कुछ विचार-धारा के व्यक्ति ईश्वर को उनके विभिन्न रूपों में प्रकट होने की स्वतंत्रता नहीं देते। वे उन्हें एक ही रूप में चाहते हैं। अवसर के अनुसार जब तुम अपना रूप बदलते हो तो फिर कैसे सोच सकते हो कि चेतना में कोई विविधता न हो? हमारे पूर्वज इस बात को समझते थे इसीलिए, उन्होंने दिव्यता के अनन्त गुणों व रूपों का ज्ञान कराया। चेतना नीरस और उबाऊ नहीं है। जो चेतना इस सृष्टि का आधार है, वह गतिमान और परिवर्तनशील है। ईश्वर एक ही नहीं, अनेक हैं। जब तुम दिव्यता की विविधता को स्वीकार करते हो, तब कट्टर और रूढ़िवादी नहीं रह जाते।

तुर्किए और भारत के राजनयिक रिश्ते सूत के कच्चे धागे के समान

कांतिलाल मांडोत

भारत के बजाय तुर्की का झुकाव पाकिस्तान की और रहा है। अंतराष्ट्रीय राजनीति में चीन औ? तुर्की ही पाकिस्तान के सदाबहार समर्थक रहे है।तुर्की के राष्ट्रपति रेसेप तैयप एर्दोगन ने न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा(यूएनजीए) 80 वे सत्र में एक बार फिर जम्मू कश्मीर का मुद्दा उठाया।भारत -पाकिस्तान के बीच बातचीत के जरिये कश्मीर मुद्दे को हल करने की वकालत की।हमारे विश्लेषकों को तुर्की के राजनैतिक इतिहास पर बारीकी से नजर डालनी चाहिए।क्योंकि एर्दोआन भारत की यात्रा पर आए थे।उस समय पाकिस्तान की सिफारिश करना नही भूले थे।भारत की उनकी टोही यात्रा के बाद भी एर्दो ने 2019 से अब तक 6 बार पाकिस्तान का जिक्र कर चुके है।तुर्की के पश्चिमी देशों से सम्बंध बिगड़े है,तब से वे नए सहयोगियों की तलाश में है।एर्दो ने रूस ,चीन और भारत से सम्बंध सुधारने की कोशिश शुरू की थी।लेकिन भारत और तुर्की के बीच संबंधों की बाधा पाकिस्तान है।तुर्की ने न केवल कश्मीर के मामले मेंबल्कि अंतराष्ट्रीय राजनीति में भी सदा ही पाकिस्तान का खुलकर साथ दिया है।कश्मीर में जनमत संग्रह की वकालत करने वाले एर्दो बाहरी मध्ययस्था के जरिये कश्मीर समस्या सुलझाने की बात करते है।उन्होंने भारत को सुरक्षा परिषद और नाभिकीय आपूर्ति समूह का सदस्य बनाये जाने की वकालत भी की है।लेकिन दोनो हाथ मे लड्डू रखने वाले एर्दो पाकिस्तान को भी उसी श्रेणी में रखना चाहते है,जिसके लिए वे सिफारिश करते है।तुर्की पाकिस्तान को जिस तरह का समर्थन देता रहा है,उसे देखते हुए वह भारत से अधिक अनुकूल रुख की आशा नही कर सकता है।भारत ने भी तुर्की की भारत यात्रा के दौरान यह जताया कि भारत कश्मीर नीति का कूटनीतिक बदला ले सकता है।तुर्की भारत के साथ द्विपक्षीय सम्बंध रखते हुए भी पाकिस्तान का जिक्र करना नही छोड़ता है।तुर्की कश्मीर की बात करता है,लेकिन आर्मेनिया और साइप्रस दो दुःखती रग है।क्योंकि उसने पहले महायुद्ध में और उसके बाद उसने 15 लाख आर्मीनियाईयो को मरवा दिया था।आर्मेनिया उससे इस नरसंहार पर पश्चाताप जताने और क्षमा मांगने की मांग करता रहा है।इसे दोनो देशो के बीच तनातनी रही है।भारत ने उपराष्ट्रपति पति हामिद अंसारी को आर्मेनिया की यात्रा पर भेजकर तुर्की को जता दिया कि वह भी कूटनीति कर सकता है।बार बार कश्मीर की मध्ययस्था कर सुर्खियों में रहने वाला तुर्की ने साइप्रस के एक भाग पर कब्जा कर रखा है।उसे लेकर तुर्की और साइप्रस में तनातनी रहती है।भारत ने एर्दो आन की भारत यात्रा से पहले साइप्रस के रास्ट्रपति को आमंत्रित करके तुर्की को एक और संकेत दे दिया कि वह भारत को हल्के में न ले।फिर भी तुर्की अपनी आदत से मजबूर है।एर्दो आन 2003 में तुर्की के प्रधानमंत्री बने थे।2011 में पहली बार उनकी पार्टी बहुमत से चुकी थी।राष्ट्रपति प्रणाली में बदलने की बात उठी और 2014 में संविधान में परिवर्तन कर दिया।तब से एर्दो आन अब तक रास्ट्रपति के पद पर है।तुर्की का तख्तापलट की कोशिश नाकाम रही।पाकिस्तान और तुर्की का व्यापार कई गुना है।जब एर्दो ने भारत की यात्रा की थी,उस समय आतंकवाद का विरोध अवश्य किया,पर उनका जोर नक्सली हिंसा पर था,पाकिस्तान प्रेरित आतंकवाद का उन्होंने उल्लेख तक नही किया।तुर्की की दक्षिण एशिया में दिलचस्पी का कारण खिलाफत आंदोलन था।खिलाफत आंदोलन भारत के मुसलमानों का आंदोलन था,लेकिन उसका नेतृत्व महात्मा गांधी कर रहे थे।बाद में आधुनिक तुर्की के राष्ट्रपिता माने जाने वाले मुस्तफा कमाल पाशा ने स्वयं खिलाफत समाप्त करने की पहल की।उन्होंने यह अहसास करवाया कि कठिन समय में तुर्की का साथ दिया।तुर्की को भी पश्चिमी एशियाई राजनैतिक परिस्थितियो में पाकिस्तान से निकटता अधिक लाभदायी दिखाई दी।तुर्की में विनाशकारी भूकंप आया था।उस समय भारत ने मानवता के आधार पर मदद भेजी गई।इस ऑपरेशन के तहत एनडीआरएफ की दो टीमें तुर्कीए भेजी गई।जिसमे एक डॉग स्क्वॉड भी शामिल था।भारत की रेस्क्यू टीमो ने मलवे में दबे लोगो को खोजने में मदद की गई।भूकंप से हिले तुर्किए ने भारत को दोस्त कहकर नजदीकी बढाई और इस हमदर्दी का अहसास करवाया।2023 में विनाशकारी भूकंप में 55,हजार लोगो की जान चली गई थी।तब मोदी ने कहा था कि भारत के 140 करोड़ लोग तुर्किए के इस दुःख में साथ में है।तुर्किए को तत्काल मानवतावादी अभिगम अपना कर मदद भेजी।परन्तु तुर्किए ने पाकिस्तान का खुलकर समर्थन किया।तब देश के 140 करोड़ लोगो को दुःख पहुंचा।पहलगाम की घटना पर भी तुर्किए के राष्ट्रपति एर्दो ने हमले की निंदा की और पाकिस्तान का नाम आते ही एर्दो के सुर बदल गए।तुर्किए में बने ड्रोन्स भारत पर हमले करने में पाकिस्तान इस्तेमाल करता है।तुर्किए भारत के साथ और पाकिस्तान के साथ सम्बंध रख तो रहा है,लेकिन पाकिस्तान के साथ हमदर्दी कम नही है।भारत और तुर्किए के बीच 1948 मे राजनीतिक रिश्तों की शुरूआत हुई थी।क्योंकि तुर्किए मुस्लिम देश होते हुए एक धर्मनिरपेक्ष देश बनकर उभर रहा था।लेकिन अब पहले वाले हालात कम दिखाई दे रहे है।लेकिन अब ऐशियाई शीतयुद्ध के दौरान तुर्किए ने नाटो देशो की सदस्यता ले ली है। साइप्रस पर हमला करने की वजह से भारत और तुर्किए के बीच खटास बढ़ गई।भारत और तुर्किए के बीच आ रहा कश्मीर प्रेम किसी हालत में तुर्किए भारत का समर्थन नही करेगा,क्योंकि तुर्किए और पाकिस्तान का भाईचारे से दुनिया अनभिज्ञ नही है। भारत को सचेत रहने की आवश्यकता है।

भाषाओं के सेतु, संस्कृतियों का संगम और वैश्विक संवाद का आधार

किशन सनमुखदास भावनानी

वैश्विक स्तरपर मानव सभ्यता के विकास में भाषा की भूमिका हमेशा ही केंद्रीय रही है। भाषा वह माध्यम है जो विचारों, भावनाओं, ज्ञान और अनुभवों को पीढ़ी दर पीढ़ी तथा राष्ट्र से राष्ट्र तक पहुँचाती है। किंतु विश्व की 7,000 से अधिक भाषाओं के बीच संचार स्थापित करना स्वाभाविक रूप से कठिन है। यहीं पर अनुवादक (ट्रांसलेटर्स), दुभाषिए (इंटरपरेटर्स) और भाषा विशेषज्ञ दुनियाँ को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करते हैं। वे भाषाई दीवारों को तोड़कर आपसी समझ, संवाद और सहयोग की नींव रखते हैं। इन्हीं भाषा पेशेवरों के योगदान को सम्मान देने हेतु प्रतिवर्ष 30 सितंबर को ह्लअंतर्राष्ट्रीय अनुवाद दिवसह्व (इंटरनेशनल ट्रांसलेशन डे) मनाया जाता है। वर्ष 2025 में इसकी थीम है-ह्लअनुवाद, एक ऐसे भविष्य को आकार देना जिस पर आप भरोसा कर सकेंह्व (ट्रांसलेशनः शेपिंग द फ्यूचर यू कैन ट्रस्ट) मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि भाषाओं की जंजीरों को तोड़ने में अनुवादकों की भूमिका अति महत्वपूर्ण है। वैश्विक मंचों पर नेताओं की बात को यदि उनकी ही भाषा में समझा पाना संभव न होता,तो अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति कभी सफल नहीं हो पाती। उदाहरणस्वरूप, जब अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप, भारतीय प्रधानमंत्री मोदी, रूसी राष्ट्रपति पुतिन, इजराइल के प्रधानमंत्री नेतन्याहू या ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर किसी वैश्विक शिखर सम्मेलन में बोलते हैं, तो उनकी बातों को विभिन्न भाषाओं में तुरंत अनुवादितकिया जाता है। यही अनुवादक सुनिश्चित करते हैं कि विश्व के हर प्रतिनिधि तक संदेश सही और सटीक रूप से पहुँचे। इस प्रकार अनुवादक सिर्फ शब्दों का नहीं,बल्कि संस्कृतियों, दृष्टिकोणों और विचारों का आदान-प्रदान संभव बनाते हैं।वर्ष 2025 की थीम ह्लअनुवाद, एक ऐसे भविष्य को आकार देना जिस पर आप भरोसा कर सकेंह्व यह संदेश देती है कि आने वाले समय में विश्व व्यवस्था,शिक्षा,विज्ञान,कूटनीति और सांस्कृतिक संवाद सब अनुवादकों के माध्यम से ही संभव होंगे। इस भविष्य पर भरोसा तभी किया जा सकता है जब भाषा पेशेवर अपनी निष्ठा, सटीकता और मानवीय संवेदनाओं के साथ कार्य करें।इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, अंतर्राष्ट्रीय अनुवाद दिवस 2025 भाषाओं के सेतु संस्कृतियों का संगम और वैश्विक संवाद का आधार।

साथियों बात अगर हम अनुवादः संस्कृतियों को जोड़ने वाला सेतु को समझने की करें तो,अनुवाद केवल शब्दों का परिवर्तन नहीं है, बल्कि यह संस्कृतियों,परंपराओं और मान्यताओं को जोड़ने की प्रक्रिया है। जब जापान की कोई साहित्यिक कृति हिंदी में पढ़ी जाती है, या भारत का कोई उपन्यास स्पेनिश में पहुँचता है, तो यह सिर्फ भाषाई रूपांतरण नहीं बल्कि सांस्कृतिक आदान- प्रदान भी होता है।यही कारणहै कि अनुवादक सटीक संस्कृति-दूतह्व (कल्चरल अम्बास्साडोर्स) भी माने जाते हैं। भारत और अनुवाद की परंपरा,-भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है जहाँ 22 अनुसूचित भाषाएँ और सैकड़ों बोलियाँ प्रचलित हैं।भारतीय सभ्यता में अनुवाद की परंपरा प्राचीन काल से रही है-चाहे वह संस्कृत ग्रंथों का फारसी और अरबी में अनुवाद हो या फिर उपनिषदों का लैटिन में अनुवाद।आधुनिक भारत में संविधान भी 22 भाषाओं में उपलब्ध है, जो अनुवादकों की भूमिका की महत्ता को और सटीकता से स्पष्ट करता है।

साथियों बात अगर हम वैश्विक कूटनीति और अनुवाद का संगम तथा संयुक्त राष्ट्र और 2025 की प्रासंगिकता को समझने की करें तो संयुक्त राष्ट्र ,यूरोपीय संघ, जी20, ब्रिक्स या अन्य किसी अंतरराष्ट्रीय संगठन की बैठकों में अनुवादकों की भूमिका आधारशिला की तरह होती है। वे न केवल भाषाई संदेशों का आदान-प्रदान करते हैं, बल्कि शांति, विश्वास और सहयोग की प्रक्रिया को भी जीवित रखते हैं। संयुक्त राष्ट्र की छह आधिकारिक भाषाएँ-अरबी, अंग्रेजी, चीनी, फ्रेंच, रूसी और स्पेनिश,साथ ही अनेक क्षेत्रीय भाषाओं का भी उपयोग किया जाता है। ऐसे में यदि पेशेवर अनुवादक न हों तो संवाद और निर्णय-प्रक्रिया ठहर सी जाएगी।संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2025 को ह्लशांति और विश्वास का वर्षह्व घोषित किया है। इस घोषणा का सीधा संबंध अनुवादकों की भूमिका से है, क्योंकि संवाद और कूटनीति के माध्यम से ही संघर्षों को कम किया जा सकता है।भाषा पेशेवर यह सुनिश्चित करते हैं कि कोई भी राष्ट्र या संस्कृति गलतफहमी का शिकार न हो, और हर संवाद पारदर्शिता और स्पष्टता से संपन्न हो।आज की दुनिया में बहु भाषावाद शिक्षा,अनुसंधान, सांस्कृतिक संरक्षण और सामाजिक समावेशन की कुंजी बन चुका है। अनुवादक इस बहुभाषिक दुनिया में सबको जोड़ने का कार्य करते हैं। यूनेस्को और यूएन लगातार इस बात पर बल देते रहे हैं कि बहुभाषावाद न केवल सांस्कृतिक विविधता को बचाता है,बल्कि ज्ञान समाज के निर्माण में भी बहुत हद तक सहायक है।

साथियों बात अगर हम प्रौद्योगिकी और अनुवाद का भविष्य तथा अनुवाद और विश्व शांति को समझने की करें तो,कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन ट्रांसलेशन और स्वचालित अनुवाद उपकरणों ने अनुवाद की दुनियाँ में क्रांति ला दी है। गूगल ट्रांसलेट, डीपल जैसे उपकरणों ने आम लोगों के लिए भाषा अवरोध को कम किया है। फिर भी, मशीन कभी भी मानवीय संवेदना, सांस्कृतिक संदर्भ और भावनात्मक सूक्ष्मताओं को पूरी तरह नहीं समझ सकती। यही कारण है कि 2025 की थीम ह्लअनुवाद, एक ऐसे भविष्य को आकार देना जिस पर आप भरोसा कर सकेंह्व मानवीय अनुवादकों की अपरिहार्यता को रेखांकित करती है।दुनियाँ में अधिकांश युद्ध और संघर्ष गलतफहमियों और संवादहीनता से उत्पन्न होते हैं। जब शब्दों का सही अनुवाद न हो तो गलत संदेश फैल सकता है। अनुवादक इन गलतफहमियों को रोककर राष्ट्रों को आपसी विश्वास और शांति की ओर ले जाते हैं। इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो अनुवादक केवल भाषा विशेषज्ञ ही नहीं, बल्कि विश्व शांति के निमार्ता भी हैं। साथियों बात अगर हम अंतर्राष्ट्रीय अनुवाद दिवस के इतिहास को समझने की करें तो,30 सितंबर को अनुवाद दिवस मनाने की परंपरा संेट जेरोम के सम्मान में शुरू हुई थी, जिन्हें बाइबिल का लैटिन भाषा में अनुवादक माना जाता है। लेकिन इसे आधिकारिक मान्यता 2017 में मिली, जब संयुक्त राष्ट्र महासभा ने ए/आरईएस/71/ 288 प्रस्ताव पारित कर 30 सितंबर को आधिकारिक ह्लअंतर्राष्ट्रीय अनुवाद दिवसह्व घोषित किया। यह प्रस्ताव सभी पेशेवर अनुवादकों, दुभाषियों और शब्दावलीविदों की मेहनत को वैश्विक स्तर पर मान्यता देने की दिशा में ऐतिहासिक मील का पत्थर था।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि अंतर्राष्ट्रीय अनुवाद दिवस केवल अनुवादकों को सम्मानित करने का अवसर नहीं है, बल्कि यह दिन हमें यह याद दिलाता है कि यदि भाषाओं के बीच सेतु न बने होते, तो मानव सभ्यता कभी भी वैश्विक नहीं बन पाती।अनुवादकों ने न केवल विचारों का आदान-प्रदान संभव बनाया है, बल्कि उन्होंने शांति, सहयोग और विकास की राह भी प्रशस्त की है। 2025 में जब विश्व ह्लशांति और विश्वासह्व का वर्ष मना रहा है, तो यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हम उन अनुवादकों को सम्मान दें, जो हर दिन अपनी निष्ठा और परिश्रम से दुनिया को जोड़ने का कार्य करते हैं।

(-संकलनकर्ता लेखक - कर विशेषज्ञ स्तंभकार साहित्यकार अंतरराष्ट्रीय लेखक चिंतक कवि संगीत माध्यमा सीए(एटीसी) एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र)

संक्षिप्त समाचार

स्लोवेनिया ने इस्राइली पीएम के प्रवेश पर लगाई रोक

लुब्लियाना, एजेंसी। स्लोवेनिया ने इस्राइली प्रधानमंत्री नेतन्याहू के देश में प्रवेश पर रोक लगा दी है। इसके लिए उन्होंने अंतरराष्ट्रीय अपराध न्यायालय (आईसीसी) के उनके खिलाफ जारी गिरफ्तारी वारंट का हवाला दिया गया है। विदेश मंत्रालय की अधिकारी नेवा ग्रासिक ने कहा कि यह फैसला इस बात को दर्शाने के लिए लिया गया है कि स्लोवेनिया अंतरराष्ट्रीय कानून का समर्थन करता है। स्लोवेनिया, जो लगभग दो मिलियन की आबादी वाला देश है और जिसने पिछले साल फलस्तीनी राज्य को मान्यता दी थी, इस्राइल की गाजा में की गई कार्रवाईयों का मुखर आलोचक रहा है। इसके पहले भी स्लोवेनिया ने इस्राइली रक्षा मंत्री इतामार बेन-गवीर और वित्त मंत्री बेजल स्मोटरिच के देश में प्रवेश से रोक लगा दी थी। स्लोवेनिया सरकार ने कहा कि उन सभी देशों को इस्राइल की फलस्तीनी इलाके में अवैध मौजूदगी को मान्यता नहीं देनी चाहिए जो आईसीसी से बंधे हैं।

यूरोप में गर्मी का कहर 2024 में 62 हजार से ज्यादा लोगों की गई जान

पेरिस, एजेंसी। यूरोप में गर्मी का पारा वैश्विक औसत से दोगुना तेजी से बढ़ रहा है। गर्मी के लिहाज यूरोप के लिए 2024 जानलेवा साबित हुआ है। नेचर मेडिसिन की इस सप्ताह जारी एक रिपोर्ट के मुताबिक, पिछले साल रिकॉर्डतोड़ गर्मी ने 62 हजार से ज्यादा लोगों की जान ले ली। गर्मी मृतकों में महिलाओं और बुजुर्गों की संख्या सबसे अधिक रही। रिपोर्ट के मुताबिक, आगामी समय और भी खतरनाक साबित होगा। यूरोपीय संघ की कोपरनिकस जलवायु परिवर्तन सेवा के अनुसार, साल 2024 में यूरोप को अपने इतिहास की सबसे भीषण का सामना करना पड़ा है। बार्सिलोना इंस्टीट्यूट फॉर ग्लोबल हेल्थ के शोधकर्ताओं ने 32 यूरोपीय देशों से मृत्यु दर के आंकड़े जुटाए हैं। इससे पता चलता है कि 2022 से 2024 की गर्मियों में बढ़ते तापमान के चलते 1.81 लाख से ज्यादा लोगों की मौत हुई।

केबल रेल पलटी, भारतीय समेत सात बौद्ध भिक्षु मरे

कोलंबो, एजेंसी। श्रीलंकाई जंगल के एक मठ में केबल से संचालित रेलगाड़ी पलटने से एक भारतीय समेत 7 बौद्ध भिक्षु मारे गए व 6 अन्य घायल हो गए। पुलिस ने कहा, घटना ना उयाना आरण्य सेनासनाया में हुई, जहां निकावेरेटिया में स्थित एक प्रसिद्ध बौद्ध मठ है। यह मठ अपने ध्यान शिविरों के लिए प्रसिद्ध है और दुनिया भर से साधकों को आकर्षित करता है। पुलिस ने बताया कि सात मृतक बौद्ध भिक्षुओं में से एक भारतीय, एक रूसी और एक रोमानिया का नागरिक था।

ट्रंप के टैरिफ के बाद पीएम मोदी ने पुतिन से पूछा यूक्रेन पर प्लान, नाटो चीफ का दावा

मास्को, एजेंसी। नाटो महासचिव मार्क रुटे ने सनसनीखेज दावा किया है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनल्ड ट्रंप की ओर से भारत पर रूसी तेल खरीदने के लिए लगाए गए टैरिफ का मॉस्को पर बड़ा असर पड़ रहा है। रुटे का कहना है कि इन टैरिफ्स के कारण प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अब रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से फोन पर उनकी यूक्रेन रणनीति को समझाने की मांग कर रहे हैं। न्यूयॉर्क में यूएनजीए सत्र के दौरान सीएनएन से बातचीत में रुटे ने कहा कि भारत पर 50 प्रतिशत टैरिफ का दबाव रूस को सीधे प्रभावित कर रहा है। रुटे के मुताबिक, टैरिफ के बाद दिल्ली अब मॉस्को से जवाब मांग रही है। रुटे ने कहा, ये टैरिफ रूस को तुरंत प्रभावित करते हैं, क्योंकि अब दिल्ली पुतिन से फोन पर पूछ रही है, मैं आपका समर्थन करता हूं, लेकिन आप अपनी रणनीति समझाएं, क्योंकि मुझे अमेरिका के 50 प्रतिशत टैरिफ का सामना करना पड़ रहा है। पिछले महीने ट्रंप ने भारत पर 25 प्रतिशत पारस्परिक टैरिफ और रूसी तेल खरीदने की सजा के रूप में अतिरिक्त 25 प्रतिशत टैरिफ लगाया था। जनवरी में सत्ता में वापसी के बाद से ट्रंप कई देशों पर पारस्परिक टैरिफ लगा चुके हैं। उन्होंने भारत पर आरोप लगाया कि रूसी तेल खरीदकर नई दिल्ली मॉस्को के यूक्रेन पर हमलों को बढ़ावा दे रही है।

ब्रेस्ट सर्जरी ने ली 14 साल की लड़की की जान

घरवालों को बाद में पता चली ये बात; अब हो रही जांच की मांग

मेक्सिको, एजेंसी। मेक्सिको से एक हैरान कर देने वाली घटना सामने आई है। यहां पर एक 14 साल की बच्ची बच्ची की कथित तौर पर ब्रेस्ट सर्जरी के बाद मौत हो गई। उसके पिता ने दावा किया है कि इस सर्जरी के बारे में उन्हें जानकारी नहीं दी गई।

दरअसल, द सन की एक रिपोर्ट में बताया गया कि किशोरी की पहचान पालोमा निकोल अरेलानो एस्कोबेडो के तौर पर हुई है। पिता के दावों के बाद मामले में जांच शुरू कर दी गई है।

जानकारी के अनुसार, इस सर्जरी के करीब एक हफ्ते के बाद 20 सितंबर को किशोरी की मौत हो गई। हालांकि, उनके मृत्यु प्रमाणपत्र में मौत की वजह सांस से जुड़ी समस्या को बताया गया है। हालांकि, मृतक किशोरी के पिता का दावा है कि उनकी बेटी की मौत की जिम्मेदार कॉस्मेटिक सर्जरी ही है।

मृतका के पिता कार्लोस का कहना है कि सच्चाई को छिपाने के प्रयास में उसके मृत्यु प्रमाण पत्र में मौत की वजह बीमारी को बताया गया है। पिता ने यहां तक दावा कर दिया कि उन्हें अपनी बेटी की सर्जरी के बार में अंतिम संस्कार के समय तक नहीं पता था। जब उन्होंने उसके शरीर पर घाव के निशान को देखा और स्तन प्रत्यारोपण देखा, फिर उनका शक गहराया।

अधिकारियों पर पिता ने जताया शक मृतका के पिता ने अधिकारियों पर भी गहरा शक जताया है। उन्होंने कहा अधिकारियों मृत्यु प्रमाण पत्र तुरंत मुझे दे दिया। मुझे यह नहीं समझ आया कि उन्होंने इतनी जल्दी इसको कैसे बना लिया। इसके बाद किशोरी के पिता ने एक शिकायत भी दर्ज कराई है, जिसमें उन्होंने जवाबदेही की मांग की है। उनका कहना है कि मैं मांग करता हूँ कि सभी ज़िम्मेदार लोगों की जाँच की जाए।

जांच में जुटे अधिकारी: मेक्सिको के अधिकारियों ने इस मामले को लेकर पुष्टि करते हुए बताया कि वे पालोमा की मौत और कथित ऑपरेशन से जुड़ी परिस्थितियों की जांच कर रहे हैं। यह अभी तक स्पष्ट नहीं है कि यह प्रक्रिया कहां और किन परिस्थितियों में की गई।

डोनाल्ड ट्रंप ने खरीदी टिक टाक कंपनी

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका और चीन के बीच चल रहा टिक टाक विवाद अब खत्म हो गया है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने गुरुवार को इस सौदे के लिए कार्यकारी आदेश पर हस्ताक्षर कर दिया है। इसके साथ ही टिक टाक का परिचालन अब पूरी तरह से अमेरिकी निवेशकों के हाथों में आ गया है। ट्रंप ने इस डील को हमारे युवाओं के लिए गिफ्ट बताया है।

राष्ट्रपति ट्रंप ने व्हाइट हाउस में टिक टाक की .14 मिलियन की डील से जुड़े कार्यकारी आदेश पर हस्ताक्षर किए। उन्होंने बताया कि इस सौदे को लेकर उनकी चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग से भी बात हुई थी और उन्होंने इस ऐप को अमेरिका को सौंपने पर हरी झंडी दिखाई थी। ट्रंप ने शी जिनपिंग के प्रति सम्मान भी व्यक्त किया।

डील के बाद टिक टाक ऐप के 80 प्रतिशत शेयर अमेरिकी निवेशकों के हो गए हैं। इस समूह में प्रमुख निवेशक ओरेकल और सिल्वर लेक जैसी कंपनियां शामिल हैं जो अब ऐप के अमेरिकी वर्जन का परिचालन संभालेंगी।

ट्रंप ने कहा कि अमेरिका के युवा इस डील को चाहते थे इसीलिए यह कदम उठाया गया है। उन्होंने कहा कि यह सौदा स्वीकार करके हमने युवाओं को तोहफा दिया है। नए अमेरिकन वर्जन के परिचालन के लिए जो टीम बनी है उसमें चीनी कंपनी बाइट डांस का केवल एक सदस्य ही शामिल होगा जिससे ऐप पर अमेरिकी नियंत्रण मजबूत होगा।

टिक टाक पर लगातार डेटा चोरी करने और अमेरिकी युवाओं को गलत तरीके से प्रभावित करने के आरोप लगते रहे हैं। भारत में भी इन चिंताओं के कारण ही टिक टाक को बैन किया गया था। अमेरिका भी सुरक्षा कारणों से इस ऐप पर कार्रवाई करने की तैयारी में था लेकिन अब इस नई डील के बाद ऐप के अमेरिकी वर्जन का नियंत्रण और उसके नियम अमेरिका खुद तय करेगा।

अमेरिका ने 30 साल बाद 73 वर्षीय महिला हरजीत कौर को बेड़ियों में बांधकर बिना कोई वार्निंग दिए भारत किया डिपोर्ट

वाशिंगटन, एजेंसी। डोनाल्ड ट्रंप के कड़े इमिग्रेशन रुख के बीच एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है, जिसमें अमेरिका में 30 साल से अपने परिवार के साथ रह रहीं 73 वर्षीय हरजीत कौर को बिना कोई वार्निंग दिए भारत वापस भेज दिया गया। पंजाब के मोहाली की रहने वाली हरजीत कौर ने लगभग 30 साल तक अमेरिका में अपने बच्चों और परिवार के साथ जीवन बिताया, लेकिन वैध दस्तावेजों के अभाव में अमेरिकी प्रशासन ने उन्हें भारत भेज दिया।

हरजीत कौर की गिरफ्तारी एक रूटीन इमिग्रेशन जांच के दौरान हुई, जिसके बाद उन्हें कड़ी सुरक्षा में लॉस एंजेलिस से जॉर्जिया तक ले जाया गया और फिर चार्टर्ड फ्लाइट के जरिए दिल्ली भेजा गया। इस पूरी प्रक्रिया में उन्हें हथकड़ी और बेड़ियों में बांधकर रखा गया, जो उनके परिवार और समुदाय के लिए बड़े आघात की बात बनी। उनका वकील दीपक आहलुवालिया ने बताया कि उनके घुटनों की हाल ही में सर्जरी हुई थी और लंबे समय तक कंबल पर फर्श पर सोने की वजह से उनकी सेहत पर बुरा असर पड़ा। हरजीत कौर ने 1992 में अपने दो बेटों के साथ अमेरिका की राह पकड़ी थी, और 2012 में उनका असाइलम केस खारिज हो गया था। इसके बावजूद वे नियमित रूप से हर छह महीने में इमिग्रेशन एंड कस्टम्स एन्फोर्समेंट के सामने रिपोर्ट करती रहीं। उनके परिवार ने अधिकारियों से भरोसा भी लिया था कि दस्तावेजों की प्रक्रिया पूरी होने तक वे अमेरिका में रह सकती हैं, लेकिन हालिया कार्रवाई ने सबको हैरान कर दिया। इस घटना के बाद, हरजीत के परिवार और समुदाय ने अमेरिकी प्रशासन के इस फैसले का विरोध करते हुए उनकी रिहाई की मांग की थी, लेकिन इसके बावजूद हरजीत को हिरासत में लेकर भारत भेजा गया।

सिर्फ 50 में हो गया इलाज! यूएस में लगते 1.7 लाख रुपए

भारत के हेल्थ सिस्टम से खुश हुई अमेरिकी महिला

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका की रहने वाली क्रिस्टन फिशर ने हाल ही में एक वायरल वीडियो साझा किया, जिसमें उन्होंने भारत में स्वास्थ्य देखभाल की सस्ती और सुलभ प्रणाली पर अपनी हैरानी जताई। क्रिस्टन ने बताया कि उनके अंगूठे में चोट लगने के कारण उन्होंने दिल्ली के एक सरकारी अस्पताल का दौरा किया, और इलाज का खर्च सिर्फ 50 (लगभग 60 सेंट) आया। उन्होंने वीडियो में कहा कि यह उनके लिए पूरी तरह चौंकाने वाला अनुभव था।

अमेरिका के मुकाबले भारी अंतर: क्रिस्टन ने बताया कि अगर वही इलाज अमेरिका में किया जाता, तो इसका खर्च लगभग 2,000 (लगभग 1.7 लाख) होता। उन्होंने कहा, यह अनुभव मेरे लिए दो कारणों से चौंकाने वाला था- पहला, अस्पताल मेरे घर से केवल 5 मिनट की दूरी पर था, और दूसरा, इलाज का खर्च मात्र 50 था।वे आगे कहती हैं कि भारत की स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली सुलभ, किफायती और प्रभावी है, जबकि अमेरिका में स्वास्थ्य सेवाओं का खर्च बहुत अधिक है।

इलाज का अनुभव: क्रिस्टन ने अपने वीडियो में अस्पताल के अनुभव का भी विवरण दिया। उन्होंने बताया कि डॉक्टर और नर्सें बहुत मददगार थीं, और इलाज बेहद तीव्र और सुरक्षित था। उन्हें तुरंत बैंडेजिंग और आवश्यक दवाइयाँ मिल गईं, और कोई जटिल प्रक्रिया या लंबा इंतजार नहीं करना पड़ा।उन्होंने यह भी बताया कि अस्पताल की साफ-सफाई और प्रबंधन प्रणाली ने उन्हें आश्वस्त किया कि भारत में सरकारी स्वास्थ्य सेवाएँ उच्च गुणवत्ता वाली हैं।

सोशल मीडिया पर वायरल: क्रिस्टन का वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो गया। ट्विटर, पर लोग उनके अनुभव को साझा कर रहे हैं और भारत की स्वास्थ्य सेवाओं की तारीफ कर रहे हैं। वीडियो में उन्होंने स्पष्ट किया कि भारत का स्वास्थ्य मॉडल सस्ती, तेज और भरोसेमंद है, जो विकसित देशों के मॉडल से कई मामलों में बेहतर है।विशेषज्ञों का कहना है कि भारत में सरकारी अस्पतालों की सस्ती चिकित्सा सेवाएँ विशेष रूप से ग्रामीण और मध्यम वर्गीय परिवारों के लिए वरदान साबित होती हैं।

लंबी खूबसूरत महिलाओं का दीवाना! लाश से बनाता शारीरिक संबंध, फिर खा जाता कच्चा

टोक्यो, एजेंसी। दुनिया में खूबसूरती के कद्रदान बहुत हैं लेकिन क्या होगा अगर कोई अपनी इस चाहत में हदें पार कर दे? जापान का सगावा ऐसा ही एक व्यक्ति था जिसकी आशिकी इतनी गहरी थी कि वह लंबी और खूबसूरत लड़कियों को खाने तक का शौक रखता था। फिर उन्हें मारकर उनकी लाशों के साथ संबंध बनाता और कच्चा खा जाता।

सगावा जो कोबे जापान का निवासी था 1981 में पेरिस में पढ़ रहा था। वहीं उसने रेनी हार्टवेल्ट नामक 25 वर्षीय लंबी और बेहद सुंदर महिला को देखा और उसकी खूबसूरती पर फिदा हो गया। दोनों पेरिस में एक ही समय पढ़े-लिखे थे लेकिन सगावा की चाहत इतनी बीमार थी कि वह रेनी को हासिल करने के लिए कोई भी कदम उठाने को तैयार था।

11 जून 1981 को सगावा ने रेनी को डिनर के लिए अपने घर बुलाया। डिनर के दौरान उसने अचानक रेनी को पीछे से गोली मार दी। इसके बाद उसने रेनी की लाश के साथ दुष्कर्म किया। उसकी यह लालसा यहीं तक सीमित नहीं रही। सगावा ने रेनी के शरीर के कई हिस्सों को काटकर दो दिनों तक खाया और कई हिस्सों को फ्रिज में रखा। सगावा शरीर के बाकी हिस्सों को फेंकने जा रहा था कि टपकते खून को देखकर लोगों ने पुलिस को सूचना दी। पूछताछ में उसने साफ कहा कि उसने रेनी को खाने के लिए मार डाला। हालांकि फ्रांस की अदालत ने उसे सनकी और मानसिक रूप से अस्थिर करार दिया और उसके खिलाफ सभी गंभीर आरोप हटा दिए। सगावा केवल दो साल जेल में रहा फिर कुछ समय मानसिक अस्पताल में गुजारा। बाद में वह जापान लौट गया जहां कानून के कारण उसे पकड़ना संभव नहीं था।

भारतीय मूल के डॉक्टर डॉ आनंद को हुई 14 साल की जेल

अमेरिका, एजेंसी। अमेरिका में भारतीय मूल के 48 वर्षीय डॉक्टर नील के. आनंद को स्वास्थ्य बीमा धोखाधड़ी के मामले में 14 साल की जेल की सजा सुनाई गई है।

पेनसिल्वेनिया के इस डॉक्टर ने मरीजों को अनावश्यक दवाओं के बैग्स थमाकर बीमा कंपनियों से 2.4 मिलियन डॉलर (लगभग 20 करोड़ रुपये) से अधिक ऐंठ लिए।

अदालत ने उन्हें 2 मिलियन डॉलर से अधिक की क्षतिपूर्ति और इतनी ही रकम जब्त करने का भी आदेश दिया। आरोप है कि आनंद ने न केवल मरीजों को गैर-जरूरी दवाएं दीं, बल्कि बिना लाइसेंस वाले इंटर्न्स से नियंत्रित दवाओं के लिए प्री-साइन किए गए प्रिस्क्रिप्शन भी लिखवाए।

आनंद ने जांच से बचने के लिए धोखाधड़ी से कमाई गई 1.2 मिलियन डॉलर की राशि को एक रिश्तेदार के खाते में ट्रांसफर कर दिया। उन्होंने दावा किया कि वह 9/11 हमलों के पीड़ितों का इलाज कर चुके हैं और अमेरिकी नौसेना में चिकित्सक के रूप में सेवा दे चुके हैं, लेकिन जज ने उनकी दलीलों को खारिज करते हुए कहा कि उनकी हरकतें लालच और अवैध मुनाफे से प्रेरित थीं। अदालती दस्तावेजों के अनुसार, आनंद ने मेडिकेयर, यूएस ऑफिस ऑफ पर्सनल मैनेजमेंट (ह्क्क्रू), इंडिपेंडेंस ब्लू क्रॉस और एंथम जैसी बीमा योजनाओं में झूठे और धोखाधड़ी वाले दावे जमा किए।

बांग्लादेश में महालया से अब तक 3 मंडपों में मूर्तियां खंडित

ढाका, एजेंसी। बांग्लादेश के अंतरिम पीएम डॉ. मुहम्मद यूनुस ने इस साल दुर्गा पूजा से पहले कई इलाकों का दौरा कर हिंदू समुदाय को सुरक्षा का भरोसा दिलाया था। उन्होंने कहा था कि त्योहार शांतिपूर्वक और सम्मान के साथ संपन्न होगा। लेकिन महालया (21 सितंबर) से ठीक पहले शुरू हुई प्रतिमा तोड़फोड़ ने भरोसे पर सवाल खड़े कर दिए हैं। अब तक जमालपुर, झेनैदह और सतखीरा जिलों में 3 प्रतिमाओं पर हमला हुआ है। यूनुस के गृह मंत्री जहांगीर आलम चौधरी ने हाल की मूर्ति तोड़फोड़ को अलग-थलग घटनाएं करार दिया और मामले को गंभीर न मानने का संदेश देने की कोशिश की। उन्होंने कहा कि दुर्गा पूजा शांतिपूर्वक होगी, लेकिन किसी भी उकसावे या गलत जानकारी फैलाने वालों पर सख्त कार्रवाई होगी। उनके इस बयान को हिंदू समुदाय ने धमकी की तरह लिया, क्योंकि घटना की निंदा करने और दोषियों को पकड़ने के बजाय सरकार ने चेतावनी उन्हीं को दी, जो अपनी सुरक्षा की मांग कर रहे हैं। उधर, सनातनी जागरणी जोत का दावा है कि देशभर में इस बार 700 से अधिक मंडप जोखिम में हैं। संगठन ने सेना की तैनाती की मांग की है। सतखीरा जिले को सबसे संवेदनशील बताया है, जहां 55 मंडप चिन्हित हैं। हिंदू बौद्ध ईसाई एकता परिषद के महासचिव मनीन्द्र कुमार नाथ ने कहा, पूजा रुकेगी नहीं।

30 मिनट इंतजार कराया, फोटो तक जारी नहीं हुई

ओवल, एजेंसी। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने गुरुवार को वाइट हाउस स्थित ओवल ऑफिस में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और पाकिस्तान के सेना प्रमुख जनरल असीम मुनीर से मुलाकात की। भारत के साथ ट्रेड वार्ता के बीच यह मुलाकात कई मायनों में अहम है। ट्रंप ने मुलाकात से पहले शहबाज शरीफ को महान नेता जरूर बताया, लेकिन मुलाकात के लिए उन्हें काफी इंतजार कराया। इतना ही नहीं, अभी तक अमेरिकी सरकार के द्वारा कोई आधिकारिक तस्वीर या वीडियो तक जारी नहीं किया गया है।

आपको बता दें कि आमतौर पर वाइट हाउस विदेशी नेताओं के साथ राष्ट्रपति की मुलाकात को मीडिया के लिए सार्वजनिक करता है, लेकिन इस बार ऐसा नहीं हुआ। बैठक की जानकारी केवल पाकिस्तान के आधिकारिक सोशल मीडिया अकाउंट्स पर साझा की गई।

पाकिस्तानी के प्रधानमंत्री कार्यालय के अनुसार, बैठक लगभग आधे घंटे देर से शुरू हुई क्योंकि राष्ट्रपति ट्रंप उस दौरान कार्यकारी आदेशों पर हस्ताक्षर कर रहे थे। बैठक में अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस और विदेश मंत्री मार्को रुबियो भी मौजूद रहे। पाक पीएमओ ने दावा किया कि बातचीत सकारात्मक माहौल में हुई। वहीं, वाइट हाउस प्रेस पूल की कुछ तस्वीरों में मुनीर और शरीफ को वाइट हाउस परिसर में इंतजार करते देखा गया। इससे पहले दिन में राष्ट्रपति ट्रंप ने तुर्की के राष्ट्रपति रेसेप तैयप एर्दोग़ान से भी मुलाकात की थी, जिसकी लाइव कवरेज और संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस भी हुई थी।

यह मुलाकात 2019 के बाद पहली बार हुई है जब पाकिस्तान के किसी प्रधानमंत्री ने अमेरिकी राष्ट्रपति से औपचारिक द्विपक्षीय बातचीत की है। उस समय तत्कालीन प्रधानमंत्री इमरान खान ने राष्ट्रपति ट्रंप से मुलाकात की थी। शहबाज शरीफ इस समय अमेरिका में संयुक्त राष्ट्र महासभा के 80वें सत्र में शामिल होने पहुंचे हैं। इसी बीच भारत के विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने न्यूयॉर्क में आयोजित जी20 विदेश मंत्रियों की बैठक में पाकिस्तान का नाम लिए बिना आतंकवाद पर कड़ा बयान दिया। उन्होंने कहा, विकास के लिए सबसे बड़ा खतरा आतंकवाद है। दुनिया को आतंकवाद के प्रति न तो सहिष्णुता दिखानी चाहिए और न ही उसे स्थान देना चाहिए। जो भी देश आतंकवाद के खिलाफ कदम उठाता है।

10 स्किन फ्रेंडली टिप्स फॉर ऑफिस

1. अपनी डेस्क पर पानी की बोतल हमेशा रखें ताकि आपको याद रहे कि आपको रेगुलर पानी पीते रहना है। ऑफिस में काम करने वाले अधिकतर लोग डिहाइड्रेशन की समस्या जूझते हैं क्योंकि वे अपने काम में इतना रम जाते हैं कि उन्हें अपने शरीर की मांग का पता नहीं चल पाता। यही फर्क स्किन पर भी दिखता है।

2. आपका दिमाग सुचारू रूप से काम करता रहे, इसके लिए आप कॉफी का साथ नहीं छोड़ते। आपकी डेस्क पर कॉफी का कप हमेशा रहता है तो आपके लिए घबराने वाली बात है। कॉफी से बेहतर है कि आप चाय पिएं लेकिन यह भी सही मात्रा में। दरअसल चाय में स्किन फ्रेंडली एंटिऑक्सिडेंट्स होते हैं।

3. ब्यूटी एक्सपर्ट विघा टिकारी के अनुसार, अपने चेहरे को लंच टाइम पर पानी से धो डालिए। आधे घंटे बिना मेकअप के रहिए, स्किन को सांस लेने दीजिए। संभव हो तो फेस वॉश साथ रखिए, इससे अपने चेहरे का मेकअप हटा डालिए। याद रखिए कि मेकअप त्वचा के रोमछिद्रों को बंद कर देता है और ब्लैकहेड्स/एक्ने को बढ़ाता है।

4. यदि आपके बैठने की जगह खिड़की के पास है और वहां ब्लाइंड्स लगे हैं तो ध्यान रखिए कि आपने सनस्क्रीन चेहरे पर लगाया हो। भले ही आपके चेहरे पर सूरज की रोशनी सीधी न पड़ रही हो पर इससे भी स्किन टैन तो होती ही है।

5. एयरकंडीशन आपकी स्किन के मॉयश्चर को चुराता है। यदि एसी सीधे आपकी आर है तो उसे टर्न कर दीजिए। अपने ड्रॉअर में मॉयश्चराइजर रखिए, इसे हर दो-तीन घंटे पर अपनी खुली स्किन पर अप्लाई कीजिए।

6. यदि आप लंबे समय तक सीट बैठे हैं तो अपने पैर को खुली हवा में सांस तो लेने दीजिए। जूते/सैंडिल उतार दीजिए। यदि आपके पैर लंबे समय तक बंद रहते हैं तो फंगल फूट इंफेक्शन होने की आशंका रहती है।

7. ज्यादा देर तक कंप्यूटर स्क्रीन की आर देखते मत रहिए। स्क्रीन से आने वाली अल्ट्रावॉयलेट किरणें स्किन को टैन करती हैं और आंखों के नीचे डार्क सिंकल बनाती हैं। बेहतर होगा कि कंप्यूटर पर एंटीग्लेयर कोटिंग हो। सनस्क्रीन का प्रयोग करना चाहिए और बीच-बीच में अपनी आंखे स्क्रीन पर से हटाते रहिए।

8. यदि आप कोई दवा ले रहे हैं तो उसे छोड़िए मत। ऐसा बिल्कुल नहीं होना चाहिए कि लंबे समय तक काम करने के चक्कर में आप अपनी दवा लेना भूल जाएं।

9. लंच ब्रेक या टी ब्रेक के समय सिगरेट पीने वालों के ग्रुप से दूर रहिए। ऐसा नहीं कि आप तो सिगरेट नहीं पीते लेकिन इन लोगों के साथ हंसी-ठट्ठा करने के लिए इनके साथ शामिल हो जाते हैं।

10. लंच में बिना ड्रेसिग वाली सलाद खाएं। हरी पत्तोदार सलाद और टमाटर इसमें जरूर शामिल हो। इनमें खूब मिनरल और विटामिन होते हैं जो स्किन के लिए अच्छा है, कहती हैं डाइटीशियन इति भल्ला। अपने बैग में एक फ्रूट जरूर कैरी करें और इसे खाएं भी।

सजावट सलाद की

हमारे भोजन में सलाद का महत्त्वपूर्ण स्थान हैं। क्योंकि सलाद पौष्टिकता से भरपूर होता हैं। सलाद में मूली, गाजर, ककड़ी, विविध प्रकार के फल, हरी पत्तेदार सब्जियां, बींस, धीनया, पूदीना, पार्सले, दालों व चने का उपयोग किया जा सकता हैं।

- सलाद का नियमित सेवन करने से कब्ज जैसी बीमारी से छुटकारा मिल जाता हैं।
- सलाद खाने से आंखों की ज्योति बरकरार रहती हैं। और चेहरे पर चमक आती हैं।
- सलाद पचने में आसान होता हैं। तथा कैलोरी की मात्रा कम होने से इस का भरपूर सेवन किया जा सकता हैं।
- सलाद की ड्रेसिंग के लिए ज्यादातर तेल का प्रयोग किया जाता है। लेकिन यदि आप तेल का प्रयोग न करना चाहें तो स्किम्ड मिल्क के दही की सौस या विविध फलों के गूदों से बनी सौस का प्रयोग कर के सलाद को रूचिकर बना सकते हैं।
- सलाद को सजाने के लिए सिरका, नींबू का रस, मस्टर्ड चटनी, नमक व कालीमिर्च का प्रयोग करते हैं। भुने सफेद तिल, भुनी मूंगफली व भुनी चने का प्रयोग कर के सलाद की गुणवत्ता को कई गुना बढ़ाया जा सकता हैं।

कोथम्बीर वड़ी

सामग्री: 1 कप बेसन, 1/2 कप बारीककटी हुई हरी धनिया, 2 टेबलस्पून तेल, 4-6 लहसुन बारीक कटा हुआ, 3-4 हरी मिर्च बारीक कटी हुई, 1/4 कप भूनी व दरदरी कूटी हुई मूंगफली, 1 टीस्पून शक्कर, नमक स्वादानुसार, तलने के लिए तेल।

विधि: तेल गर्म करके लहसुन व हरी मिर्च डालें। पानी, नमक व शक्कर डालकर उबालें, फिर बेसन डालकर चलाएं। मूंगफली व कटी हुई हरी धनिया डालकर मिला लें। जब मिश्रण गाढ़ा होने लगे तब चिकनाई लगी थाली में डालकर फैला लें और ठंडा होने दें। मनचाहे आकार में काट लें और गरम तेल में फ्राई करें।

फैशनेबल हैरम पैंट्स

जमाना अब एक्सपेरिमेंटल का है, तभी तो युवा अपने कपड़ों में भी एक्सपेरिमेंट कर रहे हैं, इसी की देन है हैरम पैंट जो कि युवतियों की अब खास पसंद बन गई है। युवतियां गैर परंपरागत ड्रेस को अधिक तवज्जे दे रही हैं जिसमें उनका लुक बिल्कुल ही अपरंपरागत लगता है।

हैरम पैंट्स फ्लेयर पैंट्स है तो कि बॉट्म से बिल्कुल संकरी होती है। यह फैशनेबल तो है ही, साथ ही आरामदायक भी है। कुछ देशों में बैले नृत्य हैरम पैंट्स पहन कर ही किया जाता है क्योंकि इस डांस में कमर और हिप्स के मूवमेंट्स होते हैं जो कि इस पैंट में साफ झलकते हैं। भारतीय युवतियों के बीच सूट-सलवार काफी प्रचलित है और उनके लिए हैरम पैंट्स काफी उपयोगी साबित होगी। फैशन डिजाइनर कविता भरतिया कहती हैं, आजकल टाइट कपड़े फैशन में नहीं है बल्कि बैलून ड्रेस यानी फूली हुई ड्रेस फैशन में है, इसमें ड्रेस बाजू और बॉट्म से गुब्बारेनुमा फूली हुई होती है। जो काफी स्टाइलिश दिखती है और इसी की तर्ज पर हैरम पैंट्स भी फैशन में है। पुराने समय में सैनिक इस तरह की पैंट्स पहनते थे जोकि बॉट्म से फूली हुई होती थी। हैरम पैंट्स कोई लेटेस्ट फैशन नहीं है बल्कि यह 70 और 80 के दशक का फैशन है। उसका परिष्कृत रूप है। पहले जो हैरम पैंट्स पहनी जाती थी वे लंबी कुर्ती के साथ पहनी जाती थी। मगर अब लड़कियां हैरम पैंट्स टीशर्ट, बैकलेस टॉप और हैंगिग टॉप के साथ पहन रही हैं जोकि हैरम पैंट्स का मॉडर्न लुक है। हैरम पैंट्स में फिगर बहुत ही आकर्षक लगती है, अगर आप अपनी कमर को हाईलाइट करना चाहती है तो पैंट्स पर बैल्ट भी लगा सकती है।

जिन लड़कियों के चौड़े हिप्स होते हैं, उनके लिए यह ड्रेस बहुत ही उपयुक्त है, क्योंकि इस ड्रेस में चौड़े हिप्स छिप जाते हैं और फिगर बहुत ही आकर्षक लगती है। आप सरोजनी नगर मार्केट और जनपथ मार्केट में हैरम पैंट्स खरीद सकते हैं, जिनकी कीमत 250 रूपये से शुरू है। अगर आप पार्टी या डिस्कोथेक में जा रहे हैं तो थाई कट्स हैरम पैंट्स पहन सकते हैं, जिस पर सिल्कवर व गोल्डन थ्रेड से वर्क किया है। इसके अलावा क्रिस्टल व स्टोन वर्क भी है और यह कई फ्रैबिक में उपलब्ध है जिसमें सॉटन, कॉटन, जॉर्जट हैं। अगर आप कमर को हाईलाइट करना चाहते हैं तो चौड़ी बैल्ट लगायें। हैरम पैंट्स बॉट्म से एकदम संकरी होती है इसलिए इस पर पर कोल्हापुरी चप्पल या जूतियां पहनें।

टाई को नहीं कह सकते गुडबाय

टाई की क्वालिटी आपकी पसंद और सेंस को बताती है। यूं तो मार्केट में कई मैटीरियल की टाई उपलब्ध है लेकिन सिल्क और वूल-ब्लेंडेड टाई हर तरह की शर्ट और सूट के साथ मैच करती है। टाई को खरीदते समय हमेशा उसे छूकर महसूस करें, वह सॉफ्ट और स्मूद होनी चाहिए। बेहतरीन और बढ़िया क्वालिटी की टाई दो पीसेज में नहीं बल्कि तीन पीसेज में सिली होती है। यही नहीं, टाई का पतला छोर चौड़े छोर के पीछे के बिल्कुल बीच में आता है। उस टाई को मत खरीदिए, जिसमें हाथों पर लपेटने से सिलवटें पड़ जाएं।

रंग और पैटर्न

टाई की खरीदारी में उसका रंग अहम स्थान रखता है। ब्लैक और व्हाइट कलर की शर्ट के साथ हर रंग की टाई चल जाती है। यदि ऐसा नहीं है तो फिर कंट्रास्ट सही रहता है लेकिन यह ध्यान रखना जरूरी है कि शर्ट के पैटर्न से टाई का पैटर्न मैच करना चाहिए, न कि विपरीत हो। यदि शर्ट का पैटर्न और कलर सॉफ्ट है तो बोल्ड कलर की टाई भी अच्छी लगती है लेकिन यदि शर्ट ब्राइट कलर की है तो टाई सोबर होनी चाहिए। चाहें तो शर्ट या सूट के पैटर्न या कलर से मैच करती टाई भी खरीदी जा सकती है। वैसे देखा जाए तो यलो, रेड, सिल्वर, ब्लू कलर की टाई ब्लैक कलर के सूट के साथ गजब ढाती है। ग्रे या ब्लू कलर के सूट के साथ उसी कलर की टाई जमती है। स्पेशल मीटिंग में दो रंग की सिंपल टाई अच्छी लगती है।

लंबाई और चौड़ाई

टाई की नॉर्मल चौड़ाई 3.25 इंच है और लंबाई 54 इंच। लेकिन लंबे लोगों पर 60 इंच की लंबाई वाली टाई जमती है। वैसे फैशन ट्रेंड बदलता भी रहता है। नॉट इस तरह से बांधी जानी चाहिए कि टाई बेल्ट के ऊपर ही खत्म हो जाए। आइडियली तो आधी इंच टाई बेल्ट पर लटकी होनी चाहिए। टाई की चौड़ाई व्यक्ति के शरीर पर निर्भर करती है। यदि व्यक्ति मोटा है तो चौड़ी टाई सही लगती है लेकिन यदि व्यक्ति पतला है तो टाई पतली ही होनी चाहिए।

नॉट

ऑफिस या बिजनेस मीटिंग में छोटी नॉट अच्छी लगती हैं। इसे बांधने में समय भी कम लगता है। यदि व्यक्ति लंबा है तो उसे लंबी टाई की जरूरत पड़ती है। लंबे-चौड़े व्यक्ति को विंडसर स्टाइल नॉट बांधनी चाहिए, जो अधिक ट्रेडिशनल है। यह बो की तरह गले पर बंधी नजर आती है।

टाईम पास

आज का राशिफल

मेष — चू चे चो ला ली लू ले लो आ
जमीन जायदाद का लाभ भी हो सकता है। आवास, मकान तथा वाहन की सुविधाएं मिलेंगी। कर्ज तथा रोगों से मुक्ति भी संभव है। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंग। रुपए पैसों की सुविधा मिल जाएगी। दैनिक सुख-सुविधा में वृद्धि व खर्चा बढ़ेगा। शुभांक-2-4-6

वृष — इ उ ए ओ वा वी वू वे वो
यात्रा प्रवास का सार्थक परिणाम मिलेगा। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। बनते हुए कार्यों में बाधा आएगी। कुछ आर्थिक चिंताएं भी कम होगी। नियोजित धन से लाभ होने लगेगा। घर के सदस्य मदद करेंगे और साथ ही आर्थिक बदहाली से भी मुक्ति मिलने लगेगी। शुभांक-3-4-5

मिथुन — का की कू घ ड छ के को हा
बढ़ते घाटे से कुछ राहत मिलने लगेगी। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। नौकरी में पदोन्नति की संभावना है। मित्रों से सावधान रहें तो ज्यादा उत्तम है। ज्ञानार्जन का वातावरण बनेगा। धार्मिक स्थलों की यात्रा का योग। शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। शुभांक-2-4-5

कर्क — ही हू हे हो डा डी डू डे डो
शत्रुभय, चिंता, संतान को कष्ट, अपव्यय के कारण बनेंगे। संतोष रखने से सफलता मिलेगी। नौकरी में स्थिति सामान्य ही रहेगी। शैक्षणिक क्षेत्र में उदासीनता रहेगी। मित्रों की उपेक्षा करना ठीक नहीं रहेगा। कार्यक्षेत्र में तनाव पैदा होगा। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। खान-पान में सावधानी रखें। शुभांक-4-6-7

सिंह — मा मी मू मे मो टा टी टू टे
महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। कामकाज में आ रही बाधा दूर होगी। बाहरी और अंदरूनी सहयोग मिलता चला जाएगा। लेन-देन में आ रही बाधा को दूर करने के प्रयास सफल होंगें। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभांक-4-6-8

कन्या — टो पा पी पू ष ण ठ पे पो
शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। बुरी संगति से बचें। नौकरी में सावधानी पूर्वक कार्य करें। अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। कोई धार्मिक यात्रा करेगें। शुभांक-2-5-7

तुला — रा री रु रे रो ता ती तू ते
सुबह-सुबह की महत्वपूर्ण सिद्धि के बाद दिन-भर उत्साह रहेगा। किसी लाभदायक कार्य के लिए व्ययकारक स्थितियां आज पैदा होगी। प्रसन्नता के साथ सभी जरूरी कार्य बनते नजर आएंगे। सभा-सोसायटी में सम्मान मिलेगा। प्रतिष्ठा बढ़ाने वाले कुछ सामाजिक कार्य संपन्न होंगे। शुभांक-3-5-7

वृश्चिक — तो ना नी नू ने नो य यी यू
कई प्रकार के हर्ष उल्लास के बीच आमोद-प्रमोद का दिन होगा। व्यावसायिक प्रगति भी होगी। स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार की अपेक्षा रहेगी। कुछ कार्य भी सिद्ध होंगे। व्यर्थ की भाग-दौड़ से यदि बचा ही जाए तो अच्छा है। ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि होगी और सज्जनों का साथ भी रहेगा। शुभांक-2-4-6

धनु — ये यो भा भी भू धा फा ढा भे
प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। अवरुद्ध कार्य संपन्न हो जाएंगे। मनोरथ सिद्धि का योग है। महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। स्त्री-संतान पक्ष का सहयोग मिलेगा। आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। आगे बढ़ने के अवसर लाभकारी सिद्ध हो रहे हैं। शुभांक-4-6-8

मकर — भे जा जी खी खू खे खो गा गी
कुछ आर्थिक संकोच पैदा हो सकते हैं। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंग। सभा-गोष्ठियों में मान-सम्मान बढ़ेगा। धार्मिक आस्थाएं फलीभूत होंगी। सुख-आनंद कारक समय है। लाभदायक कार्यों की चेष्टाएं प्रबल होंगी। सक्रियता से अल्प लाभ का हर्ष होगा। शुभांक-6-7-9

कुंभ — गू गे गो सा सी सू से सो दा
दिन-भर का माहौल आडंबरपूर्ण और व्ययकारी होगा। वरिष्ठ लोगों से कहासुनी वातावरण में तनाव पैदा करेंगे। संयमित भाषा का इस्तेमाल करें। कुछ कार्यक्रम बदलने होंगे। आवेग में आकर किये गए कार्यों का म्लान, अवसाद रहेगा। भाई-बहनों का प्रेम बढ़ेगा। आध्यात्मिक रुचि बनेगी। शुभांक-3-5-7

मीन — दी दू थ ज्ञ ज दे दो चा ची
व्यवसायिक अभ्युदय भी होगा और प्रसन्नताएं भी बढ़ेगी। कामकाज की व्यस्तता से सुख-आराम प्रभावित होगा। अधिकारी वर्ग से आपकी निकटता बढ़ेगी। धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। रुका हुआ लाभ आज प्राप्त हो सकता है। नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंग। शुभांक-2-4-6

काकुरो पहेली - 2601

■	16\	23\	■	■	■	■	■	■	■
\17			11\	■	10\	30\	■	23\	8\
\18				\9			\7		
■	\10			24\17			7\15		
■	■	7\9			\19				■
■	4\13				3\9			11\	4\
\5			9\9			4\6			
\6				4\5			4\6		
■	■	\3			\6				■
■	■	\9			■	\4			■

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए.किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणतः:

24\15	1	2	3	4	5
7					
8					
9					

1+2 = 3
1+3 = 4
7+9 = 16
8+9 = 17

काकुरो - 2600 का हल

■	16\	23\	■	■	■	■	■	■	■
\17	9	8	11\	■	3\	10\	■	6\	16\
\21	7	9	5	\4	1	3	\8	1	7
■	\7	6	1	7\6	2	4	24\11	2	9
■	■	6\4	3	1	\14	2	9	3	■
■	3\7	1	2	4	4\8	1	7	30\	3\
\5	2	3	24\3	2	1	15\19	8	9	2
\12	1	2	9	10\10	3	7	16\7	6	1
■	■	\8	7	1	\24	8	9	7	■
■	■	\17	8	9	■	\15	7	8	■

लॉफिंग जोन

दो मित्र आपस में बात कर रहे थे। एक मित्र ने कहा- 'यार, जब मैं सूट पहनकर सब्जी लेने जाता हूँ तो दुकानदार मुझे महँगी सब्जी देता है और जब गंदे कपड़े पहनकर जाता हूँ तो सस्ती देता है।'

दूसरे मित्र ने सुझाव दिया- 'यार तुम कटोरा लेकर जाया करो, मुफ्त में ही दे देगा।'

□ □ □

अपनी पत्नी के चिड़चिड़े और गुस्सैल स्वभाव से परेशान रमन एक बार किसी महात्मा के दर्शन के लिए और महात्मा से पूछा- महाराज, कोई ऐसा उपाय बताइए जिससे मेरी पत्नी हर बात में क्लेश और अपना चिड़चिड़ापन छोड़ दें।

महात्मा ने बड़े इत्मीनान से जवाब दिया- बेटे! अगर इसका उपाय मुझे पता होता तो मैं संन्यास ही क्यों लेता।

□ □ □

पत्नी ने उलाहना देते हुए पति से कहा- 'क्योंजी, आप तो विवाह से पहले कहा करते थे कि तुम्हारी छोटी से छोटी इच्छा पूरी करूँगा।'

पति- 'हाँ, पर अब तक राह देख रहा हूँ कि तुम्हारी कौन-सी इच्छा इतनी छोटी है, जिसे मैं पूरी कर सकूँगा।'

□ □ □

फिल्म वर्ग पहेली- 2601

1		2	■	3	4		5		6
	■	7	8	■		■		■	
■	9	■	10					■	■
11				■	12				13
	■	■	14	15	■	■		■	
16		17	■	18			■	19	
	■	20			■	■	21		■
22	23		■	24		25		■	26
■		■	■		■		■	■	
27				■	28				

बायें से दायें:-
१. नाना, सलमान, सीमा, मनीषा की 'आज मैं ऊपर' गीत वाली फिल्म-३
३. 'जै जै शिवशंकर' गीत वाली संजीव कुमार, राजेश, मुमताज की फिल्म-३,३
७. धर्मेन्द्र, मनोजकुमार, सायराबानो की 'आज की रात नया चांद' गीत वाली फिल्म-२
१०. 'एक तेरा साथ हमको' गीत वाली अजय, मा.सत्यजीत, अलका की फिल्म-३
११. मनोजकुमार, बबीता की 'वो परी कहां से लाऊं' गीत वाली फिल्म-४
१२. 'राम हो क्या तुम' गीत वाली राजेश खन्ना, श्रीदेवी की फिल्म-२,३
१४. फिल्म 'बावरे नैन' में राजकुमार के साथ नायिका कौन थी?-२
१६. अमिताभ, नीतूसिंह की 'छूकर मेरे मन को' गीत वाली फिल्म-३
१८. 'रंग चला बहार चली' गीत वाली राजेश खन्ना, ऋषि कपूर, पूनम ढिल्लों की फिल्म-३
१९. नसीरूद्दीनशाह, अतुल अग्निहोत्री, पूजा भट्ट की 'ये उजली चांदनी जब' गीत वाली फिल्म-२
२०. 'दिल ने चाहा है क्या' गीत वाली सनी देओल, फरहा की फिल्म-३
२१. फिल्म 'चोरी चोरी' में अजय देवगन के साथ नायिका कौन है.?-२
२२. संजयदत्त, फरहा की 'ओ गुड़िया ओ बहना' गीत वाली फिल्म-३
२४. 'तूने जिंदगी में आके' गीत वाली बॉबी देओल, अक्षय खन्ना, अमीषा पटेल की फिल्म-४
२७. अमिताभ, वहीदा, नीतू सिंह की 'हमका ऐसा वैसा ना' गीत वाली फिल्म-४
२८. फिल्म 'मासूम' का नायक था-२,३

ऊपर से नीचे:-
१. 'वादा रहा' गीत वाली अमिताभ, अजय, अक्षय, ऐश्वर्या की फिल्म-२
२. मिथुन चक्रवर्ती, मुनमुन सेन की १९८६ की एक फिल्म-२
४. 'एक चतुर नार' गीत वाली सुनीलदत्त, किशोरकुमार, सायराबानो की फिल्म-४
५. अनिल, जैकी, पूजा भट्ट की 'जो मांगा था ख्वाब में' गीत वाली फिल्म-२,१,२
६. 'रूकी रूकी सी जिंदगी' गीत वाली आफताब, उर्मिला की फिल्म-२
८. अजय देवगन, अक्षय, उर्मिला की 'ये ताजगी ये सादगी' गीत वाली फिल्म-४
९. 'राजा की आयेगी बरात' गीत वाली राजकपूर, नर्गिस की फिल्म-२
११. राकेश रोशन, हेमा की 'आज उनसे पहली' गीत वाली फिल्म-३,२
१३. 'जाना तेरे प्यार में' गीत वाली अश्मित पटेल, इमरान हाशमी, मल्लिका की फिल्म-३
१५. प्रदीपकुमार, बीना राय की 'पाँव छू लेने दो' गीत वाली फिल्म-५
१७. 'रूखी सूखी रोटी' गीत वाली अनिलकपूर, रानी मुखर्जी की फिल्म-३
१९. फिल्म 'प्यार कोई खेल नहीं' में महिमा के साथ नायक कौन था-२
२१. 'अकेले हैं चले आओ' गीत वाली राजेशखन्ना, बबीता की फिल्म-२
२३. राजकुमार, राजेश खन्ना, माला की 'चुपके से दिल देदे' गीत वाली फिल्म-३
२५. फिल्म 'गाँवार' में नायक कौन था-३
२६. 'मैं प्यासा तुम सावन' गीतवाली फिल्म-३

फिल्म वर्ग पहेली- 2600

दे	व	■	प्रे	म	क	हा	नी	■	जी
व	■	तु	म	■	सू	■	तू	फा	न
ता	ल	■	पु	का	र	■	सिं	■	त
■	क्ष्य	■	जा	■	■	तो	ह	फा	■
नी	■	मे	री	जं	ग	■	■	गु	स
क	बी	ला	■	ग	■	प्या	■	न	■
री	■	■	सो	ल	वां	सा	ल	■	दा
■	जु	ग	नू	■	टे	■	व	ही	दा
ध	र्मा	■	■	■	ड	■	स्टो	■	गि
■	ना	जा	य	ज	■	चो	री	चो	री

सूडोकु -2601

	9				4			7
					7	9		
8								
4		5	8					
3				1				2
					9	7		6
								4
		3	5					
2			6				8	

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु -2600 का हल

7	8	5	2	6	3	1	4	9
4	3	1	9	7	5	8	2	6
2	6	9	1	4	8	7	5	3
3	1	4	6	8	9	5	7	2
9	5	8	7	2	4	6	3	1
6	7	2	5	3	1	9	8	4
5	2	7	3	9	6	4	1	8
1	4	6	8	5	2	3	9	7
8	9	3	4	1	7	2	6	5

शब्द पहेली - 2601

1	2		3		4	■	5		6	7
8		■		■	9			■	10	
	■	11				■	12	13	■	
14				■	15	16	■	17	18	
	■		■	19			20	■		■
21	22		23		■	24		25		26
■		■	27		28		■		■	
29		30	■	31		■	32			
	■	33	34	■	35				■	
36	37	■	38			■		■	39	
40				■	41					

बाएँ से दाएँ
1.अत्यावश्यक-6
5.कारागार,जेल-4
8.पानी,नीर-2
9.मीन,मत्स्य-3
10.लक्ष्मी,कमला-2
11.कलाकार,फनकार-4
12.मर्द,मादा का विलोम-2
14.हसरत,मुराद-4
15.कैद में,अवरुद्ध,रुका-2
17.भूमि,धरती-3
19.मतवासा,मदहोश-4
21.फिल्मी दुनिया-3,3
24.दुर्भाग्यशाली-5
27.ठोकर लगना,भिड़ना-4
29.दौंडी पीटना-3
31.सांप,सर्प-2
32.दाल-4
33.हूर,अप्सरा-2
35.गाड़ी चलाने वाला-4
36.पिता का छोटा भाई-2
38.पुत्र,बेटा-3
39.टौंटी,नलका-2
40.ललचाना,तड़फाना-4
41.टाऊन हाल, नागरिक भवन-2,4

ऊपर से नीचे
1.ईश्वर,अनश्वर-3,3
2.तेलहन-2
3.सुखद वस्तु, वर देना-4
4.करधनी,कमर पेटी-5
5.गलीचा-3
6.दिन-2
7.समस्या का हल-4
11.धरोहर,थाती-4
13.मिट्टी,धूल-2
16.चमकना-4
18.वायुसेना का एक विमान-3
19.इतराना-4
20.परत-2
22.जाप करना-3
23.किवाड़,द्वार-2
25.उदाहरणतः-4
26.परवरिश-3,3
28.राग छेड़ना-5
29.भेंट,मेल-मिलाप-4
30.दिया,दीपक-2
32.औषधालय, दवाखाना-4
34.खाली होना-3
37.छोटी सवारी गाड़ी-2
39.नया,नवीन-2

शब्द पहेली -2600 का हल

■	बि	रा	द	री	■	ज	य	मा	ला	■
बि	ल	■	श	■	का	य	म	■	श	व
रा	■	म	ह	क	ना	■	ज	रा	■	र्त
द	र	द	रा	■	■	सा	■	ग	रि	मा
र	■	हो	■	व	सु	ध	र	■	या	न
■	कु	श	ल	■	दा	■	जा	य	ज	■
मि	ली	■	क	रा	मा	त	■	म	■	अ
ला	न	त	■	त	■	■	प	रा	धी	न
व	■	ल	ता	■	अ	च	र	ज	■	ब
ट	ब	■	ली	न	ता	■	तं	■	मी	न
■	स	ला	म	त	■	मि	त्र	व	त	■

टीवीके ने करूर भगदड़ की सीबीआई या एसआईटी से जांच कराने की मांग की

एजेंसी
चेन्नई। तमिलगा वेत्री कझगम (टीवीके) की करूर में हुई रैली में 39 निर्दोष लोगों की जान लेने वाली हृदय विदारक भगदड़ की घटना के एक दिन बाद टीवीके ने मद्रास उच्च न्यायालय का रुख किया और घटना की सीबीआई या विशेष जांच दल (एसआईटी) से जांच कराने की मांग की। घायल पीड़ितों में से एक ने अभिनेता से राजनेता बने विजय की रैली पर प्रतिबंध लगाने की मांग करते हुए एक और याचिका दायर की है।रविवार और अदालत की छुट्टी होने के कारण टीवीके के वरिष्ठ पदाधिकारी निर्मल कुमार ने दोपहर न्यायमूर्ति धंदापडी के समक्ष उनके आवास पर घटना की सीबीआई या एसआईटी जांच की मांग की। मीडिया से बातचीत करते हुए निर्मल कुमार ने कहा कि इस मामले की सुनवाई मद्रास उच्च न्यायालय की मदुरै खंडपीठ द्वारा सोमवार को दोपहर 14:15 बजे की जाएगी। याचिका में उन्होंने इस दुखद घटना के पीछे पथराव और साजिश का आरोप लगाया और विस्तृत जांच की मांग की। इस बीच भगदड़ में घायल हुए लोगों में से एक सेंथिल कन्नन ने मद्रास उच्च न्यायालय में याचिका दायर कर विजय की रैली पर प्रतिबंध लगाने की मांग की। इस मामले की सुनवाई रविवार की शाम में होने की उम्मीद है। सेंथिल कन्नन ने याचिका में कहा है कि ऐसे आयोजनों में आने वाले लोगों के लिए पर्याप्त एहतियाती और सुरक्षा उपाय किए बिना रैली की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।

मोदी सरकार राष्ट्र की विविधता को एकजुटता में कर रही है परिवर्तित : केंद्रीय राज्य मंत्री डॉ. मुरुगन

भोपाल। केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण राज्य मंत्री डॉ. एल. आर. मुरुगन मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल के शिवाजी नगर स्थित श्री शारदा मंदिर में आयोजित बथुकम्मा उत्सव में शामिल हुए। इस मौके पर उन्होंने सभी को बथुकम्मा उत्सव की शुभकामनाएं दी और कहा कि फूलों के उत्सव के रूप में मनाया जाने वाला यह त्यौहार देश और दुनिया के महत्वपूर्ण उत्सवों में से एक है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की भावना को बढ़ावा दे रही है। इसी के अंतर्गत विभिन्न भाषाई संगम अलग-अलग राज्यों में आयोजित किया जा रहे हैं। काशी में आयोजित होने वाला तमिल संगम इसका एक उदाहरण है। केंद्रीय राज्यमंत्री डॉ. मुरुगन ने परिसर में स्थित मां शारदा मंदिर में पूजा अर्चना की। कार्यक्रम में भोपाल की महापौर मालती राय, विधायकगण भगवान दास सबनानी, रामेश्वर शर्मा, विष्णु खत्री, भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी पी. नरहरि सहित कई गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। इस अवसर पर कई सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी दी गईं।

सोनम वांगचुक की पल-पल की गतिविधि सीसीटीवी कैमरों में कैद

जोधपुर। लेह में हुई हिंसा के बाद प्रदर्शन में शामिल रहे पर्यावरण कार्यकर्ता सोनम वांगचुक को जोधपुर लाकर सेंट्रल जेल में रखा गया है। उन्हें यहां लाए 48 घंटे हो चुके हैं और इस दौरान जेल प्रशासन और पुलिस लगातार कड़ी निगरानी बनाए हुए है। जेल सूत्रों के अनुसार, सुरक्षा के लिहाज से वांगचुक को सेंट्रल जेल की विशेष सेल में रखा गया है। उनकी हर गतिविधि पर सीसीटीवी और वीडियो मॉनिटरिंग के जरिए पल-पल नजर रखी जा रही है। जेल के कायदों के मुताबिक ही उन्हें ट्रीट किया जा रहा है। सुरक्षा व्यवस्था को पुख्ता करने के लिए आरएसी के जवानों के साथ जेल प्रहरी भी लगातार चौकसी कर रहे हैं। इसके अलावा पुलिस का एक विशेष दस्ता भी निगरानी में तैनात है। वरिष्ठ जेल अधिकारियों से लेकर जिला और पुलिस प्रशासन तक वांगचुक की स्थिति पर लगातार अपडेट ले रहे हैं। जेल डीआईजी राकेश मोहन शर्मा और जेल एसपी प्रदीप लखावत मॉनिटरिंग कर रहे हैं। वहीं पुलिस कमिश्नर ओम प्रकाश सुरक्षा इंतजामों का पल-पल का फीडबैक ले रहे हैं। जिला कलेक्टर गौरव अग्रवाल भी इस पूरे मामले पर नजर रखे हुए हैं। स्वास्थ्य पर नजर, मेंटली तौर पर फिटसोनम वांगचुक को जेल मेनू के अनुसार नाश्ते के साथ खाना भी दिया जा रहा है। सूत्रों की मानें तो वांगचुक मेंटल तौर पर काफी मजबूत नजर आ रहे हैं।

सोनम वांगचुक की पल-पल की गतिविधि सीसीटीवी कैमरों में कैद

जोधपुर। लेह में हुई हिंसा के बाद प्रदर्शन में शामिल रहे पर्यावरण कार्यकर्ता सोनम वांगचुक को जोधपुर लाकर सेंट्रल जेल में रखा गया है। उन्हें यहां लाए 48 घंटे हो चुके हैं और इस दौरान जेल प्रशासन और पुलिस लगातार कड़ी निगरानी बनाए हुए है। जेल सूत्रों के अनुसार, सुरक्षा के लिहाज से वांगचुक को सेंट्रल जेल की विशेष सेल में रखा गया है। उनकी हर गतिविधि पर सीसीटीवी और वीडियो मॉनिटरिंग के जरिए पल-पल नजर रखी जा रही है। जेल के कायदों के मुताबिक ही उन्हें ट्रीट किया जा रहा है। सुरक्षा व्यवस्था को पुख्ता करने के लिए आरएसी के जवानों के साथ जेल प्रहरी भी लगातार चौकसी कर रहे हैं। इसके अलावा पुलिस का एक विशेष दस्ता भी निगरानी में तैनात है। वरिष्ठ जेल अधिकारियों से लेकर जिला और पुलिस प्रशासन तक वांगचुक की स्थिति पर लगातार अपडेट ले रहे हैं। जेल डीआईजी राकेश मोहन शर्मा और जेल एसपी प्रदीप लखावत मॉनिटरिंग कर रहे हैं। वहीं पुलिस कमिश्नर ओम प्रकाश सुरक्षा इंतजामों का पल-पल का फीडबैक ले रहे हैं। जिला कलेक्टर गौरव अग्रवाल भी इस पूरे मामले पर नजर रखे हुए हैं।

संघ की प्रार्थना में मंत्र का सामर्थ्य - डॉ. मोहन भागवत

एजेंसी
नागपुर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि संघ की प्रार्थना सिर्फ शब्द नहीं, बल्कि सामूहिक संकल्प और भाव का प्रतीक है। 1939 से स्वयंसेवक रोज शाखा में इस प्रार्थना का उच्चारण कर रहे हैं। इतने वर्षों की साधना से इसमें मंत्र जैसी शक्ति आ चुकी है। यह केवल कहने की बात नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष अनुभव का विषय है।

सरसंघचालक ने कहा कि संघ की प्रार्थना संपूर्ण हिन्दू समाज के ध्येय को व्यक्त करती है। इसमें पहला नमस्कार भारत माता को है, उसके बाद ईश्वर को। इसमें भारत माता से कुछ मांगा नहीं गया, बल्कि उनकी सेवा और राष्ट्र के वैभव की प्रतिज्ञा की गई है। मांगा गया है तो ईश्वर से शक्ति, भक्ति और समर्पण।

उन्होंने स्पष्ट किया कि प्रार्थना केवल शब्दों और अर्थ का मेल नहीं है, बल्कि उससे भारत माता के प्रति प्रेम और भक्ति झलकती है। यही

भाव इसे मंत्र का सामर्थ्य देता है। मोहन भागवत ने बताया कि शाखा में छोटे-छोटे बाल और शिशु स्वयंसेवक भी प्रार्थना के समय ध्यान और अनुशासन से खड़े रहते हैं। भले ही उन्हें शब्दों का अर्थ न समझ में आए, लेकिन भाव का असर उन पर होता है। उन्होंने कहा, ÷किसी भी शाखा में सबसे चंचल बाल स्वयंसेवक भी प्रार्थना के समय पूरी तन्मयता से खड़ा रहता है। यह भाव की शक्ति है, जिसके लिए किसी विद्वता की जरूरत नहीं होती। डॉ. भागवत ने कहा कि संघ का विश्वास है कि जब पूरा हिंदू समाज अपनी शक्ति का योगदान देगा, तभी भारत माता परम वैभव तक पहुंचेगी। इसके लिए पहले भाव, फिर अर्थ और उसके बाद शब्द की दिशा में बढ़ना होगा। लेकिन अगर गति तेज करनी है, तो शब्द से अर्थ और अर्थ से भाव की ओर भी जाना होगा।

उन्होंने कहा कि शब्द, अर्थ और भाव, ये तीनों का सामंजस्य संगीत में कम ही देखने को मिलता है। उन्होंने कहा, ÷जब मैंने पहली बार यह ट्रैक सुना तो तुरंत महसूस हुआ कि यह प्रार्थना को एक विशेष वातावरण में ले जाता है। उन्होंने बताया कि इसका निर्माण इंग्लैंड की भूमि पर हुआ, जो अपने आप में विशेष है।

इस अवसर पर हरीश भिमानी ने भावुक होकर कहा कि आज का दिन उनके लिए अविस्मरणीय है। उन्होंने कहा, भारत माता सबसे महत्वपूर्ण देवी हैं, जिनका मंदिर कहीं नहीं है। यह कार्य मेरे लिए सिर्फ अनुष्ठान नहीं, बल्कि अर्घ्य है। संगीतकार राहुल रानडे ने भी बताया कि यह विचार सबसे पहले हरीश भिमानी ने ही उनके सामने रखा था। समारोह में सरसंघचालक ने सभी कलाकारों का विशेष सत्कार किया।

लेफ्टिनेंट कमांडर दिलना और रूपा ने आठ माह में पचास हजार किलोमीटर की समुद्री यात्रा तय की

एजेंसी
नई दिल्ली। लेफ्टिनेंट कमांडर दिलना और लेफ्टिनेंट कमांडर रूपा समुद्री मार्ग के जरिये कई देशों की यात्रा पूरी करने वाली पहली भारतीय महिलायें हैं। लेफ्टिनेंट कमांडर दिलना के. केरल के कोझिकोड के परम्बिल कडावु गांव की रहने वाली हैं। दिलना के पिता दिवंगत टी. देवदास भी पूर्व सैन्य अधिकारी रहे हैं। उनके पति लेफ्टिनेंट कमांडर धनेश कुमार भी नौसेना अधिकारी हैं। लेफ्टिनेंट कमांडर दिलना को 2014 में लॉजिस्टिक्स अधिकारी के रूप में नियुक्त किया गया था। वह एनसीसी कैडेट भी रहीं हैं। वहीं, लेफ्टिनेंट कमांडर रूपा अलागिरिसामी पुडुचेरी की मूल निवासी हैं। इनके पिता अलागिरिसामी जीपी वायु सेना में पायलट रहे हैं। लेफ्टिनेंट कमांडर रूपा 2017 में नौसेना के आयुध कैडर में शामिल हुयी थीं। दोनों अधिकारियों की नाविका सागर परियोजना के दूसरे चरण की यात्रा दो अक्टूबर 2024 से गोवा से शुरू हुई जो 29 मई 2025 को समाप्त हुई थी। इस यात्रा में 238 दिन लगे और इस जहाज पर सिर्फ दो महिला अधिकारी ही मौजूद थीं। दोनों ने करीब आठ माह में 50 हजार किलोमीटर की समुद्री यात्रातय की है।

डिप्टी सीएम दिया कुमारी ने किया ग्रीन फिट मैराथन का फ्लैग ऑफ, दौड़े 5 हजार से अधिक रनर्स

एजेंसी
जयपुर। जीतने की चाह और एक दूसरे से ज्यादा फिट दिखने की होड़ के साथ 5000 से अधिक लोगों ने हेल्दी हार्ट और एन्वॉयरमेंट प्रोटेक्शन सन्देश के साथ मोशन ब्रेन्स की और से आयोजित दूसरी ग्रीन फिट मैराथन में उत्साह के साथ कदमताल की। डिप्टी सीएम, दिया कुमारी ने विद्याधर नगर स्थित सन एंड मून कॉम्प्लेक्स से ग्रीन फिट मैराथन के 3 किलोमीटर फन रन मैराथन का फ्लैग ऑफ किया। डिप्टी सीएम, दिया कुमारी ने इस अवसर पर फिट इंडिया अभियान और स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत स्वस्थ तन से स्वस्थ मन और अपने चारों ओर स्वच्छता रख कर एन्वॉयरमेंट प्रोटेक्शन का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि अच्छे स्वास्थ्य और ग्रीन एन्वॉयरमेंट के लिए हम सभी को तेज गति से चलना, दौड़ना और व्यायाम को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाना चाहिए। उन्होंने मोशन ब्रेन्स के इस आयोजन को महत्वपूर्ण बताया। इस अवसर पर बॉलीवुड सिंगर, रविंद्र उपाध्याय ने सभी प्रतिभागियों को अपने लाइव म्यूजिक परफॉरमेंस से मोटीवेट किया। इसके अलावा प्रेसिडेंट, जयपुर व्यापार महासंघ, सुभाष गोयल; खंडेलवाल हार्ट इंस्टीट्यूट के डॉ. संजय खंडेलवाल; एडिशनल कमिश्नर (साउथ) योगेश दाधीच; रीजनल हेड - केयर इंश्योरेंस, प्रेम पटवा और नितिन हुरकट; जी सी एल ड्रीम्स से रवि सिंघल; फोमिको मैट्रेस से रवि परसरामपुरिया सहित कई गणमान्य लोग इस मैराथन में उपस्थित रहे।

इससे पहले सुबह करीब 3 बजे से ही लोग सन एंड मून कॉम्प्लेक्स पर जुटना शुरू हुए। 5. 30 बजे पहली मैराथन में हजारों लोगों ने लगाई दौड़। ढोल नंगाड़ों और अपनों के मोटिवेशन के बीच युवाओं में फिटनेस के लिए क्रेज नजर आया। रविवार तड़के हजारों की संख्या में लोगों ने एकत्र होकर मैराथन को सफल बनाया। बढ़ते कदमों का उत्साह देख सुबह मॉर्निंग वॉक करने निकले लोग भी मैराथन के धावकों की हौसला अफजाई करते नजर आए। अल सुबह जयपुर से शुरू हुई मैराथन में लोगों में उत्साह देखते ही बन रहा था। ग्रीन फिट मैराथन में 7 साल के हृदय सैनी और 69 वर्ष के अजय आहूजा जैसे बुजुर्ग ने दौड़ लगाकर अपने हम उम्र नौजवानों को फिटनेस और खुश रहने का मंत्र दिया। आपको बता दें मैराथन में 10 और 5 किलोमीटर टाइम्ड रन तथा 3 किलोमीटर फन रन का आयोजन किया गया था।

सीएम भजनलाल शर्मा ने कामधेनु गोशाला में किया गौ-पूजन, गाय को खिलाया गुड़ व हरा चारा

एजेंसी
डीग। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि हमारी सनातन संस्कृति में गौ माता को विशेष महत्व दिया गया है तथा गाय को देवत्व का प्रतीक माना गया है। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने गौ संरक्षण और संवर्धन की दिशा में अभूतपूर्व कदम उठाते हुए पंजीकृत गौशाला के लिए मिलने वाले अनुदान को बढ़ाकर 50 रुपये प्रति गाय प्रतिदिन और छोटे बछड़ों के लिए 25 रुपये प्रतिदिन किया है।

प्रधानमंत्री मोदी के संकल्प से सनातन संस्कृति का हो रहा उत्थान

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संकल्प से पूरे देश में सनातन संस्कृति का उत्थान हो रहा है। अयोध्या में भगवान श्रीराम के भव्य मंदिर का निर्माण, काशी विश्वनाथ कॉरिडोर तथा महाकाल कॉरिडोर का निर्माण हमारी विरासत को मजबूत कर रहे हैं। इसी दिशा में हमारी सरकार ने खाटूश्याम जी मंदिर, पूंछरी का लौठा सहित प्रमुख धार्मिक स्थलों के विकास के लिए बजट में प्रावधान किए हैं। साथ ही हमारी सरकार भगवान श्री कृष्ण के जीवन से जुड़े स्थलों को श्रीकृष्ण गमन पथ के रूप में विकसित कर रही है।

भगवान श्रीकृष्ण का साक्षात स्वरूप श्रीमद्भागवत्

शर्मा ने कहा कि हमारी संस्कृति को आगे बढ़ाने में संतों-महंतों का विशेष महत्व है। श्रीमद्भागवत् भगवान श्रीकृष्ण का साक्षात स्वरूप है तथा हमारे जीवन के लिए मार्गदर्शक है। इसके दर्शन मात्र से जीवन में सुख, शांति और संतोष प्राप्त होता है। हमें इन आदर्शों को अपने आचरण में अपनाना चाहिए। उन्होंने आह्वान किया कि सभी संस्कृति के संरक्षण एवं गौ माता की सेवा का संकल्प लें। राज्य सरकार हमारी समृद्ध सनातन संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए हरसंभव कदम उठाने के लिए तत्पर है।

ब्रह्माकुमारीज के राजयोग भवन में लगा चैतन्य देवियों का दरबार

एजेंसी
टोंक। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय शाखा टोंक के राजयोग भवन में नवरात्रि महोत्सव का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में चैतन्य देवियों को श्रृंगार कर सजाया गया। यह चैतन्य देवियां कोई ओर नहीं बल्कि परमात्म ज्ञान व राजयोग से अपना जीवन पवित्र बनाकर संयम के मार्ग पर चलने वाली ब्रह्माकुमारी बहने है, जिन्होंने परमपिता परमात्मा शिव को पति के रूप में स्वीकार कर अपना संपूर्ण जीवन मानव कल्याण के लिए समर्पित किया है। विश्व कल्याण के निमित बनी इन बहनों को जब गले में पुष्पमाला साथ लाल चुन्दड़ी ओढ़ाई गई तो गया तो उनके पवित्र वाइब्रेशन से वातावरण सकारात्मक शक्तियों से भरपूर हो गया। इस मौके पर सेवा केंद्र प्रभारी ब्रह्माकुमारी अपर्णा दीदी ने नवरात्रि की शुभकामना देते हुए कहा कि परमात्मा शिव से अपने मन के तार जोड़ कर स्वयं की शक्तियों को जागृत करने का यादगार है, नवरात्रि। इन शक्तियों से

हम वर्तमान समय की हर परिस्थिति पर विजय पा सकते हैं उन्होंने कहा कि माताओ के अनेक रूप है एक तरफ वह स्नेह और वात्सल्य की धनी है तो दूसरी ओर असुरसंहारनी है, तो वहीं ममता की मूरत भी है। वास्तव मैं नारियां अपने संस्कारों को श्रेष्ठ बना ले तो स्वर्ग का द्वार खोलने वाली चैतन्य देवियां बन सकती है। इस मौके पर पुरानी टोंक सेवा केंद्र प्रभारी ब्रह्माकुमारी ऋतु दीदी ने नवरात्रि का अध्यात्मिक रहस्य बताते हुए कहा कि नवरात्रि पर हम देवी दुर्गा मां के नौ स्वरूपों की आराधना करते है, जिनके हाथों में अस्त्र शस्त्र और चरणों में असुरों/दानवों को दिखाते है। वास्तव देवी दुर्गा मां पवित्रता व दिव्यता का प्रतीक है जो परमात्म ज्ञान की गदा व योग की शक्ति से मंशा वाचा कर्मणा रूपी त्रिशूल से अपने दुर्गुणों और विषय विकारों रूपी राक्षसों का वध करती है।बनेठा सेवा केंद्र प्रभारी बीके अनीता दीदी ने कहा नवरात्रि, नारी कर्तव्य का यादगार पर्व है वास्तव में हर नारी पूजनीय, वंदनीय और शक्तियों से भरपूर है। परंतु आज इस दुनिया के मायावी आकर्षण में आकर सब शक्तियां खो चुकी हैं, इसलिए अपने आप को असुरक्षित महसूस करती हैं, परन्तु अब नारियों को परमात्म ज्ञान योग की धारणा कर स्वयं की शक्तियों को जागृत करने का समय है, यही समय है जब हम स्वयं को सर्वगुण, सर्व कलाओं व विशेषताओं से भरपूर कर स्वयं के साथ-साथ सारे विश्व का कल्याण कर सकते है।

बांद्रा-अमृतसर पश्चिम एक्सप्रेस की दो बोगियां दो बार हुईं अलग, यात्रियों की सुरक्षा पर उठे सवाल

एजेंसी
मुंबई। महाराष्ट्र और गुजरात से एक बड़ी खबर सामने आ रही है। जहां एक घंटे के भीतर बांद्रा टर्मिनस-अमृतसर पश्चिम एक्सप्रेस की बोगियों के दो बार अलग हो जाने की घटनाएं सामने आईं, जिससे यात्रियों में अफरा-तफरी मच गई। साथ ही उनके सुरक्षा को लेकर भी चिंता बढ़ गई। मामले में रेलवे अधिकारियों ने बताया कि पहली घटना दोपहर 1:19 बजे महाराष्ट्र के वांगांव और दहानू स्टेशनों के बीच हुई। इस दौरान कोच अलग हो गए और ट्रेन को लगभग 25 मिनट के लिए रोका गया। कोचों को दोबारा जोड़ने के बाद ट्रेन दोपहर 1:46 बजे रवाना हुई। इसके बाद, दूसरी घटना करीब 2:10 बजे गुजरात के संजन स्टेशन पर हुई। यहां भी कोच अलग हो गए, जिसके बाद वलसाड से तकनीकी टीम और इंजन को मौके पर भेजा गया। इसके साथ ही पश्चिम रेलवे के प्रवक्ता ने बताया कि इन घटनाओं में कोई यात्री घायल नहीं हुआ और न ही ट्रेन को कोई नुकसान पहुंचा। हालांकि, ट्रेन की आगे की यात्रा में देरी जरूर हुई। रेलवे ने बताया कि बार-बार कोच अलग होने के पीछे की तकनीकी वजहों की जांच की जा रही है। अभी यह स्पष्ट नहीं है कि कितनी बोगियां अलग हुईं और इसके पीछे का कारण क्या था।

जयंत पाटिल का राज्यपाल को पत्र, किसानों के मुद्दे पर विशेष विधानसभा सत्र बुलाने की मांग की

एजेंसी
मुंबई। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) के वरिष्ठ नेता जयंत पाटिल ने महाराष्ट्र के राज्यपाल आचार्य देवव्रत से राज्य में भारी बारिश और बाढ़ से हुए व्यापक नुकसान पर चर्चा के लिए तीन दिवसीय विशेष विधानसभा सत्र बुलाने की मांग की है। राज्यपाल को लिखे पत्र में पाटिल ने कहा कि इस साल राज्य में बारिश से भारी तबाही हुई है और पिछले हफ्ते में बारिश की तीव्रता और बढ़ गई है। पत्र में उन्होंने लिखा, 'नदियां और नाले उफान पर हैं। खेत की मिट्टी कीचड़ में बदल गई है। जानवर मर गए हैं। कई लोग बाढ़ प्रभावित इलाकों में फंसे हुए हैं और कई अपनी जान गंवा चुके हैं। राज्य में अफरातफरी मची हुई है।' बाढ़ प्रभावित गांवों का हाल जानने के लिए दौरे कर रहे पाटिल ने कहा कि किसानों को अभूतपूर्व संकट का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने कहा, फसलें ही नष्ट नहीं हुई हैं, बल्कि कई जगह उपजाऊ जमीन भी बह गई है। नुकसान इतना बड़ा है कि एक साल की मेहनत भी किसानों के काम नहीं आएगी। पाटिल ने मांग की कि संकट के इस समय में सरकार

को ठोस मदद देनी चाहिए, लेकिन ऐसा नहीं दिख रहा है। इसलिए महाराष्ट्र विधानसभा का तीन दिन का विशेष सत्र बुलाकर स्थिति पर विस्तार से चर्चा कर तुरंत निर्णय लेना चाहिए। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार को बिना देरी बाढ़ प्रभावित भूमिहीन कृषि मजदूरों के लिए राहत अनुदान घोषित करना चाहिए। एक एक्स पोस्ट में पाटिल ने कहा कि उन्होंने पिछले दो दिनों में सोलापुर, धाराशिव और बीड़ जिलों के कई बाढ़ प्रभावित गांवों का दौरा किया, जहां भूमिहीन कृषि मजदूरों को भारी नुकसान हुआ है। उन्होंने कहा, राज्य सरकार को तुरंत नुकसान का आकलन करना चाहिए और प्रभावितों को वित्तीय सहायता देनी चाहिए। भूमिहीन परिवार पूरी तरह से आजीविका से वंचित हो गए हैं। पिछले महीने भी बारिश के कारण नुकसान हुआ था और आने वाले हफ्तों में रोजगार के आसार कम हैं, इसलिए बिना देर किए पर्याप्त राहत अनुदान या भत्ता घोषित करना जरूरी है।

बिहार में भारत-नेपाल सीमा के रक्सौल से आइवरी कोस्ट का नागरिक गिरफ्तार

एजेंसी
पूर्वी चंपारण। बिहार में भारत-नेपाल सीमा स्थित रक्सौल-वीरगंज मैत्री पुल के पास एक बार फिर अवैध घुसपैठ की कोशिश को आव्रजन अधिकारियों ने नाकाम कर बड़ी कामयाबी हासिल की है। शनिवार की देर रात आव्रजन जांच के दौरान अधिकारियों ने एक विदेशी नागरिक को पकड़ा, जिसकी पहचान कोट डी आइवरी (आइवरी कोस्ट) निवासी कौआडियो कौआसी जेरोम (44 वर्ष) के रूप में हुई। आरोपी भारत में प्रवेश पाने के लिए बुर्किना फासो का फर्जी पासपोर्ट इस्तेमाल कर रहा था। उसके असली पासपोर्ट (संख्या 21 स्र 521540) और वीजा की वैधता 2022 में ही समाप्त हो चुकी है। थानाध्यक्ष किशन कुमार पासवान ने घटना की पुष्टि करते हुए बताया कि आव्रजन कार्यालय में दस्तावेजों की जांच के दौरान संदेह होने पर सख्ती से पूछताछ की गई, जिसमें जेरोम ने स्वीकार किया कि वह फर्जी पहचान के जरिए भारत में घुसने की कोशिश कर रहा था। जांच में यह भी सामने आया कि वह 2022 में दिल्ली आ चुका था और यह उसका दूसरा प्रयास था। आव्रजन अधिकारियों की शिकायत पर हरैया थाना में कांड दर्ज कर आरोपी को न्यायिक हिरासत में भेजा गया है। पुलिस ने बताया कि हाल के दिनों में यह चौथा मामला है जब विदेशी नागरिक फर्जी दस्तावेजों के सहारे भारतीय क्षेत्र में प्रवेश करते पकड़े गए हैं। बीते सितंबर माह में ही दो नाइजीरियाई नागरिक इसी तरह पकड़े गए थे। सुरक्षा एजेंसियों को आशंका है कि इन अवैध प्रवासियों की संलिप्तता साइबर फ्रॉड अथवा मादक पदार्थ तस्करी जैसे अपराधों से जुड़ी हो सकती है। मामले की गहन जांच शुरू कर दी गई है और अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क से जुड़े तार खंगाले जा रहे हैं।

मध्य प्रदेश के इंदौर प्राणी संग्रहालय को मिले आठ नए एग्जॉटिक एनिमल

- मध्य प्रदेश के इंदौर प्राणी संग्रहालय को मिले आठ नए एग्जॉटिक एनिमल
- शिमोगा जू से आए बायसन और शुतुरमुर्ग के जोड़े, इंदौर जू ने जिराफ़ प्राप्त करने की पात्रता भी हासिल की

एजेंसी
इंदौर। मध्य प्रदेश के इंदौर शहर में स्थित प्राणी संग्रहालय (जू) को एक बार फिर एग्जॉटिक एनिमल का तोहफा मिला है। टाइगर ब्रीडिंग एवं एक्सचेंज प्रोग्राम के तहत इंदौर जू को शिमोगा जू से रुद्र, तुलसी, कल्कि और ताप्ती नाम के चार बायसन (जिन्हें सामान्य भाषा में जंगली भैंस भी कहा जाता है) प्राप्त हुए हैं। इसके बदले इंदौर ने शिमोगा जू को एक टाइगर दिया है। महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने इंदौर प्राणी संग्रहालय में शामिल हुए वन्य प्राणियों का प्रभारी डॉ. उत्तम यादव के साथ अवलोकन किया।

महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने बताया कि बायसन के साथ ही इंदौर को शुतुरमुर्ग के दो जोड़े भी मिले हैं। कुल मिलाकर इस बार आठ एग्ज़ॉटिक एनिमल इंदौर जू के परिवार में जुड़े हैं। यह न केवल इंदौर शहर के लिए बल्कि यहां आने वाले दर्शकों के लिए भी बड़ी खुशखबरी है। महापौर भार्गव ने कहा कि विशेष बात यह है कि इंदौर जू में पहले आए ज़ेब्रा की देखरेख उत्कृष्ट स्तर पर हुई। ज़ेब्रा ने यहां सफलतापूर्वक प्रजनन भी किया है। अब ज़ेब्रा ब्रेडिंग के बाद अब इंदौर जू जिराफ़ प्राप्त करने की पात्रता हासिल कर चुका है। महापौर और जू टीम के सदस्यों ने बायसन के आगमन पर उनका स्वागत किया। इस मौके पर कहा गया कि आने वाले समय में इंदौर जू को एक और बड़ी सौगात मिलने वाली है, यहाँ जल्द ही सेंट्रल इंडिया का सबसे आकर्षक एक्वेरियम स्थापित किया जाएगा।

वाराणसी में रोप-वे को लेकर जो भ्रांतियों फैलाई गई हैं वह पूरी तरह से निराधार है : पूजा मिश्रा

एजेंसी
वाराणसी। वाराणसी में सुरक्षित और सुविधाजनक यात्रा करने के लिए रोप-वे को तैयार किया जा रहा है। जल्द ही वाराणसी में काशी वासियों को अपनी तरह का यह अनूठा ट्रांसपोर्ट सिस्टम इस्तेमाल करने को मिलेगा। रोप-वे को लेकर जो भ्रांतियों फैलाई गई हैं वह पूरी तरह से निराधार है। रविवार को वाराणसी विकास प्राधिकरण कार्यालय में आयोजित प्रेसवार्ता में नेशनल हाईवे लॉजिस्टिक्स मैनेजमेंट लिमिटेड (एनएचएनएमएल) की प्रोजेक्ट निदेशक पूजा मिश्रा ने यह जानकारी दीं। इस दौरान वाराणसी विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष पुलकित गर्ग समेत अन्य लोग भी मौजूद रहें। केंद्र और उत्तर प्रदेश सरकार के सहयोग से पर्वतमाला प्रोजेक्ट के अंतर्गत एशिया का पहला अर्बन रोप-वे प्रोजेक्ट शहरी परिवहन (अर्बन ट्रांसपोर्ट) वाराणसी में शुरू किया जा रहा है। यह रोप-वे वाराणसी कैंट स्टेशन से गोदौलिया तक होगा, जो 3.8 किलोमीटर की दूरी को तय करता है। इस बीच काशी विद्यापीठ, रथयात्रा इंटरमीडिएट स्टेशन होंगे तथा गिरजाघर एक टेक्निकल स्टेशन होगा। इस प्रकार कुल 5 स्टेशन और 29 टावर बनाए जाएंगे। परियोजना की कुल लागत 815.58 करोड़ है, जिसमें 15 वर्षों का ओ एण्ड एम (ऑपरेशन एण्ड मेंटेनेंस) भी शामिल है। अधिकारियों ने बताया कि रोप-वे दैवीय आपदा के दृष्टिकोण से भी सुरक्षित है। तेज हवा या बिजली कड़कने की स्थिति में गंडोला की गति अपने आप धीमी हो जाएगी। यदि बिजली आपूर्ति बंद हो जाती है, तो भी यह रास्ते में नहीं रुकेगा, बल्कि अपने नजदीकी स्टेशन पर पहुंच जाएगा। गंडोला एक बार बंद होने पर अंदर से नहीं खुलेगा केवल बाहर से खोले जा सकेंगे। रोप-वे प्रोजेक्ट के अंतर्गत यूरोपियन स्टैंडर्ड के सुरक्षा उपकरण लगाए जा रहे हैं। इमरजेंसी स्थितियों की निगरानी के लिए कंट्रोल रूम का निर्माण किया जा रहा है। गंडोला कब खुलेगा और कब बंद होगा, यह सब कंट्रोल रूम से नियंत्रित होगा। रोप-वे का किराया भी काफी कम होगा, इसके लिए आर्थिक विकास मॉडल की कार्ययोजना बन रही है।

एशिया कप फाइनल में हाई-वोल्टेज ड्रामा: टीम इंडिया के मेडल लेकर भागा पाकिस्तान, अब बीसीसीआई लेने जा रहा बड़ा एक्शन

दुबई (एजेंसी)। एशिया कप 2025 के फाइनल में भारत ने पाकिस्तान को मात देकर लगातार तीसरी बार इस मुकाबले में अपनी बढ़त कायम रखी। लीग स्टेज से लेकर सुपर-4 और अब फाइनल में भी पाकिस्तान भारतीय टीम के आगे टिक नहीं सकी। हालांकि, जीत के बाद एक अलग तरह का विवाद सामने आया जिसने क्रिकेट प्रेमियों के बीच हलचल मचा दी।

ट्रॉफी लेने से इनकार, नकवी का गुस्सा

बीसीसीआई ने पहले ही यह निर्णय लिया था कि भारतीय खिलाड़ी ट्रॉफी पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के अध्यक्ष और एशियन क्रिकेट काउंसिल के प्रमुख मोहसिन नकवी से ट्रॉफी स्वीकार नहीं करेंगे। जैसे ही टीम ने सम्मानपूर्वक ट्रॉफी लेने से मना किया, नकवी आक्रोशित हो उठे। उन्होंने गुस्से में ट्रॉफी अपने साथ लेकर सीधे होटल चले गए, जिससे विवाद और बढ़ गया।

बीसीसीआई का साफ बयान

भारतीय क्रिकेट बोर्ड के सचिव देवजीत सैकिया ने इस घटना पर खुलासा किया कि यह फैसला पहले से ही लिया गया था ताकि टीम की गरिमा बनी रहे। उन्होंने कहा कि भारतीय खिलाड़ियों का रुख साफ था और वे केवल सम्मानजनक तरीके से ट्रॉफी लेना चाहते थे।

बीसीसीआई करेगी सख्त एक्शन

इस बीच खबर है कि बीसीसीआई अब इस मामले में आईसीसी से औपचारिक शिकायत कर सकता है। इतना ही नहीं इसे लेकर BCCI अगले महीने ICC की बैठक में इसका विरोध दर्ज़ कराएगा। नकवी पर भविष्य में किसी बड़े पद पर बैन लगने तक की बात कही जा रही है। आईसीसी पहले ही चेतावनी दे चुका है कि किसी भी तरह की विवादित हरकत क्रिकेट की छवि को नुकसान पहुंचा सकती है।

अब सभी की निगाहें इस पर हैं कि आईसीसी मोहसिन नकवी के खिलाफ क्या कदम उठाएगा। क्या उन्हें एशियाई क्रिकेट परिषद से हटाया जाएगा या भविष्य में किसी बड़े क्रिकेट पद से दूर कर दिया जाएगा? इससे कई सवाल खड़े हुए हैं और बहस गर्म हो गई है.

अपनी मेजबानी में हमें पहली बार विश्वकप जीतने की उम्मीदें : हरमनप्रीत

नयी दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय महिला क्रिकेट टीम की कप्तान हरमनप्रीत कौर ने कहा है कि इस बार उनकी टीम के पास विश्वकप जीतते का अच्छा अवसर है। महिला विश्वकप 30 सितंबर से शुरु होगा। इसकी मेजबान भारत कर रह है पर इसके कुछ मुकाबले श्रीलंका में भी होंगे। के हरमनप्रीत का कहना है कि उनकी टीम मेजबान होने के कारण घरेलू मैदानों पर अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर सकती है। हरमनप्रीत ने कहा, भारतीय टीम की कप्तानी करना भी उसके लिए सम्मान और गर्व की बात है। साथ ही कहा कि उनकी टीम पहली बार ये ट्रॉफी जीतने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करेगी। उन्होंने कहा, विश्व कप की तैयारी काफी अच्छी रही है। टीम की सभी खिलाड़िं ने काफी अभ्यास किया है और वह काफी अच्छे फार्म में हैं। इससे हमारी ट्रॉफी जीतने की उम्मीदें बढ़ी हैं। अब से विश्व कप जीतना चाहते हैं। साथ ही कहा कि विश्वकप हर बार की तरह ही कठिन रहेगा पर हमें अपनी टीम के खेल कौशल के आधार पर जीत की उम्मीद है। घरेलू और बाहरी मैदानों पर हाल के समय में टीम ने जिस प्रकार की सफलता हासिल की है उससे भी वह उत्साहित है। हम विश्व कप में भी इसी लय को बनाये रखने के लिए उतरेंगे।

हरमनप्रीत ने लिखा, ÷हमारी विश्व कप टीम में युवा और अुनभवी सहित सभी विभागों में पारंगत खिलाड़ी हैं। टीम में उपकप्तान स्मृति मंधाना से लेकर जेमिमा रोड्रिग्स, हरलीन देओल, प्रतीका रावल, ऋचा घोष और उमा छेत्री जैसी बल्लेबाज। वहीं रेणुका सिंह ठाकुर और अरुंधति रेड्डी के अलावा क्रांति गौड़, एन श्री चरणी और राधा यादव जैसी गेंदबाज हैं। इसके अलावा, दीप्ति शर्मा, स्नेह राणा और अमनजोत कौर जैसी ऑलराउंडर भी हैं।÷ साथ ही कहा कि घरेलू मैदानों में ये मुकाबले होने से टीम को दर्शकों का भी पूरा समर्थन मिलेगा। ऐसे में भारतीय टीम का प्रयास पहली बार विश्वकप जीतना रहेगा। भारतीय टीम अब तक दो बार विश्वकप के फाइनल में पहुंची है पर दोनो ही बार खिताब नहीं जीत पायी।

एशिया कप : वे काफी कुछ कह रहे थे, तिलक वर्मा ने पाकिस्तान के खिलाफ फाइनल मुकाबले के बाद किया खुलासा

दुबई (एजेंसी)। तिलक वर्मा एशिया कप के फाइनल के दौरान जब क्रीज पर आए तो पाकिस्तान के खिलाड़ियों ने उनके खिलाफ 'काफी टीका-टिप्पणी' की जिसने इस भारतीय बल्लेबाज को उनके अब तक के करियर की सबसे शानदार पारियों में से एक खेलने के लिए प्रेरित किया। शुरुआती ओवरों में विकेट गिरने के कारण भारतीय टीम मुश्किल स्थिति में थी। दोनों टीमों के बीच तनाव वाले माहौल के बीच तिलक को बहुत कुछ कहा भी गया, लेकिन उन्होंने अपना संयम बनाए रखा और काफी दबाव वाली परिस्थितियों में कमाल की बल्लेबाजी की।

तिलक ने 'बीसीसीआई डॉट टीवी' पर टीम के साथी खिलाड़ी शिवम दुबे के साथ बातचीत में कहा, 'मैं बल्ले से जवाब देना चाहता था वे बहुत सारी बातें कह रहे थे और मैं सिर्फ अपने बल्ले से जवाब देना चाहता था। अब वे मैदान पर दिखाई नहीं दे रहे हैं।' दुबे और तिलक के बीच पांचवें विकेट के लिए 60 रन की साझेदारी ने भारत को दो गेंद शेष रहते एशिया कप जिताने में मदद की। तिलक 53 गेंदों पर 69 रन बनाकर नाबाद रहे। दुबे ने इसके बाद हल्के-फुल्के अंदाज में कहा, 'मुझे लगता है कि मेरे बल्ले ने भी बात की, उनके पास मुझे कहने के लिए ज्यादा कुछ नहीं था।'

तिलक ने कहा कि स्टेडियम के माहौल ने उन्हें इतने बड़े मुकाबले में बेहतरीन प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया। इस बाएं हाथ के बल्लेबाज ने कहा, 'दर्शकों से 'वंदे मातरम' के जयकारे सुनकर मेरे रोंगटे खड़े हो गए थे। मैं बस 'भारत माता की जय' कहना चाहता हूं।'

एशिया कप की पूरी फीस सेना और शहीदों को देने का किया ऐलान, जानें एक मैच के कितने पैसे लेते हैं सूर्यकुमार

नई दिल्ली (एजेंसी)। एशिया कप 2025 का खिताब भारतीय क्रिकेट टीम ने अपने नाम कर लिया है। इस जीत के बाद भारतीय कप्तान सूर्यकुमार यादव ने एशिया कप की पूरी फीस सेना और शहीदों को देने का किया ऐलान किया है। एशिया कप टी20 फॉर्मेट में खेला गया था और ऐसे में ये सवाल है कि सूर्यकुमार एक टी20आई मैच से कितने पैसे कमाते हैं।

सूर्यकुमार यादव की कप्तानी में टीम इंडिया ने लगातार सात मैच जीतकर टूर्नामेंट में दबदबा बनाया और फाइनल में पाकिस्तान को 5 विकेट से हराया। दुबई इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में खेला गया यह मुकाबला ऐतिहासिक साबित हुआ, क्योंकि इसके साथ भारत ने अपना 9वां एशिया कप खिताब जीता। इस जीत के साथ सूर्यकुमार यादव ने

सूर्या का दिल छू लेने वाला फैसला

मैच जीतने के बाद कप्तान सूर्यकुमार यादव ने अपने फैंस का दिल जीत लिया। उन्होंने घोषणा की कि वे एशिया कप 2025 से मिली अपनी पूरी मैच फीस भारतीय सेना और पहलगाम आतंकवादी हमले के पीड़ित परिवारों को दान करेंगे।

सूर्या ने अपने आधिकारिक एक्स

(Twitter) अकाउंट पर लिखा, 'मैंने इस टूर्नामेंट की अपनी पूरी मैच फीस हमारे सशस्त्र बलों और पहलगाम आतंकवादी हमले में मारे गए लोगों के परिवारों की मदद के लिए दान करने का निर्णय लिया है। आप हमेशा मेरे ख्यालों में रहेंगे। जय हिंद।'

कितनी है सूर्या की मैच फीस?

टेस्ट मैच की फीस - रू.15 लाख
वनडे इंटरनेशनल - रू.6 लाख
टी20 इंटरनेशनल - रू.3 लाख

एशिया कप 2025 टी20 फॉर्मेट में खेला गया। सूर्या ब्रिगेड ने कुल 7 मुकाबले खेले। यानी एक मैच के रू.3 लाख के हिसाब से कप्तान सूर्यकुमार यादव को कुल रू. 21 लाख रुपये मिले। और उन्होंने यह पूरी रकम बिना सोचे-समझे भारतीय सेना को दान कर दी।

प्रेस कॉन्फ्रेंस में सूर्या का संदेश

मैच के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में भी सूर्या ने कहा कि, 'यह मेरे लिए सिर्फ एक जेस्चर है। मैं चाहता हूँ कि इसे लेकर कोई कंट्रोवर्सी न हो। मैं अपने देश के जवानों और शहीद परिवारों को दिल से सलाम करता हूँ। अगर मेरी छोटी-सी मदद से उन्हें सहारा मिलेगा, तो यह मेरे करियर की सबसे बड़ी उपलब्धि होगी।'

महिला क्रिकेटर्स को भी समान फीस

गौरतलब है कि बीसीसीआई ने साल 2022 में ही महिला और पुरुष क्रिकेटर्स को समान फीस देने का फैसला लिया था। यानी महिला खिलाड़ियों को भी टेस्ट, वनडे और टी20 इंटरनेशनल मैच के लिए पुरुष खिलाड़ियों के बराबर भुगतान किया जाता है।

फैंस बोले - यही है असली कप्तान

सोशल मीडिया पर सूर्या के इस कदम की जमकर सराहना हो रही है। फैंस ने लिखा, 'मैदान पर सूर्या कप्तान हैं, लेकिन दिल से वे सच्चे देशभक्त भी हैं।' कई पूर्व क्रिकेटरों ने भी उनकी तारीफ करते हुए कहा कि भारतीय क्रिकेट को ऐसा कप्तान पाकर गर्व महसूस हो रहा है।

बोपन्ना, युजुकी शीर्ष वरीयता प्राप्त जोड़ी को हराकर जापान ओपन के फाइनल में

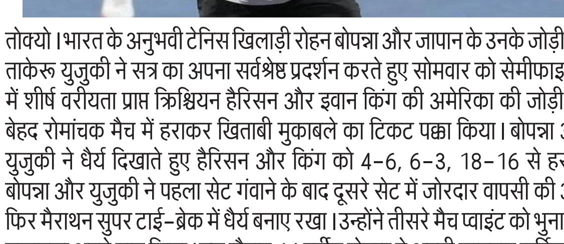

तोक्यो। भारत के अनुभवी टेनिस खिलाड़ी रोहन बोपन्ना और जापान के उनके जोड़ीदार ताकेरू युजुकी ने सत्र का अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए सोमवार को सेमीफाइनल में शीर्ष वरीयता प्राप्त क्रिश्चियन हैरिसन और इवान किंग की अमेरिका की जोड़ी को बेहद रोमांचक मैच में हराकर खिताबी मुकाबले का टिकट पक्का किया। बोपन्ना और युजुकी ने धैर्य दिखाते हुए हैरिसन और किंग को 4-6, 6-3, 18-16 से हराया बोपन्ना और युजुकी ने पहला सेट गंवाने के बाद दूसरे सेट में जोरदार वापसी की और फिर मैराथन सुपर टाई-ब्रेक में धैर्य बनाए रखा। उन्होंने तीसरे मैच प्वाइंट को भुनाकर मुकाबला अपने नाम किया। इस दौरान 44 वर्षीय बोपन्ना ने अपनी शानदार सर्विस का अच्छा इस्तेमाल किया, जबकि युजुकी ने शानदार रिटर्न और नेट के इस्तेमाल प्रभावित किया। इस जीत से बोपन्ना एक और फाइनल में पहुंच गए हैं। इससे पहले, 2025 में बोपन्ना का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन क्वीन्स क्लब में एटीपी 500 के क्वार्टर फाइनल तक पहुंचना था।

कुलदीप एशिया कप में सबसे अधिक विकेट लेने वाले गेंदबाज बने, मलिंगा का रिकार्ड तोड़ा

दुबई। भारतीय क्रिकेट टीम के स्पिनर कुलदीप यादव ने पाकिस्तान के खिलाफ एशिया कप फाइनल में अपने शानदार प्रदर्शन से एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है। कुलदीप ने इस मैच में 30 रन देकर चार विकेट लेने के साथ ही श्रीलंका के पूर्व तेज गेंदबाज लसिथ मलिंगा का एशिया कप में सबसे अधिक विकेट लेने का रिकार्ड तोड़ दिया। कुलदीप अब एशिया कप में सबसे अधिक 36 विकेट लेने वाले गेंदबाज़ बन गए हैं। वहीं अब तक ये रिकार्ड 33 विकेट के सथ ही मलिंगा के नाम था। वहीं एशिया कप में तीसरे सबसे अधिक विकेट लेने वाले गेंदबाज श्रीलंका के पूर्व दिग्गज स्पिनर मुथेया मुरलीधरन हैं। उनके नाम 30 विकेट हैं। वहीं भारत के रविन्द्र जडेजा के नाम 29 और बांग्लादेश के शाकिब अल हसन के नाम 28 विकेट हैं। फाइनल में चार विकेट लेने के साथ ही कुलदीप किसी भी एशिया कप संस्करण में सबसे ज़्यादा विकेट लेने वाले भारतीय गेंदबाज़ भी बने हैं। उन्होंने इरफ़ान पठान के 2004 में बनाए 14 विकेट के रिकॉर्ड को भी पीछे छोड़ दिया। कुलदीप ने फाइनल में पाकिस्तान के साइम अय्यूब के अलावा सलमान अली आगा, शाहीन अफरीदी और फ़हीम अशरफ़ के विकेट लिए।

भारत का महिला जूनियर एयर राइफल में क्लीन स्वीप, हिमांशु को भी स्वर्ण पदक

नई दिल्ली (एजेंसी)। ओजस्वी ठाकुर की अगुआई में भारत ने सोमवार को यहां आईएसएसएफ जूनियर निशानेबाजी विश्व कप की 10 मीटर महिला एयर राइफल स्पर्धा में पदकों का क्लीन स्वीप किया। ओजस्वी के स्वर्ण के अलावा ह्रदया श्री कोंदुर और शंभावी क्षीरसागर ने क्रमश~ रजत और कांस्य पदक हासिल किया। ओजस्वी ने कर्णी सिंह निशानेबाजी रेंज में फाइनल में अपने आठवें और 16वें शॉट में 10.9 के परफेक्ट स्कोर के साथ कुल 252.7 अंक के साथ खिताब जीता।

ह्रदया श्री 250.2 अंक के साथ दूसरे जबकि क्वालीफिकेशन में शीर्ष पर रही शंभावी 229.4 अंक के आथ तीसरे स्थान पर रही। भारतीय तिकड़ी ने क्वालीफिकेशन में भी दबदबा बनाते हुए पहले तीन स्थान हासिल किए। शंभावी 632.0 अंक के साथ शीर्ष पर रहीं जबकि उनके बाद ओजस्वी ने 631.9 और ह्रदया श्री ने 629.8 अंक जुटाए। क्वालीफिकेशन में आठवें स्थान पर रहीं

क्रोएशिया की अनामरिजा तुर्क ने फाइनल में 206.6 अंक के साथ चौथा स्थान हासिल किया।

पुरुष 10 मीटर एयर राइफल फाइनल में भारत के हिमांशु क्वालीफिकेशन में 633.7 अंक के साथ शीर्ष पर रहे और फिर फाइनल में फॉर्म को बरकरार रखते हुए 250.9 अंक के साथ स्वर्ण पदक जीता। व्यक्तिगत तटस्थ एथलीट दमित्री पिमेनोव ने 249.9 अंक के साथ रजत जबकि भारत के अभिनव साव ने 228.4 अंक के साथ कांस्य पदक जीता।

भारत के नारायण प्रणव वनिता सुरेश 187.0 अंक के साथ पांचवें स्थान पर रहे। पुरुष 25 मीटर रेपिड फायर पिस्टल में व्यक्तिगत तटस्थ एथलीट एलेक्सांद्र कोवालेव ने शूट ऑफ में भारत के मुकेश नेलावल्ली को पछाड़कर स्वर्ण पदक जीता। दोनों ने समान 27 हिट लगाए जिसके बाद कोवालेव ने 3-1 के स्कोर से स्वर्ण पदक जीता। मुकेश को रजत पदक मिला।

क्वालीफिकेशन के बाद शीर्ष पर रहे भारत के सूरज शर्मा ने 21 हिट के साथ कांस्य पदक जीता। समीर 15 हिट के साथ चौथे स्थान पर रहे। ट्रैप जूनियर स्पर्धा के पहले दिन कड़ा मुकाबला देखने को मिला। महिला वर्ग में व्यक्तिगत तटस्थ एथलीट सेनिया समोफालोवा, भारत की आद्या कत्याल और इटली की सोफिया गोरी 75 में से 70 निशाने लगाकर संयुक्त रूप से शीर्ष पर हैं।

अमेरिका की लूसी मायर्स 69 अंक के साथ चौथे स्थान पर हैं जबकि भारत की तनीषा सेंथिल कुमार सहित चार निशानेबाजों के 68 अंक हैं। पुरुष वर्ग में क्रोएशिया के टोनी गुडेल्ज और स्पेन के डेनियल फर्नांडिज डि विसेंटे 73 हिट के साथ शीर्ष पर हैं जबकि सात निशानेबाजों के 72 अंक हैं।

बीसीसीआई ने भारतीय टीम के लिए 21 करोड़ रुपये इनाम घोषित किया

मुम्बई (ईएमएस)। एशिया कप में विजेता भारतीय क्रिकेट टीम पर पैसे की बारिश होती नजर आ रही है। भारतीय टीम ने फाइनल में पाकिस्तान को पांच विकेट से हराकर रिकार्ड नौवीं बार खिताब जीता। ऐसे में बीसीसीआई ने भी उसके लिए अपना खजाना खोल दिया है। बोर्ड ने विजेता टीम के लिए 21 करोड़ रुपये के इनाम की घोषणा की है। इस घोषणा के साथ ही बोर्ड ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट किया – '3 वार, 0 जवाब', जो तुरंत वायरल हो गया। इस आशय था भारतीय टीम ने इस टूर्नामेंट में तीनो ही मैचों में पाकिस्तान को हराया। भारतीय टीम ने टूर्नामेंट में अपने सभी मैच आसानी से जीते। फाइनल में भारतीय टीम की जीत के नायक रहे कुलदीप यादव और तिलक वर्मा। कुलदीप ने जहां 4 विकेट लेकर पाकिस्तान को 146 रनों पर समेटा। वहीं तिलक ने नाबाद 69 रन बनाकर भारतीय टीम को लक्ष्य तक पहुचाया। इस टूर्नामेंट में भारतीय टीम की जीत में अभिषेक शर्मा की भी अहम भूमिका रही। अभिषेक को सबसे अधिक रनों के लिए प्लेयर ऑफ द सीरीज का अवार्ड मिला।

टेलर फ्रिट्ज ने जेनसन ब्रूक्सबी को हराकर जापान ओपन के फाइनल में किया प्रवेश

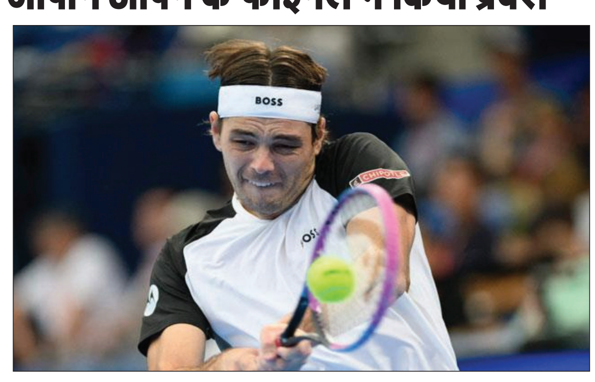

टोक्यो। अमेरिका के स्टार टेनिस खिलाड़ी टेलर फ्रिट्ज सोमवार को जापान ओपन में अपने हमवतन जेनसन ब्रूक्सबी पर सीधे सेटों में जीत के साथ सीजन के अपने तीसरे एटीपी टूर फाइनल में पहुंच गए। दूसरे वरीयता प्राप्त फ्रिट्ज ने आज खेले गये मुकाबले में ब्रूक्सबी को 6-4, 6-3 से हराकर फाइनल में जगह बनाई और अब उनका फाइनल में सामना शीर्ष रैंकिंग वाले कार्लोस अल्काराज और कैस्पर रूड के बीच होने वाले मैच के विजेता से होगा। फ्रिट्ज ने ब्रूक्सबी के खिलाफ 13 ऐस लगाए और अपने पहले सर्व पॉइंट्स में से 85 प्रतिशत अंक हासिल किए, जिन्हें दुनिया के पांचवें नंबर के खिलाड़ी ने इस साल तीसरी बार हराया था। उन्होंने 5-4 के स्कोर पर ब्रूक्सबी की सर्विस ब्रेक की और पहला सेट जीत लिया। इसके बाद मैच फ्रिट्ज के पक्ष में आ गया। फ्रिट्ज ने दूसरे सेट में दूसरी बार 2-1 से उनकी सर्विस ब्रेक की और फिर से बढ़त बनाते हुए अपना पहला मैच पॉइंट हासिल किया।

सिवाच का विजयी गोल, भारतीय जूनियर महिला हॉकी टीम ने आस्ट्रेलिया को हराया

कैनबरा। कनिका सिवाच के गोल की मदद से भारतीय जूनियर महिला हॉकी टीम ने दौरे के तीसरे मैच में आस्ट्रेलिया अंडर 21 टीम को 1-0 से हराया। सिवाच ने 32वें मिनट में विजयी गोल दागा। पहला हाफ गोलरहित रहने के बाद भारत ने तीसरे क्वार्टर के शुरूआती मिनटों में सिवाच के गोल के दम पर बढ़त बना ली जो अंत तक कायम रही। भारत को इससे पहले आस्ट्रेलिया की अंडर 21 टीम ने दो मैचों में हराया लेकिन इस जीत से भारतीय टीम का आत्मविश्वास लौटा होगा। उसे अब आस्ट्रेलिया प्रीमियर हॉकी वन लीग खेलने वाले क्लब कैनबरा चिल से अगले दो मैच खेलने हैं।

दो विश्व कप जीतने वाले इंग्लैंड के ऑलराउंडर ने संन्यास की घोषणा की

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंग्लैंड के ऑलराउंडर क्रिस वोक्स ने सोमवार को तत्काल प्रभाव से अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास की घोषणा करते हुए कहा कि वह काउंटी क्रिकेट खेलना जारी रखेंगे और भविष्य में फ्रेंचाइजी के अवसरों की तलाश करेंगे। 36 वर्षीय वोक्स ने 2013 में अपने पदार्पण के बाद से 217 मैचों में इंग्लैंड का प्रतिनिधित्व किया है। उन्होंने न्यूजीलैंड के खिलाफ लॉर्ड्स में तीन विकेट लिए जिससे इंग्लैंड को 2019 आईसीसी पुरुष विश्व कप जीतने में मदद मिली। वह इंग्लैंड की 2022 विश्व कप जीत का भी हिस्सा थे, जिसमें उन्होंने मेलबर्न में पाकिस्तान को हराकर आईसीसी पुरुष टी20 विश्व कप जीता था।

'वह क्षण आ गया है'

वोक्स ने एक्स पर साझा किए गए एक बयान में कहा, 'वह क्षण आ गया है, और मैंने फैसला किया है कि मेरे लिए अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने का सही समय आ गया है। इंग्लैंड के लिए खेलना एक ऐसी चीज थी जिसकी ख्वाहिश मैं बचपन से ही रखता था जब मैं घर के पिछवाड़े में सपने देखता था, और मैं खुद को बहुत भाग्यशाली मानता हूं कि मैंने उन सपनों को जीया। पिछले 15 सालों में इंग्लैंड का प्रतिनिधित्व करना, थ्री लायंस पहनना और टीम के साथियों के साथ मैदान साझा करना, जिनमें से कई मेरे आजीवन दोस्त बन गए हैं, ऐसी चीज़ें हैं जिन पर मुझे बहुत गर्व है।'

उन्होंने कहा, '2011 में ऑस्ट्रेलिया में पदार्पण करना कल की ही बात लगती है, लेकिन जब आप मजे कर रहे होते हैं तो समय उड़ जाता है। दो विश्व कप जीतना और कुछ शानदार एशेज सीरीज का हिस्सा बनना कुछ ऐसा है जिसके बारे में मैंने कभी सोचा भी नहीं था और मेरे साथियों के साथ वो यादें और जश्न हमेशा मेरे साथ रहेंगे। मेरे माता-पिता, मेरी पत्नी एमी और हमारी बेटियों लैला और एवी, आपके अटूट प्यार, समर्थन और वर्षों से दिए गए त्याग के लिए धन्यवाद। आपके बिना यह सब संभव नहीं होता।'

उन्होंने कहा, 'प्रशंसकों... मेरे कोचों, टीम के साथियों और पर्दे के पीछे के सभी लोगों - इंग्लैंड और वार्विकशायर, दोनों में, जिन्होंने मुझे अपने देश के लिए खेलने में मदद की, आपका मार्गदर्शन और दोस्ती मेरे लिए बहुत मायने रखती है। मैं काउंटी क्रिकेट खेलना जारी रखने और निकट भविष्य में और अधिक फ्रेंचाइजी अवसरों की तलाश करने के लिए उत्सुक हूं।'

क्रिकेट करियर

गौर हो कि टेस्ट क्रिकेट में उन्होंने 62 मैच खेले, जिसमें 192 विकेट लिए, जिसमें 5 बार पारी में 5 विकेट लेना शामिल है, और 2018 में लॉर्ड्स में भारत के खिलाफ एक टेस्ट शतक बनाया। एकदिवसीय मैचों में उन्होंने 122 मैचों में 173 विकेट लिए हैं, और 33 टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों में, उन्होंने 31 विकेट लिए हैं।

ECB अध्यक्ष ने धन्यवाद किया और बधाई दी

ECB के अध्यक्ष रिचर्ड थॉम्पसन ने कहा, 'इस गर्मी में एक टेस्ट मैच जीतने की कोशिश में क्रिस का हाथ स्लिंग में बांधकर बल्लेबाजी करने उतरना दर्शाता है कि उन्हें अपने देश के लिए खेलने और एक बेहतरीन टीम-साथी बनने की कितनी परवाह थी। वह मैदान के बाहर एक सज्जन व्यक्ति रहे हैं, उनके पास मैदान पर जीतने का कौशल और दृढ़ संकल्प है, और वह नियमित रूप से बल्ले और गेंद दोनों से सबसे बड़े मंच पर अपनी क्षमता का परिचय देते हैं। 2019 विश्व कप में नई गेंद से शानदार प्रदर्शन और 2022 में टी20 विश्व कप जीतने से लेकर 2023 पुरुष एशेज में श्रृंखला बदलने वाले उनके प्रभाव तक, जिसके लिए उन्हें प्लेयर ऑफ़ द सीरीज़ का सम्मान मिला, उनकी कई खास यादें हैं। हम क्रिस जैसे खिलाड़ियों के इंग्लैंड का प्रतिनिधित्व करने के लिए आभारी हैं और मैं पिछले 14 वर्षों से इंग्लैंड की जर्सी में उनके द्वारा किए गए हर काम के लिए उन्हें धन्यवाद और बधाई देना चाहता हूं।'

एशेज में कठिन हालातों के लिए तैयार रहे इंग्लैंड टीम : स्मिथ

सिडनी। ऑस्ट्रेलिया के स्टार बल्लेबाज स्टीव स्मिथ ने कहा है कि इंग्लैंड के बल्लेबाजों को आगामी एशेज सीरीज के लिए तैयार रहना चाहिये क्योंकि ऑस्ट्रेलिया में हालात बिलकुल अलग होंगे। स्मिथ का मानना है कि इंग्लैंड के बल्लेबाजों ने पिछले कुछ समय में सपाट पिचों पर खेला है लेकिन उन्हें पता होना चाहिये कि उन्हें इस प्रकार कि पिचें हमारी यहां नहीं मिलेंगी। स्मिथ ने कहा, पिछले तीन-चार साल के दौरान देखा गया है कि ऑस्ट्रेलिया के विकेट शीर्ष क्रम के बल्लेबाजों के लिए विकेट काफी कठिन रहे हैं। यह उनके लिए एक अच्छी चुनौती होगी पर यह एक शानदार सीरीज होने वाली है। इस साल एशेज बेहद शानदार होने वाली है। स्मिथ को लगता है कि इंग्लैंड ने अपने आक्रामक रवैये पर अंकुश लगाते हुए हालातों के हिसाब से खेलना शुरू कर दिया है जबकि पहले वे आक्रामक खेल से दर्शकों का मनोरंजन करते थे। वे अब मैच जीतने पर अधिक जोर दे रहे हैं। उन्होंने इस साल फरवरी में चैंपियंस ट्रॉफी के बाद एकदिवसीय से संन्यास ले लिया था पर स्मिथ 2028 लॉस एंजिल्स खेलों तक टी20 प्रारूप में खेलते रहेंगे जिससे कि ओलंपिक में भागीदारी कर सकें।

इंटरनेशनल एमी अवॉर्ड में नॉमिनेट हुए दिलजीत दोसांझ

इम्तियाज अली को दिया क्रेडिट

सिंगर और एक्टर दिलजीत दोसांझ को फिल्म अमर सिंह चमकीला के लिए एमी इंटरनेशनल अवॉर्ड में बेस्ट एक्टर का नॉमिनेशन मिला है। एमी नॉमिनेशन की अनाउंसमेंट गुरुवार को हुई है, जिसमें अमर सिंह चमकीला को दो नॉमिनेशन मिले हैं। दिलजीत दोसांझ ने अपने ऑफिशियल सोशल मीडिया अकाउंट से नॉमिनेशन मिलने पर खुशी जाहिर की है। उन्होंने एक पोस्ट शेयर कर लिखा है, ये सब इम्तियाज अली की बदौलत हुआ।

इन इंटरनेशनल सेलेब्स से कंपीट करेंगे दिलजीत दोसांझ

इंटरनेशनल एमी अवॉर्ड्स में बेस्ट परफॉर्मर बाय अन एक्टर की कैटेगरी में दिलजीत दोसांझ को चमकीला के लिए, डेविड मिशेल को इन लूडविग, ओरियल प्ला को फिल्म न यो, एडिक्टो, डिएगो वासक्वेज को फिल्म इन वन हंड्रेड एयर ऑफ सोलीट्यूड के लिए नॉमिनेशन मिला है। दिलजीत दोसांझ और परिणीति चोपड़ा स्टारर फिल्म अमर सिंह चमकीला को बेस्ट टीवी मूवी/ मिनी सीरीज कैटेगरी में भी नॉमिनेशन मिला है। इसके साथ जर्मनी से हेरहोसन: द बैंकर एंड द बॉम्ब, यूनाइटेड किंगडम से लॉस्ट बॉय्ज एंड फैरीज और चिली से वेंसर ए मोरिर भी नॉमिनेटेड हैं। इंटरनेशनल एमी अवॉर्ड 2024 का आयोजन 24 नवंबर को न्यूयॉर्क में होगा, जहां सभी विजेताओं की अनाउंसमेंट होगी। दिलजीत दोसांझ को पहली बार इंटरनेशनल लेवल पर नॉमिनेशन मिला है। सभी नॉमिनीज की अनाउंसमेंट 25 सितंबर को इंटरनेशनल एकेडमी ऑफ टेलीविजन आर्ट्स एंड साइंस द्वारा की गई है।

ध्वनि भानुशाली ने बताया कैसे बनी रहती हैं सकारात्मक

इंडियन पॉप सिंगर और एक्ट्रेस ध्वनि भानुशाली आलोचनाओं के बावजूद खुद को मजबूत बनाए रखती हैं। बातचीत में ध्वनि ने बताया कि उन्होंने अपने भीतर की रोशनी से डर और मुश्किलों को कैसे हराया।

नवरात्रि हमेशा से मेरे लिए खास रही है

'यही एहसास मुझे नवरात्रि के वक्त भी होता है। नवरात्रि हमेशा से मेरे लिए खास रही है। मैंने कभी नवरात्रि का कॉन्सर्ट नहीं किया, लेकिन गरबा कई बार खेला है। भीड़ के साथ नाचते हुए जो खुशी और एनर्जी मिलती है, वह किसी जादू से कम नहीं। इस बार मैं चाहती हूं कि स्टेज से ही पूरा उत्सव महसूस करूं और सभी के साथ वो खुशी बाटूं।'

हर कमेंट और राय से प्रभावित हो जाती थी

'करियर की शुरुआत में मैं हर कमेंट और राय से प्रभावित हो जाती थी। यह मेरी एनर्जी छीन लेती थी। लगता था कि हर किसी की उम्मीद पर खरा उतरना है। लेकिन धीरे-धीरे समझ आया कि मेरी ताकत कीमती है। इसे सही जगह लगाना जरूरी है – अपने गानों, कॉन्सर्ट्स और अपनी खुशी में। वही ताकत, जो पहले मुझे कमजोर करती थी, अब मेरी मजबूती बन गई है। अब तो सोचती हूं, ट्रोलिंग ही सही, कम से कम लोग मेरा नाम तो ले रहे हैं।'

निडर होने का मतलब है अपनी रोशनी चमकने देना

'मेरे लिए निडर होने का मतलब है कि अपनी रोशनी को चमकने दो, चाहे सामने कितनी भी मुश्किलें हों। हर दिन खुद से कहती हूं- आगे बढ़ो, अपनी राह रोशन करो और अपने सपनों की ओर चलो। यही तरीका है जिंदगी को खुश रखने का। मैंने यह भी सीखा है कि कभी-कभी छोटी-सी हिम्मत कुछ बोलना, किसी फैसले पर टिके रहना या रिस्क लेना, पूरा दिन बदल सकती है। हमारी सकारात्मकता दूसरों तक पहुंच सकती है और जिंदगी में जादू ला सकती है।'

संगीत ही रोशनी फैलाने का मेरा जरिया है

'जब मैं परफॉर्म करती हूं तो खुद को सबसे ज्यादा जिंदा महसूस करती हूं। हर शो मेरे लिए पॉजिटिविटी और खुशी फैलाने का मौका है। मेरे लिए संगीत ही वह जरिया है, जिससे रोशनी सब तक पहुंचती है।'

इस नवरात्रि मैं नतीजों की चिंता छोड़ना चाहती हूं

'इस नवरात्रि मैं नतीजों की चिंता छोड़ना चाहती हूं। असली खुशी तो उसी प्रक्रिया में है, जब आप अपनी एनर्जी और रोशनी दूसरों से शेयर करते हो और हर दिन को रोशन बनाते हो।'

फैंस के लिए संदेश

'मजबूत रहो, निडर रहो और हमेशा चमकते रहो। हर पल का जश्न मनाओ, अपनी अंदर की रोशनी को फैलाओ और जिंदगी का पूरा मजा लो। हमारी पॉजिटिविटी ही सबसे बड़ी ताकत है। इसे सही जगह इस्तेमाल करो, सब कुछ बदल जाएगा।'

श्रुति हासन ने गायिकी के प्रति जताया प्यार

अभिनेत्री श्रुति हासन ने एक बार फिर अपने प्रशंसकों को अपनी गायिकी से हैरान कर दिया है। उन्होंने सोशल मीडिया के जरिए अपनी संगीतमय प्रतिभा का प्रदर्शन किया। वीडियो में श्रुति पियानो की धुनों के साथ वह अपनी मधुर आवाज में गाना बड़े मन से गा रही हैं। इस वीडियो ने उनके प्रशंसकों का दिल जीत लिया और उनकी बहुआयामी प्रतिभा को एक बार फिर उजागर किया। श्रुति ने वीडियो के साथ एक भावुक कैप्शन भी लिखा, जिसमें उन्होंने अपनी रचनात्मक यात्रा के बारे में खुलकर बात की। उन्होंने लिखा, काफी समय हो गया है कोई नया गाना लिखे। सच कहूं तो, मैं लिख नहीं पा रही हूं। यह कभी परफेक्शन की खोज के बारे में नहीं था। जब दिल से भावनाएं निकलती हैं, तो सही समय पर सबकुछ अपने आप सिखा देती हैं। बस वही होना चाहिए जो मैं हूं और वहीं रहना चाहिए जहां मुझे होना चाहिए। श्रुति हासन न केवल अपनी अभिनय कला के लिए जानी जाती हैं, बल्कि संगीत के क्षेत्र में भी उनकी गहरी रुचि रही है। उन्होंने अपनी आवाज में कई गाने भी गाए हैं और संगीत रचना में भी योगदान दिया है। सोशल मीडिया पर उनके इस पोस्ट को खूब सराहना मिल रही है और प्रशंसक उनके अगले प्रोजेक्ट का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। वर्कफ्रंट की बात करें तो वह हाल ही में बहुचर्चित फिल्म कुली में नजर आई थीं। इस फिल्म में उन्होंने प्रीति राजशेखर का किरदार निभाया था। इस फिल्म में उनके साथ सुपरस्टार रजनीकांत, तेलुगु सिनेमा के दिग्गज नागार्जुन अक्किनेनी, मलयालम एक्टर सौबिन शाहिर, और बॉलीवुड अभिनेता आमिर खान भी नजर आए थे।

टॉम क्रूज के लिए कुछ भी करने को तैयार हैं अमीषा

अमीषा पटेल ने ऋतिक रोशन के साथ फिल्म 'कहो न प्यार है' से बॉलीवुड में अपनी शुरुआत की थी। अपनी पहली पहली ही फिल्म से अमीषा इंडस्ट्री की नई सनसनी बन गई थीं। उनकी खूबसूरती की काफी चर्चा थी। अब अमीषा 50 साल की हो चुकी हैं और उन्होंने शादी नहीं की है। अब अमीषा ने अपने क्रश के बारे में खुलासा किया है। उन्होंने बताया कि उन्हें हॉलीवुड सुपरस्टार टॉम क्रूज पर जबरदस्त क्रश है। एक्ट्रेस ने यहां तक कहा कि वो उनके साथ कुछ भी करने को तैयार हैं।

बातचीत के दौरान अमीषा पटेल ने अपने सेलिब्रिटी क्रश को लेकर बात की। इस दौरान एक्ट्रेस ने बताया कि मुझे टॉम क्रूज पर क्रश है। अगर आप उनके साथ कोई पॉडकास्ट कर सकते हैं, तो प्लीज मुझे भी उस पॉडकास्ट में बुलाएं। मुझे बचपन से ही टॉम क्रूज पसंद हैं। मेरे पेंसिल बॉक्स में, मेरी फाइलों में उनकी तस्वीर लगी रहती थी और मेरे कमरे में सिर्फ टॉम क्रूज के ही पोस्टर होते थे। वो हमेशा से मेरा क्रश रहे हैं। मैं हमेशा मजाक में कहती हूं कि वो इकलौते ऐसे इंसान हैं जिनके लिए मैं अपने उसूलों को ताक पर रख सकती हूं। मैं उनके लिए कुछ भी कर सकती हूं। अगर आप मुझसे पूछें कि क्या तुम उनके साथ वन नाइट स्टैंड के लिए तैयार हो, तो हां मैं वो भी कर सकती हूं।

'गदर 2' में नजर आई थीं अमीषा

वर्कफ्रंट की बात करें तो अमीषा पटेल आखिरी बार साल 2023 में आई फिल्म 'गदर 2' में नजर आई थीं। इस फिल्म में वो सनी देओल के साथ सकीना के किरदार में दिखाई दी थीं। अनिल शर्मा द्वारा निर्देशित इस फिल्म में अमीषा और सनी के अलावा उत्कर्ष शर्मा और सिम्रत कौर रंधावा भी प्रमुख भूमिकाओं में नजर आए हैं।

शादी के लिए तैयार हैं अमीषा, योग्य व्यक्ति की है तलाश

अमीषा ने यहां तक कहा कि अगर मुझे मौका मिलता तो मैं उनसे शादी कर लेतीं। इस दौरान अमीषा ने आगे कहा कि मैं शादी के लिए पूरी तरह तैयार हूं, बशर्ते मुझे कोई योग्य व्यक्ति मिले। कहते हैं न जहां चाह, वहां राह, इसलिए जो व्यक्ति मुझे हर मुश्किल से पार पा ले और मौके पर चौका मारले, वही मेरा साथी होगा। मुझे आज भी कई अच्छे परिवारों से तरह-तरह के प्रस्ताव मिलते रहते हैं। वैसे यह पहली बार नहीं है, जब अमीषा ने टॉम क्रूज के लिए अपना प्यार दिखाया हो। इससे पहले भी कई मौकों पर वो दिल खोलकर टॉम क्रूज की तारीफ कर चुकी हैं।

सर्च- द नैना मर्डर केस

कॉलेज गर्ल की डेथ मिस्ट्री में उलझा कोंकणा का किरदार

कोंकणा सेन शर्मा संजीदा किरदारों को बखूबी निभाना जानती हैं। हाल ही में उनकी एक अपकमिंग सीरीज 'सर्च-द नैना मर्डर केस' का ट्रेलर रिलीज हुआ। जिसमें वह एक पुलिस ऑफिसर के रोल में हैं, जो एक मर्डर मिस्ट्री को सॉल्व करने की कोशिश कर रही है। सीरीज 'सर्च-द नैना मर्डर केस' के ट्रेलर में कोंकणा सेन शर्मा एक पुलिस ऑफिस के रोल में हैं। वह एक कॉलेज गर्ल की मर्डर मिस्ट्री को सॉल्व करने की कोशिश में लगी हैं। इस राह में उसके सामने कई चुनौतियां हैं। कई लोग शक के घेरे में हैं। इस सीरीज में एक तरफ मर्डर मिस्ट्री को दिखा गया है। साथ ही केस को सॉल्व करने के दौरान कोंकणा सेन का किरदार डिजिटल दुनिया के खतरों से भी वाकिफ होता है। इस सीरीज में सोशल मीडिया के स्याह पक्ष को दिखाने की कोशिश की गई, जिसके जाल में यंगस्टर बुरी तरह फंस जाते हैं। कोंकणा सेन स्टारर इस सीरीज की रिलीज डेट भी ट्रेलर के साथ ही शेयर की है। यह सीरीज जीयोहॉटस्टार पर 10 अक्टूबर 2025 को रिलीज होगी। यह सीरीज रोहन सिप्पी ने डायरेक्ट की है।

मैं कोई भी पुराना प्रोसेस अगली फिल्म में रिपीट नहीं करता

एक्टर दीपक डोबरियाल इस वक्त फिल्म 'जुगनुमा' में नजर आ रहे हैं। पहाड़ों की जिंदगी पर आधारित इस फिल्म की हर जगह तारीफ हो रही है। साथ ही, फिल्म से जुड़े एक्टर्स की भी सराहना हो रही है। सीरियस रोल हो या कॉमेडी दीपक हर किरदार में अपनी छाप छोड़ते हैं। 'जुगनुमा' में भी उनके किरदार को सराहा जा रहा है।

'जुगनुमा' से आपने जुड़ने का फैसला क्यों किया? स्क्रिप्ट में क्या पसंद आया?

मुझे 'जुगनुमा' की हर बात पसंद है। इस फिल्म के बनने का प्रोसेस, डायरेक्शन सब कुछ बढ़िया था। आपने इतना कन्विक्शन के साथ डायरेक्शन नहीं देखा होगा, जहां पर कैनवास एक पूरा पैराग्राफ, डायलॉग या मोनोलॉग बोलने जितना जरूरी है। एक शॉट की ब्यूटी को लेकर जो कमिटमेंट था। इस फिल्म में विजुअल बहुत बड़ा डायलॉग है क्योंकि वो नेचर को कमिटमेंट करते हुए दिखाया

जा रहा है। इसके अलावा बिना बैकग्राउंड स्कोर की फिल्म है। आपने इस तरह की फिल्म नहीं देखी होगी, तो माइंड सेट टूटता है।

आपके किरदार दर्शकों के जेहन में रह जाते हैं। उनमें पर खूब मीम्स भी बनते हैं। किसी भी किरदार को निभाने का क्या प्रोसेस रहता है?

हर फिल्म के लिए प्रोसेस अलग होता है। जैसे मेरी हालिया रिलीज फिल्म 'जुगनुमा' में कहानी और डायरेक्शन आपको कहां ले जा रही है। आपको इस हिसाब चलना होता है और खुद को ढालना होता है। अलग-अलग फिल्म में अलग माइंड सेट होता है। कोई भी पुराना प्रोसेस अगली फिल्म में काम नहीं आता है। मैं खुद प्रोसेस रिपीट नहीं करता हूं क्योंकि तभी किरदार में नयापन आ पाएगा। आप कहानी, डायरेक्टर या सीन के हिसाब से भांप लेते हो कि कहानी किस डायरेक्शन में जा रही है।

आपको अपनी फिल्मों का कौन सा किरदार सबसे चैलेंजिंग लगा है?

मैं तो कहूंगा सभी रोल चैलेंजिंग थे। जैसे 'तनु वेड्स मनु' के मेरे किरदार के बारे में मेरे दोस्त की राय है कि मैं पप्पी का किरदार को चलते-चलते भी निभा सकता हूं। वो मुझसे कहते हैं कि 10 मिनट में तू 15 तनु वेड्स मनु का रोल कर देगा। लेकिन ऐसा नहीं है। उसमें मैंने आवाज बहुत पतली रखी थी। मेरी आवाज बहुत ज्यादा आर्टिफिशियल थी। उस किरदार में था कि एक आदमी है, जो बातूनी है। सुबह से रात तक बात करता है और उसकी आवाज में पतलापन है। मैंने इस किरदार के लिए कई सारे एक्सपेरिमेंट भी किए थे। सभी किरदार मुश्किल होते हैं, बस बात इतनी है कि उस किरदार को ऑडियंस कितनी मिलती है।

'जुगनुमा' के बाद आपके फैंस आपको किसी प्रोजेक्ट में देख पाएंगे?

मैं अपने फैंस से कहूंगा कि पहले वो 'जुगनुमा' देखें। ये बहुत प्यारी फिल्म है। आपको एक अलग तर्जुबा मिलेगा। फिल्म एक अलग दुनिया, एक अलग कैनवास, अलग डायरेक्शन, अलग फिलॉसफी और भी कई एलिमेंट को छूती है। पहाड़ों पर बहुत कम फिल्में बनी हैं। पहाड़ों पर फिल्म बनाने का प्रोसेस काफी मुश्किल होता है। इस फिल्म को बनाने में चार-पांच साल का समय लगा है। कभी कोविड, कभी बारिश तो कभी परमिशन नहीं मिलना, देरी की वजह बना। काफी चुनौतियों के बाद ये फिल्म थिएटर तक पहुंची है। अमूमन मैं किसी फिल्म के लिए नहीं बोलता हूं लेकिन 'जुगनुमा' के लिए बोल रहा हूं। जो भी सिनेमा लवर हैं, कुछ अच्छा होते हुए देखना चाहते हैं तो वो प्लीज इस फिल्म को जरूर देखेंगे।

आपके लिए सफलता के क्या मायने हैं?

मैं अगले रोल के लिए फिर से उत्साहित हो पाऊं, मेरे लिए ये सफलता है। अगले रोल के लिए मैं बच्चा बन पाऊं, जीरो से शुरू कर पाऊं, ये सफलता है। मैं अपनी मासूमियत बचकर रख पाऊं, ये सफलता है।

अर्जुन से बदला लेने के लिए जब कर्ण के तूणीर में पहुंचा एक जहरीला सर्प

महाभारत से इतर भी हमें महाभारत के संबंध में कुछ कथाएं मिलती हैं। उन्हीं में से एक कथा है कर्ण और सर्प के बारे में। लोककथाओं के अनुसार माना जाता है कि युद्ध के दौरान कर्ण के तूणीर में कहीं से एक बहुत ही जहरीला सर्प आकर बैठ गया। तूणीर अर्थात जहां तीर रखते हैं, जिसे तरकश भी कहते हैं। यह पीछे पीठ पर बंधी होती है। कर्ण ने जब एक तीर निकालना चाहा तो तीर की जगह यह सर्प उनके हाथ में आ गया। कर्ण ने पूछा, तुम कौन हो और यहां कहां से आ गए। तब सर्प ने कहा, हे दानवीर कर्ण, मैं अर्जुन से बदला लेने के लिए आपके तूणीर में जा बैठा था। कर्ण ने पूछा, क्यों?

इस पर सर्प ने कहा, राजन! एक बार अर्जुन ने खांडव वन में आग लगा दी थी। उस आग में मेरी माता जलकर मर गई थी, तभी से मेरे मन में अर्जुन के प्रति विद्रोह है। मैं उससे प्रतिशोध लेने का अवसर देख रहा था। वह अवसर मुझे आज मिला है। कुछ रुककर सर्प फिर बोला, आप मुझे तीर के स्थान पर चला दें। मैं सीधा अर्जुन को जाकर डस लूंगा और कुछ ही क्षणों में उसके प्राण-पखेरू उड़ जाएंगे।

सर्प की बात सुनकर कर्ण सहजता से बोले, हे सर्पराज, आप गलत कार्य कर रहे हैं। जब अर्जुन ने खांडव वन में आग लगाई होगी तो उनका उद्देश्य तुम्हारी माता को जलाना कभी न रहा होगा। ऐसे में मैं अर्जुन को दोषी नहीं मानता। दूसरा अनैतिक तरह से विजय प्राप्त करना मेरे संस्कारों में नहीं है इसलिए आप वापस लौट जाएं और अर्जुन को कोई नुकसान न पहुंचाएं। यह सुनकर सर्प वहां से उड़ गया। यदि कर्ण सर्प की बात मान लेते तो क्या होता?

विंध्याचल पर्वत माला का पौराणिक महत्व

यह पर्वत प्राचीन भारत के सप्तकुल पर्वतों में से एक है। विंध्य' शब्द की व्युत्पत्ति 'विध' धातु से कही जाती है। भूमि को बेध कर यह पर्वतमाला भारत के मध्य में स्थित है। यही मूल कल्पना इस नाम में निहित जान पड़ती है। विंध्य की गणना सप्तकुल पर्वतों में है। विंध्य का नाम पूर्व वैदिक साहित्य में नहीं है। इस पर्वत श्रंखला का वेद, महाभारत, रामायण और पुराणों में कई जगह उल्लेख किया गया है। विंध्य पहाड़ों की रानी विंध्यवासिनी माता है। मां विंध्यवासिनी देवी मंदिर (मिरजापुर, उप्र.) श्रद्धालुओं की आस्था का प्रमुख केन्द्र है। देश के 51 शक्तिपीठों में से एक है विंध्याचल। विंध्यांचल पर्वतश्रेणी पहाड़ियों की टूटी-फूटी श्रृंखला है, जो भारत की मध्यवर्ती उच्च भूमि का दक्षिणी कगार बनाती है। यह पर्वतमाल भारत के पश्चिम-मध्य में स्थित प्राचीन गोलाकार पर्वतों की श्रेणियां है, जो भारत उपखंड को उत्तरी भारत व दक्षिणी भारत में बांटती है। इस पर्वतमाला का विस्तार उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, बिहार तक लगभग 1,086 किमी.तक विस्तृत फैला है। हालांकि इसकी कई छोटी बड़ी पहाड़ियों को विकास का नाम पर काट दिया गया है। इन श्रेणियों में बहुमूल्य हीरे युक्त एक भ्रंशीय पर्वत भी हैं।

इसकी प्रमुख नदियां : पहाड़ों के कटने से यहां से निकलने वाली नदियों का अस्तित्व भी संकट में है। विंध्य पर्वत में से उद्गम पाने वाली नदियां- शिप्रा या भद्रा (सिप्रा), पयोष्णी, निर्विंध्या (नेबुज), तापी निषधा या निषधावती (सिंद), वेण्वा या वेणा (वेणगंगा), वैतरणी (बैत्रणी), सिनीवाली या शिति बाहू, कुमुद्वती (स्वर्ण रेखा), करतोया या तोया (ब्राह्मणी), महागौरी (दामोदर), और पूर्णा, शोण (सोन), महानद (महानदी) और नर्मदा। मध्यप्रदेश और गुजरात की सरकार ने मिलकर सबसे बड़ी नर्मदा नदी की हत्या कर दी है। इस एक नदी के कारण संपूर्ण मध्यप्रदेश और गुजरात के जंगल हरे भरे और पशु पक्षी जीवंत रहते थे। लेकिन अब बांध बनाकर एक ओर जहां नदी के जलचर जंतु मर गए है।

प्राकृतिक संपदा : भारत में पर्यावरण विनाश की सीमा अरावली पर्वत श्रेणियों और पश्चिम के घाटों तक ही सीमित नहीं हैं, मध्यक्षेत्र में भी बेतरतीब ढंग से जारी रहकर प्राकृतिक संपदाओं के दोहन के कारण सतपुड़ा और विंध्याचल की पर्वत श्रेणियां तो खतरे में हैं ही अनेक जीवनदायी नदियों का वजूद भी संकट में है। वे लोग देशद्रोही है जो अपनी ही धरती को छलनी कर उसे विकास के नाम पर नष्ट कर रहे हैं।

पुराणों अनुसार : इसके अंतर्गत रोहतासगढ़, चुनारगढ़, कलिंजर आदि अनेक दुर्ग हैं तथा चित्रकूट, विन्ध्याचल आदि अनेक पावन तीर्थ हैं। पुराणों के अनुसार इस पर्वत ने सुमेरू सेर् ईष्या रखने के कारण सूर्यदेव का मार्ग रोक दिया था और आकाश तक बढ़ गया था, जिसे अगस्त्य ऋषि ने नीचे किया। यह शरभंग, अगस्त्य इत्यादि अनेक श्रेष्ठ ऋषियों की तप :स्थली रहा है। हिमालय के समान इसका भी धर्मग्रंथों एवं पुराणों में विस्तृत उल्लेख मिलता है।

अगस्त्य मुनि : दक्षिण भारत और हिदु महासागर से संबंधि अगस्ति (अगस्त्य) मुनि की गाथा है। उन्होंने विंध्याचल के बीच से दक्षिण का मार्ग निकाला। किंविदंती है कि विंध्याचलपर्वत ने उनके चरणों पर झुककर प्रणाम किया। उन्होंने आशीर्वाद देकर कहा कि जब तक वे लौटकर वापस नहीं आते, वह इसी प्रकार झुका खड़ा रहे। वह वापस लौटकर नहीं आए और आज भी विंध्याचल पर्वत वैसे ही झुका उनकी प्रतीक्षा कर रहा है।

विंध्याचल के जंगल : विंध्यांचल पर्वत श्रेणियों के दोनों तरफ घने जंगल हैं, जो अब शहरी आबादी और विकास के चलते काट दिए गए हैं। अन जंगलों में शेर, चीते, भालु, बंदर, हिरणों के कई झुंड होते थे जो अब दर बदर हैं। अब चंबल, सतपुड़ा और मालवा के पठारी इलाके में ही कुछ जंगल बचे हैं। यहां की पर्वतों की कंदराओं में कई प्राचीन ऋषियों के आश्रम आज भी मौजूद हैं। यह क्षेत्र पहले ऋषि मुनियों का तप स्थल हुआ करता था। पर्वतों की कंदराओं में साधना स्थल, दुर्लभ शैल चित्र, पहाड़ों से अनवरत बहती जल की धारा, गहरी खाईयां और चारों ओर से घिरे घनघोर जंगलों पर अब संकट के बादल घिर गए हैं। यहीं पर भीम बैठका जैसी गुफाएं हैं।

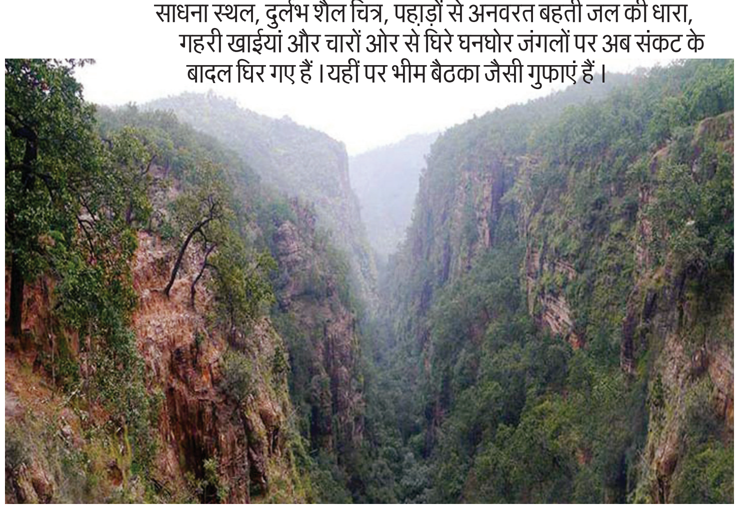

शिव को क्यों प्रिय है भस्म?

शिवजी के पूजन में भस्म अर्पित करने का विशेष महत्व है। बारह ज्योर्तिलंग में से एक उज्जैन स्थित महाकालेश्वर मंदिर में प्रतिदिन भस्म आरती विशेष रूप से की जाती है। यह प्राचीन परंपरा है। आइए जानते है शिवपुराण के अनुसार शिवलिंग पर भस्म क्यों अर्पित की जाती है। भगवान शिव अद्भुत व अविनाशी हैं। भगवान शिव जितने सरल हैं, उतने ही रहस्यमयी भी हैं। भोलेनाथ का रहन-सहन, आवास, गण आदि सभी देवताओं से एकदम अलग हैं। शास्त्रों में एक ओर जहां सभी देवी-देवताओं को सुंदर वस्त्र और आभूषणों से सुसज्जित बताया गया है, वहीं दूसरी ओर भगवान शिव का रूप निराला ही बताया गया है। शिवजी सदैव मृगचर्म (हिरण की खाल) धारण किए रहते हैं और शरीर पर भस्म (राख) लगाए रहते हैं। शिवजी का प्रमुख वस्त्र भस्म यानी राख है, क्योंकि उनका पूरा शरीर भस्म से ढंका रहता है। शिवपुराण के अनुसार भस्म सृष्टि का सार है, एक दिन संपूर्ण सृष्टि इसी राख के रूप में परिवर्तित हो जानी है। ऐसा माना जाता है कि चारों युग (त्रेता युग, सत युग, द्वापर युग और कलियुग) के बाद इस सृष्टि का विनाश हो जाता है और पुन : सृष्टि की रचना ब्रह्माजी द्वारा की जाती है। यह क्रिया अनवरत चलती रहती है। इस सृष्टि के सार भस्म यानी राख को शिवजी सदैव धारण किए रहते हैं। इसका यही अर्थ है कि एक दिन यह संपूर्ण सृष्टि शिवजी में विलीन हो जानी है। शिवपुराण के लिए अनुसार भस्म तैयार करने के लिए कपिला गाय के गोबर से बने कंडे, शमी, पीपल, पलाश, बड़, अमलतास और बेर के वृक्ष की लकड़ियों को एक साथ जलाया जाता है। इस दौरान उचित मंत्रोच्चार किए जाते हैं। इन चीजों को जलाने पर जो भस्म प्राप्त होती है, उसे कपड़े से छान लिया जाता है। इस प्रकार तैयार की गई भस्म शिवजी को अर्पित की जाती है। ऐसा माना जाता है कि इस प्रकार तैयार की गई भस्म को यदि कोई इंसान भी धारण करता है तो वह सभी सुख-सुविधाएं प्राप्त करता है। शिवपुराण के अनुसार ऐसी भस्म धारण करने से व्यक्ति का आकर्षण बढ़ता है, समाज में मान-सम्मान प्राप्त होता है। अत : शिवजी को अर्पित की गई भस्म का तिलक लगाना चाहिए। जिस प्रकार भस्म यानी राख से कई प्रकार की वस्तुएं शुद्ध और साफ की जाती है, ठीक उसी प्रकार यदि हम भी शिवजी को अर्पित की गई भस्म का तिलक लगाएंगे तो अक्षय पुण्य की प्राप्ति होगी और कई जन्मों के पापों से मुक्ति मिल जाएगी।

भस्म की यह विशेषता होती है कि यह शरीर के रोम छिद्रों को बंद कर देती है। इसे शरीर पर लगाने से गर्मी में गर्मी और सर्दी में सर्दी नहीं लगती। भस्म, त्वचा संबंधी रोगों में भी दवा का काम भी करती है। शिवजी का निवास कैलाश पर्वत पर बताया गया है, जहां का वातावरण एकदम प्रतिकूल है। इस प्रतिकूल वातावरण को अनुकूल बनाने में भस्म महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भस्म धारण करने वाले शिव संदेश देते हैं कि परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढाल लेना चाहिए। जहां जैसे हालात बनते हैं, हमें भी स्वयं को उसी के अनुरूप बना लेना चाहिए।

क्यों लगाते हैं भोलेनाथ शरीर पर भस्म, कैसे बनती है भस्मार्ती की भस्म

भगवान शिव ने अपने तन पर जो भस्म रमाई है वह उनकी पत्नी सती की चिता की भस्म थी जो कि अपने पिता द्वारा भगवान शिव के अपमान से आहत हो वहां हो रहे यज्ञ के हवनकुंड में कूद गई थी। भगवान शिव को जब इसका पता चला तो वे बहुत बेचैन हो गये। जलते कुंड से सती के शरीर को निकालकर प्रलाप करते हुए ब्रह्माण्ड में घूमते रहे। उनके क्रोध व बेचैनी से सृष्टि खतरे में पड़ गई। जहां जहां सती के अंग गिरे वहां शक्तिपीठ की स्थापना हो गई। पिर भी शिव का संताप जारी रहा। तब श्री हरि ने सती के शरीर को भस्म में परिवर्तित कर दिया। शिव विरह की अग्नि में भस्म को ही उनकी अंतिम निशानी के तौर पर तन पर लगा लिया। पहले भगवान श्री हरि ने देवी सती के शरीर को छिन्न भिन्न कर दिया था। जहां जहां उनके अंग गिरे वहीं शक्तिपीठों की स्थापना हुई। लेकिन पुराणों में भस्म का विवरण भी मिलता है। भगवान शिव के तन पर भस्म रमाने का एक रहस्य यह भी है कि राख विरक्ति का प्रतीक है। भगवान शिव चूंकि बहुत ही लौकिक देव लगते हैं। कथाओं के माध्यम से उनका रहन-सहन एक आम सन्यासी सा लगता है। एक ऐसे ऋषि सा जो गृहस्थी का पालन करते हुए मोह माया से विरक्त रहते हैं और संदेश देते हैं कि अंत काल सब कुछ राख हो जाना है। एक रहस्य यह भी हो सकता है चूंकि भगवान शिव को विनाशक भी माना जाता है। ब्रह्मा जहां सृष्टि की निर्माण करते हैं तो विष्णु पालन-पोषण लेकिन जब सृष्टि में नकारात्मकता बढ़ जाती है तो भगवान शिव विध्वंस कर डालते हैं। विध्वंस यानि की समाप्ति और भस्म इसी अंत इसी विध्वंस की प्रतीक भी है। शिव हमेशा याद दिलाते रहते हैं कि पाप के रास्ते पर चलना छोड़ दें अन्यथा अंत में सब राख ही होगा।

महाकाल की भस्मार्ती

उज्जैन स्थित महाकालेश्वर की भस्मार्ती विश्व भर में प्रसिद्ध है। ऐसी मान्यता है कि वर्षों पहले श्मशान भस्म से भूतभावन भगवान महाकाल की भस्म आरती होती थी लेकिन अब यह परंपरा खत्म हो चुकी है और अब कंडे की भस्म से आरती-श्रृंगार किया जा रहा है। वर्तमान में महाकाल की भस्म आरती में कपिला गाय के गोबर से बने औषधियुक्त उपलों में शमी, पीपल, पलाश, बड़, अमलतास और बेर की लकड़ियों को जलाकर बनाई भस्म का प्रयोग किया जाता है। जलते कंडे में जड़ीबूटी और कपूर-गुगल की मात्रा इतनी डाली जाती है कि यह भस्म ना सिर्फ सेहत की दृष्टि से उपयुक्त होती है बल्कि स्वाद में भी लाजवाब हो जाती है। श्रौत, स्मार्त और लौकिक ऐसे तीन प्रकार की भस्म कही जाती है। श्रुति की विधि से यज्ञ किया हो वह भस्म श्रौत है, स्मृति की विधि से यज्ञ किया हो वह स्मार्त भस्म है तथा कण्डे को जलाकर भस्म तैयार की हो वह लौकिक भस्म है। शिव का शरीर पर भस्म लपेटने का दार्शनिक अर्थ यही है कि यह शरीर जिस पर हम घमंड करते हैं, जिसकी सुविधा और रक्षा के लिए ना जाने क्या-क्या करते हैं एक दिन इसी इस भस्म के समान हो जाएगा। शरीर क्षणभंगुर है और आत्मा अनंत। कई सन्यासी तथा नागा साधु पूरे शरीर पर भस्म लगाते हैं। यह भस्म उनके शरीर की कीटाणुओं से तो रक्षा करता ही है तथा सब रोम कूपों को ढंककर ठंड और गर्मी से भी राहत दिलाती है। रोम कूपों के ढंक जाने से शरीर की गर्मी बाहर नहीं निकल पाती इससे शीत का अहसास नहीं होता और गर्मी में शरीर की नमी बाहर नहीं होती। इससे गर्मी से रक्षा होती है। मच्छर, खटमल आदि जीव भी भस्म रमे शरीर से दूर रहते हैं।

कैसे हुई भीष्म पितामह की पराजय

महाभारत युद्ध के दसवें दिन भी भीष्म पितामह ने पांडवों की सेना में भयंकर मारकाट मचाई। यह देखकर युधिष्ठिर ने अर्जुन से भीष्म पितामह को रोकने के लिए कहा। अर्जुन शिखंडी को आगे करके भीष्म से युद्ध करने पहुंचे। शिखंडी को देखकर भीष्म ने अर्जुन पर बाण नहीं चलाए और अर्जुन अपने तीखे बाणों से भीष्म पितामह को बींधने लगे। इस प्रकार बाणों से छलनी होकर भीष्म पितामह सूर्यास्त के समय अपने रथ से गिर गए। उस समय उनका मस्तक पूर्व दिशा की ओर था। उन्होंने देखा कि इस समय सूर्य अभी दक्षिणायन में है, अभी मृत्यु का उचित समय नही हैं, इसलिए उन्होंने उस समय अपने प्राणों का त्याग नहीं किया।

युधिष्ठिर को दिया धर्म ज्ञान

महाभारत युद्ध की समाप्ति के बाद भगवान श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा कि इस समय पितामह भीष्म बाणों की शैय्या पर हैं। आप उनके पास चलकर उनके चरणों को प्रणाम कीजिए और आपके मन में जितने भी संदेह हो, उनके बारे में पूछ लीजिए। श्रीकृष्ण की बात मानकर युधिष्ठिर भीष्म पितामह के पास गए और उनसे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का ज्ञान प्राप्त किया। युधिष्ठिर को ज्ञान देने के बाद भीष्म पितामह ने उनसे कहा कि अब तुम जाकर न्यायपूर्वक शासन करो, जब सूर्य उत्तरायण हो जाए, उस समय फिर मेरे पास आना।

ऐसे त्यागे भीष्म पितामह ने अपने प्राण

जब सूर्यदेव उत्तरायण हो गए तब युधिष्ठिर सहित सभी लोग भीष्म पितामह के पास पहुंचे। उन्हें देखकर भीष्म पितामह ने कहा कि इन तीखे बाणों पर शयन करते हुए मुझे 58 दिन हो गए हैं। उन्होंने श्रीकृष्ण को संबोधित करते हुए कहा कि अब मैं प्राणों का त्याग करना चाहता हूं। ऐसा कहकर भीष्मजी कुछ देर तक चुपचाप रहे। इसके बाद वे मन सहित प्राणवायु को क्रमश : भिन्न-भिन्न धारणाओं में स्थापित करने लगे। भीष्मजी का प्राण उनके जिस अंग को त्यागकर ऊपर उठता था, उस अंग के बाण अपने आप निकल जाते और उनका घाव भी भर जाता। भीष्मजी ने अपने देह के सभी द्वारों को बंद करके प्राण को सब ओर से रोक लिया, इसलिए वह उनका मस्तक (ब्रह्म रंध्र) फोड़कर आकाश में चला गया। इस प्रकार महात्मा भीष्म के प्राण आकाश में विलीन हो गए।